मोदी-शाह की बड़ी अग्निपरीक्षा

12

हौसलों की उड़ान, रनों का तूफान

30

वर्ष: 6 अंक: 4 अप्रैल, 2026 मूल्य: 60 रु. पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे

RNI No. RAJHIN/2020/11458

ईरान के दबाव में डगमगाता अमेरिका

7

CELEBRATING 42 YEARS OF TRUST — THE LIQUID GOLD

ISO 22000 2018

स्वाद वो जो बना दे बात

मनभाती महक, लाजवाब स्वाद, भरपूर पौष्टिकता

सोना सिक्का®©

BEST CHOICE REFINED GROUNDNUT OIL

शुद्धता से समझौता नहीं

SONA SIKKA

महंगा है पर खरा है!

स्वाद और सेहत से भरा है

42 वर्षों से शुद्धता के हर मापदंड पर खरा उतरा है, इसलिए बेस्ट है सोना सिक्का

सोना सिक्का रखता है ख्याल आपकी सेहत का आपके परिवार की खुशियों का इसलिए सोना सिक्का तेल के निर्माण में गुणवत्ता शुद्धता और सेहत से कोई समझौता नहीं किया जाता है।

परिवार की सेहत के लिए सोना सिक्का में व्यंजन बनायें, खुद खायें, सबकों खिलायें....!

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

SHAKUN

Shyam and Shyam Oils Pvt. Ltd. Jodhpur

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur, (Raj.)

डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु टोल फ्री नं. पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

sonasikka.com | info@sonasikka.com | sonasikka

0291-2512333, 2512338

Available on : amazon | Flipkart

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात
www.rajasthantoday.online

RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 6, अंक 4, अप्रैल 2026
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक - दिनेश रामावत
प्रबंध सम्पादक - राकेश गांधी
राजनीतिक सम्पादक - सुरेश व्यास
कार्यकारी सम्पादक - अजय अस्थाना
सह सम्पादक - बलवंत राज मेहता

विशेष प्रतिनिधि
नई दिल्ली - राधा रमण
जयपुर - मणिमाला शर्मा, विवेक श्रीवास्तव
अजमेर - रमेश शर्मा
उदयपुर - मधुलिका सिंह
कोटा - अरविन्द गुप्ता
पाली - चैनराज भाटी
सिरोही - गणपत सिंह
जालोर - तरुण गहलोत
बाड़मेर - धर्मसिंह भाटी

रेखाचित्र- राजेंद्र यादव

विज्ञापन प्रतिनिधि
जोधपुर - प्रवीण गिरी - 99280 26609
कोटा - यतीन्द्र जैन - 94140 76997

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स महावीर कॉलोनी,
भास्कर सर्किल, रातानाड़ा, जोधपुर - 342 011
व्हाट्सएप नंबर - 81078 00000
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342 011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 01 पार्श्वनाथ इंडस्ट्रीयल एरिया, रिलायंस वेयर हाउस के पास, मोगरा कलां, जोधपुर-342 802 में मुद्रित । संपादक : अजय अस्थाना* (*पी आर पी एक्ट के तहत उत्तरदायी)

अंदर विशेष

4 अपनी बात
खाड़ी तनाव से बढ़ी चुनौती

नियमित कालम

18 बोल हरि बोल
21 बात बेलगाम
41 अभिव्यक्ति
42 ग्रहों की चाल

7 ईरान के दबाव में डगमगाता अमेरिका

12 मोदी-शाह की बड़ी अग्निपरीक्षा

15 बिहार में नीतीश के बाद कौन!

19 उलझन में मोदी-शाह

10 ताइवान पर मंडराता संकट

24 खनिज सम्पदा...
भीतर से दरकता मकराना

26 स्वास्थ्य...
तड़पता अंतिम पड़ाव

28 स्पोर्ट्स...
निडर भारत, अब 300 रन भी दूर नहीं

30 स्पोर्ट्स...
हौसलों की उड़ान, रनों का तूफान

33 सुनहरा पर्दा ...
धुरंधर-2 का दुनिया भर में डंका

36 जीवन प्रबंधन...
पुस्तकें ही गढ़ती हैं व्यक्तित्व

39 संस्कृत...
सड़कों पर होता है महिलाओं का राज

अपनी बात

दिनेश रामावत
प्रधान सम्पादक

खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते युद्ध ने भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की कमजोरियों को उजागर कर दिया है। तेल और गैस के लिए भारी निर्भरता, निर्यात और रेमिटेंस पर संभावित असर, तथा रुपए पर दबाव, ये सभी मिलकर आर्थिक जोखिम बढ़ाते हैं। हालांकि मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार, घरेलू मांग और नीतिगत विकल्प भारत को संभालने की क्षमता देते हैं, लेकिन यह संकट दीर्घकालिक सुधार की जरूरत भी दिखाता है।

खाड़ी तनाव से बढ़ी चुनौती

कुछ हफ्ते पहले तक भारत की अर्थव्यवस्था की तस्वीर बेहद चमकदार दिख रही थी। देश तेजी से आगे बढ़ रहा था, चीन को पीछे छोड़ रहा था, ब्रिटेन को पार कर चुका था और अब जापान को पीछे छोड़ने की बातें हो रही थीं। ऐसा लग रहा था कि भारत की विकास कहानी बिना किसी बड़ी रुकावट के आगे बढ़ेगी।

लेकिन खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते युद्ध ने इस कहानी को अचानक झटका दे दिया है। इसने साफ कर दिया है कि भारत की चमक के पीछे कुछ ऐसी कमजोरियां भी हैं, जिन्हें लंबे समय से नजरअंदाज किया जाता रहा है। सबसे बड़ी कमजोरी है ऊर्जा पर बाहरी निर्भरता। भारत अपनी जरूरत का लगभग 90 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है और इसका बड़ा हिस्सा मध्य पूर्व से आता है।

जब इस क्षेत्र में तनाव बढ़ता है, तो सबसे पहले तेल की कीमतें उछलती हैं और इसका सीधा असर भारत पर पड़ता है। पेट्रोल-डीजल महंगे होते हैं, ट्रांसपोर्ट खर्च बढ़ता है और धीरे-धीरे हर चीज महंगी होने लगती है। यानी महंगाई आम आदमी की जेब पर सीधा हमला करती है। सरकार के पास विकल्प सीमित होते हैं। या तो कीमतें बढ़ने दे या टैक्स कम करके राहत दे। लेकिन राहत देने का मतलब है सरकारी खजाने पर बोझ बढ़ना।

यही नहीं, खाड़ी देश भारत के लिए बड़ा व्यापारिक बाजार भी हैं। भारत यहां कपड़े, चावल, इलेक्ट्रॉनिक्स और ज्वेलरी जैसे कई उत्पाद भेजता है। दुबई जैसे शहर भारत के लिए एक अहम व्यापारिक हब हैं, जहां से सामान दुनिया भर में जाता है। अगर युद्ध के कारण सप्लाई चेन या रास्ते प्रभावित होते हैं, तो भारत का निर्यात भी प्रभावित होगा और विदेशी कमाई घटेगी।

एक और बड़ा पहलू है, रेमिटेंस। लाखों भारतीय खाड़ी देशों में काम करते हैं और अपने परिवारों को पैसा भेजते हैं। यह पैसा करोड़ों परिवारों के लिए सहारा है। अगर वहां युद्ध के कारण नौकरियां प्रभावित होती हैं या काम धीमा पड़ता है, तो यह पैसा भी कम हो सकता है। इसका असर सीधे भारत की अर्थव्यवस्था और समाज दोनों पर पड़ेगा।

इन सबका असर रुपए पर भी दिखता है। जब डॉलर कम आते हैं और खर्च ज्यादा होता है, तो रुपया कमजोर पड़ता है। रुपया गिरता है, तो आयात और महंगा हो जाता है, महंगाई और बढ़ती है। हाल के समय में शेयर बाजार में गिरावट और रुपए पर दबाव इसी चिंता को दिखाते हैं।

लेकिन तस्वीर पूरी तरह निराशाजनक भी नहीं है। भारत की अर्थव्यवस्था की नींव अभी भी काफी हद तक मजबूत है। देश के पास अच्छा विदेशी मुद्रा भंडार है, जिससे वह कुछ समय तक ऐसे झटकों को झेल सकता है। सरकार ने तेल के स्रोतों को थोड़ा विविध बनाने की कोशिश की है, जैसे रूस से सस्ता तेल खरीदना। इसके अलावा भारत की घरेलू मांग और डिजिटल अर्थव्यवस्था भी एक सहारा देती है, जो पूरी अर्थव्यवस्था को संभालने में मदद करती है।

सच यह है कि यह संकट एक चेतावनी भी है और एक मौका भी। चेतावनी इसलिए कि भारत अब भी ऊर्जा के लिए बाहर पर बहुत ज्यादा निर्भर है। और मौका इसलिए कि अब सरकार और नीति-निर्माताओं के पास यह अवसर है कि वे नवीकरणीय ऊर्जा, घरेलू उत्पादन और वैकल्पिक स्रोतों पर तेजी से काम करें।

व्यापार, रोजगार और निवेश के स्तर पर भारत और खाड़ी देशों के बीच गहरे संबंध हैं, लेकिन किसी एक क्षेत्र पर इतनी ज्यादा निर्भरता हमेशा जोखिम लेकर आती है। यही बात आज साफ दिखाई दे रही है।

सीधी बात यह है कि भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत जरूर है, लेकिन पूरी तरह सुरक्षित नहीं। अगर खाड़ी संकट जल्दी खत्म होता है, तो भारत संभल जाएगा। लेकिन अगर यह लंबा चलता है, तो विकास की रफ्तार धीमी हो सकती है, महंगाई बढ़ सकती है और रुपया दबाव में रह सकता है।

अब असली चुनौती यह है कि भारत इस संकट को सिर्फ झटका मानकर भूल जाए या इसे एक सीख की तरह लेकर अपनी आर्थिक रणनीति को और मजबूत बनाए। यही फैसला आने वाले समय में तय करेगा कि भारत की विकास कहानी कितनी टिकाऊ है।

बातचीत की राह में अविश्वास की दीवार

मध्य पूर्व युद्ध के बीच पाकिस्तान ने अमेरिका और ईरान के बीच वार्ता कराने की पहल की है, लेकिन गहरे अविश्वास, प्रतिनिधियों को लेकर मतभेद और राजनीतिक जटिलताओं के कारण शांति की राह अभी भी कठिन बनी हुई है।

मध्य पूर्व में जारी संघर्ष ने वैश्विक राजनीति को एक बार फिर अस्थिरता के दौर में ला खड़ा किया है। ऐसे समय में जब बड़ी शक्तियों के बीच अविश्वास गहराता जा रहा है, पाकिस्तान द्वारा इस्लामाबाद को संभावित वार्ता स्थल के रूप में पेश करना केवल एक औपचारिक प्रस्ताव नहीं, बल्कि अपनी कूटनीतिक भूमिका को पुनर्परिभाषित करने की महत्वाकांक्षी कोशिश है। शहबाज शरीफ का यह कदम बताता है कि पाकिस्तान अब केवल क्षेत्रीय खिलाड़ी नहीं रहना चाहता, बल्कि वह वैश्विक संवाद में भी अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना चाहता है।

करीब एक महीने से जारी संघर्ष ने न केवल पश्चिम एशिया को अस्थिर किया है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी दरारें पैदा कर दी हैं। ऐसे माहौल में किसी भी देश द्वारा बातचीत की पहल स्वाभाविक रूप से उसे केंद्र में ला देती है। पाकिस्तान ने हाल के दिनों में जिस तरह से कूटनीतिक सक्रियता दिखाई है, चाहे वह असीम मुनीर और डोनाल्ड ट्रंप के बीच संपर्क हो या फिर शरीफ और मसूद पेजेश्कियन के बीच लंबी बातचीत वह संकेत देता है कि इस्लामाबाद पर्दे के पीछे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की कोशिश कर रहा है।

हालांकि, कूटनीति केवल सक्रियता का खेल नहीं है, बल्कि भरोसे की नींव पर टिकी होती है। ईरान का यह स्पष्ट रुख कि वह अमेरिका के कुछ पुराने चेहरों के साथ बातचीत को तैयार नहीं है, इस बात का प्रमाण है कि पिछले अनुभवों ने अविश्वास को गहरा किया है। ऐसे में जेडी वेंस जैसे अपेक्षाकृत नए और संतुलित चेहरों का सामने आना एक सकारात्मक संकेत हो सकता है। लेकिन यह भी सच है कि केवल चेहरों के बदलने से नीतियों में बदलाव की गारंटी नहीं मिलती।

इस्लामाबाद को वार्ता स्थल के रूप में चुनने की संभावना अपने आप में कई मायनों में दिलचस्प है। कतर, तुर्की और मिस्र जैसे देश पहले से ही मध्यस्थता की भूमिका निभाते रहे हैं, लेकिन पाकिस्तान का नाम आगे आना इस बात का संकेत है कि वह अपने भू-राजनीतिक महत्व को भुनाने की कोशिश कर रहा है। ईरान और पाकिस्तान के बीच सांस्कृतिक और भौगोलिक निकटता, साथ ही अमेरिका के साथ पाकिस्तान के संबंध, उसे एक संभावित ब्रिज स्टेट बनाते हैं।

इसके साथ ही 29 और 30 मार्च को सऊदी अरब, तुर्की और मिस्र के विदेश मंत्रियों का पाकिस्तान दौरा इस बात का संकेत है कि क्षेत्रीय शक्तियां भी इस पहल को गंभीरता से ले रही हैं। यह दौरा न केवल मौजूदा संघर्ष पर चर्चा का मंच बनेगा, बल्कि यह भी तय करेगा कि क्या इस्लामाबाद वास्तव में एक प्रभावी मध्यस्थ की भूमिका निभा सकता है या नहीं।

फिर भी, सबसे बड़ा प्रश्न वही है कि क्या यह पहल वास्तविक शांति की दिशा में कदम साबित होगी? केवल वार्ता का स्थान तय कर लेना पर्याप्त नहीं है। असली चुनौती है भरोसे को पुनर्स्थापित करना और संवाद को ईमानदारी से आगे बढ़ाना। डोनाल्ड ट्रंप द्वारा मजबूत वार्ता की बात करना एक राजनीतिक बयान हो सकता है, लेकिन जमीन पर हालात इससे कहीं अधिक जटिल हैं।

दुनिया आज एक और लंबे और विनाशकारी युद्ध के लिए तैयार नहीं है। ऐसे में अगर इस्लामाबाद में कोई सार्थक वार्ता होती है, तो यह केवल एक कूटनीतिक सफलता नहीं बल्कि वैश्विक राहत का संकेत होगी। लेकिन इसके लिए सभी पक्षों को अपनी जिद छोड़कर व्यावहारिक समाधान की दिशा में आगे बढ़ना होगा। क्योंकि अंततः शांति केवल समझौतों से नहीं, बल्कि आपसी विश्वास और सच्चे इरादों से स्थापित होती है।

मध्य पूर्व संकट पर भारत की संतुलित रणनीति

मध्य पूर्व संकट के बीच भारत ने संतुलित और व्यावहारिक नीति अपनाई है, जिसमें संवाद को बढ़ावा, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना, और क्षेत्र में रह रहे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है

मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव ने वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था को एक बार फिर अनिश्चितता के दौर में ला खड़ा किया है। इस जटिल परिदृश्य में भारत की भूमिका भले ही प्रत्यक्ष रूप से मुखर न हो, लेकिन उसकी शांत कूटनीति स्पष्ट रूप से सक्रिय और प्रभावशाली दिखाई देती है। भारत ने खुद को किसी औपचारिक मध्यस्थ के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, फिर भी उसकी रणनीतिक सोच और संतुलित दृष्टिकोण उसे एक संभावित स्थिरकारी शक्ति के रूप में स्थापित करते हैं।

भारत की विदेश नीति का मूल आधार संतुलन और बहुपक्षीय संबंधों का संरक्षण रहा है। एक ओर उसके मजबूत रिश्ते अमेरिका और इस्राइल के साथ हैं, तो दूसरी ओर ईरान और खाड़ी देशों के साथ भी गहरे आर्थिक और सामरिक संबंध हैं। ऐसे में भारत का किसी एक पक्ष के साथ खुलकर खड़ा होना न केवल उसकी कूटनीतिक स्थिति को कमजोर कर सकता है, बल्कि उसके दीर्घकालिक हितों को भी प्रभावित कर सकता है। यही कारण है कि भारत ने संयमित रुख अपनाते हुए संवाद और कूटनीति को ही समाधान का एकमात्र रास्ता बताया है।

हाल ही में नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच हुई बातचीत इस दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत देती है। इस संवाद में अरब सागर से जुड़े अत्यंत महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग, हार्मुज जलडमरूमध्य की सुरक्षा और खुलापन सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया। यह जलडमरूमध्य वैश्विक तेल आपूर्ति का प्रमुख मार्ग है, और इसकी स्थिरता सीधे तौर पर विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ी है। इस वार्ता में एलन मस्क की उपस्थिति भी यह दर्शाती है कि यह मुद्दा केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि आर्थिक और तकनीकी दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत के लिए इस संकट का सबसे बड़ा पहलू उसकी ऊर्जा सुरक्षा है। देश अपनी तेल जरूरतों का बड़ा हिस्सा मध्य पूर्व से आयात करता है। यदि क्षेत्र में अस्थिरता बनी रहती है, तो इसका असर भारत की अर्थव्यवस्था, महंगाई और आम जनता पर पड़ेगा। इसलिए भारत न केवल पारंपरिक आपूर्ति स्रोतों को सुरक्षित रखने पर ध्यान दे रहा है, बल्कि वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की खोज भी तेज कर रहा है। यह रणनीति दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इसके साथ ही, मध्य पूर्व में रह रहे लाखों भारतीयों की सुरक्षा भी भारत सरकार की प्राथमिकता है। अतीत में भारत ने संकट के समय बड़े पैमाने पर सफल निकासी अभियान चलाए हैं, और वर्तमान परिस्थितियों में भी सरकार सतर्क और तैयार नजर आती है। दूतावासों को अलर्ट पर रखा गया है और हालात पर लगातार नजर रखी जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी भारत का रुख संतुलित और जिम्मेदार बना हुआ है। वह आक्रामक बयानबाजी से बचते हुए शांति, संयम और संवाद की वकालत कर रहा है। यह दृष्टिकोण न केवल भारत की वैश्विक छवि को मजबूत करता है, बल्कि उसे भविष्य में एक स्वीकार्य मध्यस्थ के रूप में उभरने का अवसर भी देता है।

भारत इस संकट में भावनात्मक प्रतिक्रिया देने के बजाय एक परिपक्व और व्यावहारिक रणनीति अपना रहा है। उसकी प्राथमिकता स्पष्ट है, क्षेत्रीय स्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा और अपने नागरिकों की सुरक्षा। यही संतुलन भारत की कूटनीति की पहचान भी है और उसकी सबसे बड़ी शक्ति भी।

सोना: सुरक्षित निवेश या तरलता साधन?

सोने की हालिया गिरावट उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी वास्तविक भूमिका को दर्शाती है। संकट के समय यह केवल सुरक्षित निवेश नहीं, बल्कि तरलता देने वाला साधन बनता है, जिसे निवेशक और केंद्रीय बैंक नकदी जरूरतों के लिए उपयोग करते हैं।

हाल के समय में सोने की कीमतों पर दबाव बढ़ा है। केंद्रीय बैंकों द्वारा बिक्री और निवेशकों की चिंता ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या सोना अपनी पारंपरिक सुरक्षित निवेश की भूमिका खो रहा है। पहली नजर में यह निष्कर्ष आकर्षक लग सकता है, लेकिन गहराई से विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि यह धारणा अधूरी और भ्रामक है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि सोने की भूमिका केवल संकट के समय कीमत बढ़ाने तक सीमित नहीं है। वास्तव में, सोना एक तरलता प्रदान करने वाला साधन है। जब बाजारों में अस्थिरता बढ़ती है और नकदी की जरूरत होती है, तब निवेशक उन संपत्तियों को बेचते हैं जो लाभ में हैं। हाल के वर्षों में सोने ने मजबूत प्रदर्शन किया था, इसलिए संकट के समय इसे बेचना आसान विकल्प बन गया। इसका मतलब यह नहीं कि सोना विफल हो गया, बल्कि यह दर्शाता है कि उसने पहले अच्छा प्रदर्शन किया था।

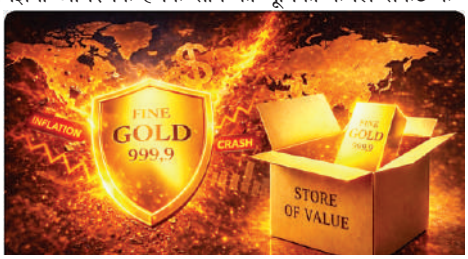

दूसरी महत्वपूर्ण बात केंद्रीय बैंकों की भूमिका है। पिछले चार वर्षों में वैश्विक केंद्रीय बैंकों ने बड़े पैमाने पर सोने की खरीद की, जिससे इसकी कीमतों को समर्थन मिला। लेकिन अब कई देशों को अल्पकालिक आर्थिक स्थिरता, मुद्रा बचाव और ऊर्जा सुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में वे अपने सोने के भंडार का उपयोग नकदी जुटाने के लिए कर रहे हैं।

उदाहरण के तौर पर, तुर्की ने अपनी मुद्रा को स्थिर करने के लिए बड़ी मात्रा में सोना बेचा। यह कदम दर्शाता है कि सोना केवल तिजोरी में रखा गया निष्क्रिय संपत्ति नहीं है, बल्कि संकट के समय उपयोग में लाया जाने वाला एक सक्रिय वित्तीय साधन है। दिलचस्प बात यह है कि तुर्की ने पहले भी संकट के दौरान सोना बेचा था, लेकिन बाद में वही देश फिर से बड़े खरीदार के रूप में उभरा। इससे यह संकेत मिलता है कि सोने की दीर्घकालिक अहमियत बनी हुई है।

तीसरा पहलू निवेशकों की मनोवृत्ति से जुड़ा है। आमतौर पर यह माना जाता है कि संकट के समय सोने की कीमत हमेशा बढ़ेगी। लेकिन वास्तविकता अधिक जटिल है। जब बाजार में नकदी की कमी होती है, तब निवेशक सुरक्षित संपत्तियों को भी बेच सकते हैं। इस प्रक्रिया में सोना फाइनेंशियल बफर की तरह काम करता है। वह दबाव को अवशोषित करता है और प्रणाली को संतुलित बनाए रखने में मदद करता है।

अंततः, सोने की हालिया गिरावट को उसकी प्रासंगिकता में कमी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि सोना अपनी मूल भूमिका निभा रहा है। यानी संकट के समय तरलता उपलब्ध कराना, आर्थिक दबाव को संतुलित करना और वित्तीय प्रणाली को सहारा देना।

कह सकते हैं कि सोना असफल नहीं हुआ है, बल्कि निवेशकों की यह धारणा गलत साबित हुई है कि संकट में यह हमेशा एक ही दिशा में चलेगा। सोने की वास्तविक ताकत उसकी स्थिरता, लचीलापन और बहुआयामी उपयोग में निहित है। और यही कारण है कि भविष्य में भी यह वैश्विक वित्तीय व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहेगा।

ईंधन संकट का भ्रम और नागरिक जिम्मेदारी की परीक्षा

वैश्विक तनाव के बीच भारत में ईंधन संकट को लेकर फैलाया जा रहा भय वास्तविकता से अधिक है। पर्याप्त भंडार और स्थिर आपूर्ति के बावजूद अफवाहें और जमाखोरी कृत्रिम संकट पैदा कर सकती हैं, इसलिए संयम और जागरूकता आवश्यक है।

मध्य पूर्व में ईरान, अमेरिका और इस्राइल के बीच बढ़ते तनाव ने वैश्विक ऊर्जा बाजार में अस्थिरता जरूर पैदा की है। कच्चे तेल की कीमतों में संभावित उछाल और 100 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंचने की आशंका ने चिंताओं को जन्म दिया है। भारत जैसे देश के लिए, जो अपनी लगभग 90 प्रतिशत तेल जरूरतों के लिए आयात पर निर्भर है, यह स्थिति स्वाभाविक रूप से संवेदनशील है। लेकिन इससे भी अधिक चिंताजनक है देश के भीतर फैलाया जा रहा भ्रम और भय।

वास्तविकता यह है कि भारत में ईंधन की आपूर्ति को लेकर फिलहाल कोई गंभीर संकट नहीं है। सरकार ने अंतरराष्ट्रीय दबाव को देखते हुए पेट्रोल और डीजल पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क (एक्साइज ड्यूटी) में कटौती कर आम जनता को राहत देने का प्रयास किया है। यह कदम इस बात का संकेत है कि सरकार वैश्विक संकट का बोझ सीधे नागरिकों पर नहीं डालना चाहती। इसके बावजूद, कई स्थानों पर लोग घबराहट में जरूरत से अधिक ईंधन खरीद रहे हैं, जिससे कृत्रिम संकट की स्थिति बन रही है।

आंकड़े स्पष्ट रूप से बताते हैं कि भारत के पास 70 दिनों से अधिक का पेट्रोलियम भंडार उपलब्ध है। इसके अलावा, रणनीतिक भंडार भी सुरक्षित हैं, जो आपातकालीन स्थिति में देश की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इंडियन ऑइल कॉरपोरेशन, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम जैसी प्रमुख कंपनियों ने भी यह स्पष्ट किया है कि देशभर में ईंधन की आपूर्ति सामान्य है और किसी प्रकार की कमी नहीं है।

भारत की ऊर्जा नीति का एक मजबूत पहलू इसकी विविधता है। आज भारत केवल खाड़ी देशों पर निर्भर नहीं है, बल्कि रूस, अमेरिका और अन्य देशों से भी आयात कर रहा है। यह रणनीति भारत को वैश्विक अस्थिरता के बीच एक सुरक्षा कवच प्रदान करती है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों में तनाव का असर पड़ सकता है, लेकिन इसे आधार बनाकर घरेलू स्तर पर डर फैलाना गैर-जिम्मेदाराना है।

रसोई गैस को लेकर भी स्थिति नियंत्रण में है। सरकार बफर स्टॉक और आपूर्ति तंत्र के जरिए सुनिश्चित कर रही है कि किसी भी उपभोक्ता को परेशानी न हो। इतिहास गवाह है कि वास्तविक संकट से अधिक नुकसान अफवाहें करती हैं। कोविड-19 के दौरान हमने देखा कि घबराहट में की गई जमाखोरी ने आवश्यक वस्तुओं की कृत्रिम कमी पैदा कर दी थी।

आज फिर वही खतरा सामने है। यदि नागरिक संयम नहीं बरतते, तो अफवाहें स्वयं एक संकट का रूप ले सकती हैं। सरकार और प्रशासन लगातार अपील कर रहे हैं कि भ्रामक खबरों से बचें और केवल आधिकारिक सूचनाओं पर भरोसा करें। जमाखोरी और कालाबाजारी को रोकने के लिए निगरानी बढ़ा दी गई है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। यह समझना जरूरी है कि युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़ा जाता, बल्कि समाज के भीतर भी अनुशासन और स्वार्थ के बीच संघर्ष चलता है। यदि हम व्यक्तिगत लाभ के लिए संसाधनों का अत्यधिक संग्रह करते हैं, तो हम अनजाने में पूरे तंत्र को कमजोर करते हैं। यह समय केवल सरकार की नीतियों की परीक्षा नहीं है, बल्कि हर नागरिक के धैर्य और जिम्मेदारी की भी कसौटी है। बाहरी चुनौतियों से निपटने के लिए रणनीतियां बनाई जा सकती हैं, लेकिन आंतरिक अव्यवस्था और भय को केवल जागरूक नागरिक ही नियंत्रित कर सकते हैं। सच यही है कि किसी भी देश को संकट से उतना खतरा नहीं होता, जितना उसके नागरिकों के असंयम और स्वार्थ से होता है।

पश्चिम एशिया में बढ़ता संघर्ष: वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहराता संकट

ईरान के दबाव में डगमगाता अमेरिका

अमेरिका और इजरायल द्वारा शुरू किया गया सैन्य अभियान अब उल्टा पड़ता दिख रहा है। ईरान की जवाबी क्षमता ने न केवल युद्ध को लंबा खींच दिया है, बल्कि वैश्विक तेल बाजार, व्यापार और अर्थव्यवस्था को भी गहरे संकट में डाल दिया है। इस संघर्ष ने भारत की विदेश नीति, चीन की रणनीति और पश्चिमी कॉरपोरेट जगत की कमजोरियों को भी उजागर कर दिया है।

संजीव पांडेय वरिष्ठ पत्रकार

हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बयान देते हुए कहा, 'अमेरिका और ईरान के बीच बातचीत सकारात्मक दिशा में बढ़ रही है और अस्थायी रूप से सैन्य हमलों को टाल दिया गया है।' इसके बावजूद जमीनी स्थिति अभी भी तनावपूर्ण बनी हुई है और संघर्ष पूरी तरह थमता नजर नहीं आ रहा। अमेरिका-इजरायल गठजोड़ और ईरान के बीच चल रहा यह युद्ध अब और जटिल होता जा रहा है। 28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर बड़े सैन्य हमलों से शुरू हुआ यह युद्ध अब ईरानी मिसाइल और ड्रोन हमलों के कारण काफी जटिल हो चुका है। जो कुछ अमेरिका और इजरायल ने सोचा था, उसका उल्टा हुआ। ईरान के शीर्ष सैन्य और रणनीतिक ठिकानों पर हमलों के बावजूद उसका मनोबल टूटने के बजाय और मजबूत होता दिखा। यह संघर्ष अब पूरे पश्चिम एशिया में फैल चुका है। लड़ाई कई हफ्तों से जारी है, हजारों लोग प्रभावित हुए हैं और तेल आपूर्ति, व्यापार तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका गंभीर असर पड़ा है।

ताजा घटनाक्रम इस संघर्ष को निर्णायक लेकिन अनिश्चित मोड़ की ओर ले जाता दिख रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने सीमित अवधि के लिए सैन्य कार्रवाई को टालने का संकेत दिया है, जिससे कूटनीतिक बातचीत को अवसर मिल सके। हालांकि यह विराम स्थायी समाधान से ज्यादा एक रणनीतिक ठहराव नजर आ रहा है, क्योंकि दोनों पक्षों के बीच भरोसे की कमी अब भी बनी हुई है। दूसरी ओर ईरान ने वार्ता के संकेत दिए हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर उसकी जवाबी कार्रवाई जारी है, जो इस टकराव को सीमित लेकिन लगातार चलने वाले संघर्ष में बदलने की आशंका को बढ़ा रही है। इसी बीच हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य में बना तनाव वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और समुद्री व्यापार के लिए गंभीर जोखिम बना हुआ है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस संघर्ष को लेकर चिंता बढ़ रही है, क्योंकि यह स्पष्ट होता जा रहा है कि युद्ध भले ही अस्थायी विराम में जाए, लेकिन टकराव की जड़ें अभी भी गहरी और अस्थिर बनी हुई हैं।

वास्तविकता में देखें तो फिलहाल दोनों पक्ष पीछे हटने के संकेत नहीं दे रहे हैं। विश्लेषकों के अनुसार, अमेरिका और इजरायल ने ईरान की जवाबी क्षमता का पूरा आकलन नहीं किया था। ईरान ने वो कर दिखाया, जिसकी अमेरिका और इजरायल ने कल्पना भी नहीं की थी। इजरायली और अमेरिकी डिफेंस सिस्टम की प्रभावशीलता पर सवाल उठने लगे हैं। ईरानी मिसाइल पूरे मध्यपूर्व में अमेरिकी सैन्य बेसों और इजरायली शहरों को निशाना बना रही है। ईरान की जवाबी कार्रवाई जारी है, जिससे हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य में आवागमन गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है। इसका सबसे ज्यादा असर एशियाई और यूरोपीय देशों पर पड़ा है जो पश्चिम एशिया के तेल और गैस पर निर्भर हैं।

भारत जैसे देश के सामने गंभीर चुनौतियां खड़ी हो गई हैं, जो अपनी ऊर्जा जरूरतों की बड़ी मात्रा आयात करता है। इसके लिए जल्द कूटनीतिक समाधान निकालना होगा। ऐसा न होने पर भारत, पाकिस्तान जैसे देशों की हालत और खराब होगी, जो मध्यपूर्व में काम कर रहे श्रमिकों द्वारा भेजी जाने वाली विदेशी मुद्रा पर काफी निर्भर हैं, तेल और गैस के अपने यहां की ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करते हैं।

अमेरिकी कंपनियों पर नकारात्मक असर

इजरायल के समर्थन में अमेरिका युद्ध में शामिल हुआ। जनता से लेकर कई अमेरिकी नेता डोनाल्ड ट्रंप के इस फैसले से काफी नाराज हुए। अब युद्ध लंबा खींच चुका है और ईरान ने पश्चिम एशिया में अमेरिकी निवेशों पर हमला शुरू कर दिया है, जिससे पश्चिमी कॉरपोरेशनों में अनिश्चितता आई है। डोनाल्ड ट्रंप के फैसले के परिणामों का अब उन्हें अहसास होने लगा है। अमेरिकी कॉरपोरेट सेक्टर के कई कंपनियों पर बहु-स्तरीय नकारात्मक असर साफ दिखने लगा है। क्षेत्र में अस्थिरता और सुरक्षा जोखिम बढ़ने से कंपनियों के प्रोजेक्ट्स और ऑपरेशन्स प्रभावित होने लगे हैं। खासकर तेल, गैस, इंफ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक्स से जुड़ी कंपनियों एक्सॉन मोबिल कॉर्पोरेशन, शेवरॉन कॉरपोरेशन को उत्पादन में बाधा का सामना करना पड़ रहा है। इनके कर्मचारियों की सुरक्षा खतरे में है। कई कंपनियों को अपने प्रोजेक्ट्स रोकने या धीमा करने पड़ रहे हैं, जिससे सीधे इनके राजस्व पर असर पड़ रहा है।

कई अमेरिकी कंपनियों को सप्लाई चेन और व्यापारिक लागत में वृद्धि का सामना करना पड़ रहा है। हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर खतरा बढ़ने से शिपिंग महंगी और जोखिमपूर्ण हो गई है, जिससे ऑमेजन और एपल जैसे वैश्विक कंपनियों की सप्लाई प्रभावित हो रही है। समुद्री जहाजों की बीमा की लागत बढ़ रही है, जिसका सीधा असर आम लोगों पर पड़ेगा। निवेशक अनिश्चितता के कारण पूंजी बाजार में उतार-चढ़ाव आ रहा है, और कई अमेरिकी कंपनियों के शेयरों पर दबाव बन रहा है। कुल मिलाकर, यह संघर्ष अमेरिकी कॉरपोरेट के लिए लागत बढ़ाने, मुनाफा घटाने वाला है। यह संघर्ष उनके भविष्य के निवेश को अनिश्चित बनाएगा।

सर्वाधिक असर तेल बाजार पर

ईरान युद्ध का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर सीधा और व्यापक असर दिखाई देने लगा है। क्योंकि इसका सबसे ज्यादा प्रभाव तेल बाजार पर पड़ा है। ईरान पश्चिम एशिया का महत्वपूर्ण तेल उत्पादक देश है। दूसरी तरफ हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य से दुनिया का लगभग 20 प्रतिशत कारोबार होता है। दुनिया के कुल समुद्री तेल व्यापार का लगभग पांचवां हिस्सा इसी मार्ग से गुजरता रहा है। युद्ध के बाद इस इलाके से जहाजों का गुजरना न के बराबर हो गया है और इस कारण कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल आया है। तेल महंगा होने से परिवहन, बिजली और उत्पादन लागत बढ़ना तय है। इसका असर सीधे महंगाई पर पड़ेगा और भारत समेत दुनिया के कई देश प्रभावित होंगे। अनिश्चितता बढ़ने के कारण दुनिया भर के शेयर बाजारों में गिरावट आ रही है। इसका सीधा असर निवेश पर पड़ेगा। सप्लाई चेन भी प्रभावित हो रही है, जिससे कई देशों में वस्तुओं की कमी और कीमतों में वृद्धि हो रही है। युद्ध लंबा चला तो वैश्विक विकास दर धीमी पड़ सकती है। दुनिया भर में बेरोजगारी बढ़ सकती है। कई कमजोर अर्थव्यवस्थाएं संकट में आ सकती हैं।

भारत में दिखने लगा प्रतिकूल असर

भारत जैसे देश पर हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य में तनाव बढ़ने से कच्चे तेल की कीमतें ऊपर जाएंगी। इससे पेट्रोल-डीजल महंगे होते हैं तो सरकार पर सब्सिडी का दबाव बढ़ेगा। उधर चालू खाता घाटा भी बढ़ेगा। तेल की कीमत बढ़ने पर परिवहन और लॉजिस्टिक्स महंगा होगा, जिससे ट्रक, रेलवे, एयरलाइंस सब प्रभावित होंगे। शिपिंग रूट्स असुरक्षित होने से माल ढुलाई में देरी होगी, बीमा खर्च बढ़ेगा, व्यापार महंगा होगा। ऊर्जा लागत बढ़ने से उत्पादन महंगा होगा, जिसका सीधा असर स्टील, सीमेंट, केमिकल और ऑटो सेक्टर पर पड़ेगा। कंपनियों का मुनाफा घटेगा, क्योंकि उत्पाद महंगे हो सकते हैं। लेकिन भारत जैसे देश पर सबसे ज्यादा प्रभाव कृषि सेक्टर पर पड़ेगा। पश्चिम एशिया से भारत उर्वरक आयात करता है, और धान की खेती अब शुरू होने वाली है। उर्वरक की कीमत बढ़ेगी या कमी होगी तो इसका सीधा असर धान की फसल पर पड़ेगा। इससे किसानों पर दबाव और खाद्य महंगाई बढ़ सकती है।

युद्ध शुरू होने से पहले कच्चा तेल की कीमतें लगभग 75–80 डॉलर प्रति बैरल थीं जो अब बढ़कर 95–120 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गई है। इससे निश्चित तौर पर भारत का आयात बिल बढ़ेगा। हर 10 डॉलर की बढ़ोतरी से भारत का सालाना आयात खर्च अरबों डॉलर बढ़ सकता है। यही नहीं आयात बिल ज्यादा होने के कारण भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले कमजोर हुआ है। एक डॉलर लगभग 82–83 रुपए से बढ़कर 90 रुपए के पार पहुंचता दिख रहा है। दूसरी तरफ महंगाई दर में दबाव देखा जा रहा है और खुदरा महंगाई में 0.5%–1% तक अतिरिक्त दबाव बनने की आशंका है। क्योंकि ईंधन, ट्रांसपोर्ट और खाद्य वस्तुओं के दाम बढ़ रहे हैं। भारतीय शेयर बाजार में गिरावट जारी है। विदेशी निवेशों ने हजारों करोड़ रुपए निकाल लिए हैं। आने वाले समय में ट्रांसपोर्ट और एयरलाइन किराए में बढ़ोतरी होगी। एविएशन फ्यूल महंगा होने से एयरलाइंस की लागत 10–20 प्रतिशत तक बढ़ चुकी है।

चीन की दिक्कतें भी बढ़ी

ईरान और अमेरिका के बीच चल रहे युद्ध का प्रभाव चीन पर भी पड़ रहा है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा तेल आयातक है और उसकी बड़ी निर्भरता पश्चिम एशिया के तेल पर है। कच्चे तेल की कीमत 90–120 डॉलर प्रति बैरल पहुंचने से चीन की ऊर्जा कंपनियां सिनोपैक और चाइना नेशनल पेट्रोलियम कारपोरेशन की आयात लागत काफी बढ़ गई है। अनुमानतः चीन को हर महीने अरबों डॉलर अतिरिक्त खर्च करना पड़ रहा है, जिससे चीन के रिफाइनिंग मार्जिन पर दबाव आया है। कच्चा तेल महंगा होने से चीन की रिफाइनरियों की लागत बढ़ी है। चीन पर भी सप्लाई चेन और रूट जोखिम का असर दिख रहा है, क्योंकि हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य से चीन के लिए बड़ी मात्रा में तेल आता है। इस रूट पर खतरा बढ़ने से सप्लाई में देरी, शिपिंग इंश्योरेंस महंगा और लॉजिस्टिक लागत चीन की भी बढ़ गई है। कुछ टैंकरों को लंबा रूट लेना पड़ रहा है, जिससे समय और लागत दोनों बढ़े हैं। इन परिस्थितियों में चीनी सरकार को घरेलू ईंधन कीमतों को नियंत्रित करने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ रहा है, जिससे कंपनियों के मुनाफे पर असर पड़ा है। दिलचस्प बात है कि चीन इन बदली हुई परिस्थितियों के लिए पहले से तैयारी कर रहा था। चीन को पता था कि भविष्य में यह स्थिति आ सकती है, इसलिए वह वैकल्पिक ऊर्जा रणनीति पर जोर दे रहा था। इस संकट के कारण चीन ने रूस और अन्य स्रोतों से सस्ता तेल लेना जारी रखा था। चीन भारत की तरह रूसी तेल खरीद को लेकर अमेरिकी दबाव मानने से इनकार कर गया था। साथ ही चीन नवीकरणीय ऊर्जा पर अपनी निर्भरता पहले से ही बढ़ा रहा है।

चीन की रणनीतिक चुप्पी

लेकिन दूसरी तरफ चीन भी चुप्पी साधे रखा। हालांकि बताया जाता है कि चीन ने पूरे युद्ध के दौरान ईरान को तकनीकी समर्थन दिया है जिस कारण ईरानी मिसाइलों का आक्रमण काफी सटीक देखा गया है। हालांकि खुल कर ईरान के समर्थन में चीन के नहीं आने का एक और कारण है। चीन का चुप रहना असल में रणनीतिक नीति का हिस्सा है, न कि चीन की कमजोरी जो भारत ने दिखाई। ईरान युद्ध हो या वेनेजुएला संकट, दोनों में चीन ने जानबूझकर अपने आप को लो-प्रोफाइल रखा। चीन हस्तक्षेप न करने की नीति पर चलता है और पीछे से समर्थन देता है। चीन सीधे युद्ध में कूदने या किसी एक पक्ष का खुला समर्थन करने से बचता है, ताकि भविष्य में सभी देशों से संबंध अच्छे बनाए रख सके। लेकिन चीन ने भारत की तरह खुलकर इजरायल के साथ खड़ा नहीं हुआ। चीन का सबसे पहला फोकस व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा है, न कि सैन्य टकराव। ईरान और वेनेजुएला दोनों से उसे सस्ता तेल मिलता है। अगर वह खुलकर किसी पक्ष में आ गया, तो उसके तेल सप्लाई और निवेश खतरे में पड़ सकते हैं। लेकिन ईरान नाराज न हो इसलिए चीन ने तकनीकी सहयोग देकर ईरान को मोर्चे पर मजबूत रखा है। अमेरिका चीन की इस रणनीति को समझ रहा है, लेकिन खुलकर प्रतिक्रिया देने से बच रहा है। चीन की रणनीति शुरू से ही सामने से आक्रामक न होने की रही है। वो अमेरिका से सीधे टकराव से बच रहा है, लेकिन वो यह तय कर चुका है कि पश्चिम एशिया में ईरान को गिरने नहीं देगा। क्योंकि ईरान के गिरने का मतलब है कि पश्चिम एशिया के तेल पर अमेरिकी नियंत्रण जो चीनी ऊर्जा जरूरतों को संकट में डाल देगा। इसलिए चीन पीछे से समर्थन देकर ईरान को मजबूत बनाए रखेगा। यही वजह है कि चीन इस संघर्ष में 'कम बोलो, ज्यादा साधो' की रणनीति पर चलता दिख रहा है और इस संकट को खतरे के साथ-साथ अवसर के रूप में भी देख रहा है।

यह संघर्ष अब केवल सैन्य टकराव नहीं रहा, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन की निर्णायक परीक्षा बन चुका है। यहां हथियारों से ज्यादा असर कूटनीति, ऊर्जा नियंत्रण और आर्थिक रणनीति का दिख रहा है। आने वाला समय तय करेगा कि विश्व व्यवस्था की कमान सैन्य ताकत के बल पर होगी या रणनीतिक समझ के दम पर।

डॉ. शोभा भंडारी ✍ कवि, लेखक

परिचय

घने बियाबान में घने दरख्तों के बीच, परिंदे
अपना घरौंदा, अपना ठिकाना ढूंढ ही लेते हैं,
एक ही वटवृक्ष पर अपना नीड़ बसा लेते हैं,
किसी परिचय के ये मोहताज नहीं हैं,
अपनेपन की डोर से ये स्वतः ही बंध जाते हैं,
सह अस्तित्व और सहयोग के भाव को समाहित कर,
एक दूसरे के मोह बंधन में समा जाते हैं,
अजनबी यहां कोई नहीं, सब प्रेम की धुन गुनगुनाते हैं।

महानगरों में फैले कंक्रीट के घने जंगलों में,
हर इंसान एक अजनबी है, अनजान है
गगनचुंबी इमारतें तो आसमान से बातें करती हैं,
लेकिन इंसानों की बस्ती में एक खामोशी सी पसरी रहती है,
यहां तक कि एक घर की छत के नीचे रहने वाले,
दो इंसान भी अजनबी से अलग-थलग रह जाते हैं।।

व्यस्तता ने मानों हर इंसान का परिचय ही छीन लिया है,
उसे निःशब्द करके वीरानी में धकेल दिया है,
इससे पहले कि ये सूनापन हमें मूक-बधिर बना दे,
आओ हम परिचय और संवाद की एक
अंतहीन कड़ी जोड़ लें।।

इंडो-पैसिफिक में बढ़ता तनाव : क्या विश्व एक और युद्ध की ओर?

ताइवान पर मंडराता संकट

ताइवान को लेकर चीन और अमेरिका के बीच बढ़ती तनातनी अब केवल एक क्षेत्रीय विवाद नहीं रही। सेमीकंडक्टर की सिलिकॉन शील्ड से लेकर समुद्री व्यापार के व्यस्ततम रास्तों तक, इस संघर्ष का असर हर भारतीय की जेब और दुनिया की सेहत पर पड़ सकता है। सवाल यह है कि क्या दुनिया एक और विनाशकारी युद्ध की ओर बढ़ रही है या यह स्थायी तनाव ही भविष्य का नया वैश्विक सच है?

ताइवान की नई पीढ़ी ने जब से खुद को चीन से अलग एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक समाज के रूप में देखना शुरू किया है, तब से चीन के साथ वैचारिक और राजनीतिक विरोधाभास आज की सबसे बड़ी भू-राजनीतिक चुनौती बन गया है। उल्लेखनीय है कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कई बार स्पष्ट किया है कि ताइवान का चीन में विलय अनिवार्य है और इसके लिए वे बल प्रयोग से भी पीछे नहीं हटेंगे। पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में इन दिनों जो हलचल दिख रही है, वह किसी बड़े तूफान के आने का पूर्व संकेत है।

चीन और ताइवान के बीच का तनाव अब केवल बयानों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह समुद्र की लहरों और आसमान की गहराइयों में साफ दिखाई देने लगा है। हाल के वर्षों में चीन द्वारा ताइवान के चारों ओर किए गए व्यापक सैन्य अभ्यास ने पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया है। इसे विशेषज्ञों ने पूर्ण नाकेबंदी का पूर्वाभ्यास माना है। ताइवान का प्रश्न अब केवल एक छोटे से द्वीप की संप्रभुता का नहीं रहा, बल्कि यह 21वीं सदी के राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी वर्चस्व की निर्णायक लड़ाई का केंद्र बन चुका है। इस विवाद की जड़ें साल 1949 के घटनाक्रम में छिपी हैं। चीनी गृहयुद्ध के बाद जब कम्युनिस्ट पार्टी ने मुख्य भूमि चीन पर कब्जा कर लिया, तो राष्ट्रवादी सरकार (कुओमिंतांग) भागकर ताइवान द्वीप पर आ गई। तब से चीन वन चाइना पॉलिसी के तहत ताइवान को अपना एक विद्रोही प्रांत मानता है और उसके पुनः एकीकरण की बात करता है।

ग्रे ज़ोन वॉरफेयर का सहारा

चीन अब केवल पारंपरिक युद्ध की धमकी नहीं दे रहा, बल्कि वह ग्रे ज़ोन वॉरफेयर का सहारा ले रहा है। यह एक ऐसी रणनीति है जिसमें सीधे तौर पर युद्ध की घोषणा तो नहीं की जाती, लेकिन दुश्मन को हर स्तर पर परेशान किया जाता है। ताइवान के सरकारी नेटवर्क पर रोजाना लाखों साइबर हमले, ताइवान के हवाई क्षेत्र में चीनी लड़ाकू विमानों की घुसपैठ और फेक न्यूज के जरिए वहां के नागरिकों के मनोबल को तोड़ना इसी का हिस्सा है। चीन ताइवान को इतना थका देना चाहता है कि वह बिना युद्ध किए ही घुटने टेक दे।

हमला हुआ तो ठहर जाएगी वैश्विक अर्थव्यवस्था

इस पूरे संघर्ष का सबसे दिलचस्प और महत्वपूर्ण पहलू है सेमीकंडक्टर या कंप्यूटर चिप्स। आज की डिजिटल दुनिया में मोबाइल फोन से लेकर वाशिंग मशीन, कार, मिसाइल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक, सब कुछ इन छोटी सी चिप्स पर निर्भर है। दुनिया की 90 प्रतिशत सबसे उन्नत चिप्स ताइवान की कंपनी टीएसएमसी बनाती है। इसे ताइवान की सिलिकॉन शील्ड कहा जाता है। दुनिया जानती है कि अगर ताइवान की इन फैक्ट्रियों पर हमला हुआ या काम रुका, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था ठहर जाएगी। चीन के लिए भी यह दोधारी तलवार है, क्योंकि उसके अपने उद्योग भी ताइवान की इन्हीं चिप्स पर निर्भर हैं। इसीलिए यह संघर्ष अब टेक्नोलॉजी वॉर का रूप ले चुका है।

समुद्री व्यापार का सबसे व्यस्त गलियारा

समुद्री व्यापार का सबसे व्यस्त गलियारा भू-राजनीतिक दृष्टि से ताइवान जलडमरूमध्य दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण समुद्री रास्ता है। दुनिया के आधे से ज्यादा मालवाहक जहाज इसी रास्ते से गुजरते हैं। यदि यहां युद्ध छिड़ता है, तो स्वेज नहर या यूक्रेन युद्ध से भी कहीं बड़ा आर्थिक संकट पैदा हो जाएगा। कच्चे तेल की सप्लाई रुक सकती है और महंगाई का एक ऐसा दौर आ सकता है जिसे संभालना किसी भी देश के लिए मुश्किल होगा। अमेरिका इसी व्यापारिक स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए ताइवान के आसपास अपनी नौसैनिक मौजूदगी बढ़ा रहा है।

चीन और ताइवान को यूक्रेन युद्ध का सबक

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध ने चीन और ताइवान दोनों को महत्वपूर्ण सबक दिए हैं। चीन ने देखा कि रूस को आर्थिक प्रतिबंधों और लंबी खिंचती जंग ने कितना नुकसान पहुंचाया है। इसलिए चीन अब अपनी अर्थव्यवस्था को प्रतिबंधों से बचाने की तैयारी कर रहा है और उसकी कोशिश होगी कि अगर वह ताइवान पर हमला करे, तो वह तेज हमला हो, ताकि दुनिया को संभलने का मौका न मिले। वहीं, ताइवान ने यूक्रेन से सीखा है कि छोटी सेना भी आधुनिक ड्रोन्स और मिसाइलों के जरिए बड़ी ताकत को रोक सकती है। ताइवान अब अपनी साही की रणनीति पर काम कर रहा है, ताकि वह चीन के लिए निगलने में कठिन बन जाए।

भारत के लिए चुनौती और बड़ा अवसर भी

भारत के लिए ताइवान का संकट दूर का मामला नहीं है। भारत का लगभग 50 प्रतिशत समुद्री व्यापार इसी क्षेत्र के रास्तों से होता है। यदि यहां अशांति बढ़ती है, तो भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल सेक्टर में हाहाकार मच सकता है, क्योंकि हम चिप्स के लिए ताइवान पर निर्भर हैं।

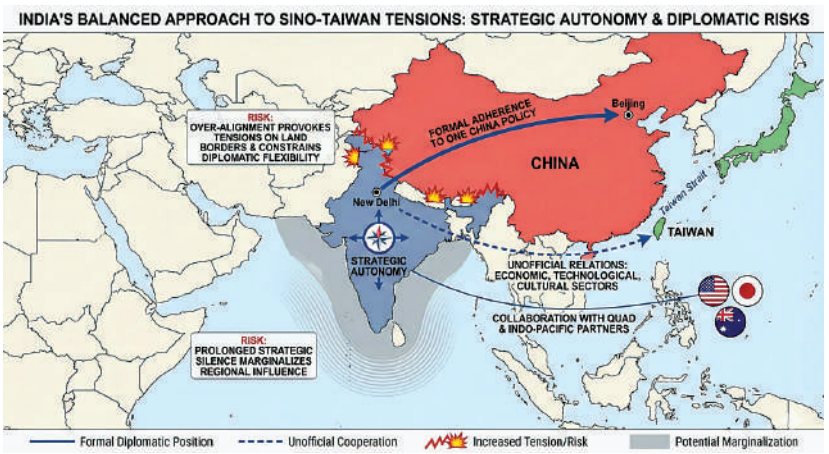

हालांकि, इस संकट के बीच भारत के लिए एक बड़ा अवसर भी है। दुनिया की बड़ी कंपनियां अब चीन प्लस वन रणनीति अपना रही हैं, यानी वे चीन के बाहर अपने कारखाने लगाना चाहती हैं। भारत ने अपनी सेमीकॉन इंडिया योजना के जरिए खुद को एक विकल्प के रूप में पेश किया है। फॉक्सकॉन जैसी ताइवानी कंपनियों का भारत में निवेश बढ़ना इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है। साथ ही, क्वाड समूह में भारत की सक्रियता और एक्ट ईस्ट नीति चीन की आक्रामकता को संतुलित करने में बड़ी भूमिका निभा सकती है।

क्या युद्ध ही एकमात्र विकल्प है?...

सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह तनाव महायुद्ध में बदलेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि पूर्ण युद्ध के परिणाम इतने भयावह होंगे कि कोई भी देश इसे शुरू करने का जोखिम नहीं लेना चाहेगा। लेकिन इतिहास गवाह है कि कई बार छोटी सी गलतफहमी या किसी विमान की आकस्मिक टक्कर बड़े युद्ध की चिंगारी बन जाती है। फिलहाल दुनिया एक ऐसे दौर में है जहां स्थायी तनाव ही नई सामान्य स्थिति बन गई है।

ताइवान आज केवल एक द्वीप नहीं, बल्कि वैश्विक शांति और तकनीक की धुरी बन चुका है। आने वाले समय में यह तय होगा कि विश्व नेतृत्व इस संकट को कूटनीति से सुलझाता है या दुनिया एक और बड़े अंधेरे की ओर बढ़ जाती है। भारत को इस स्थिति में अपनी आर्थिक और सामरिक शक्ति को इतना मजबूत करना होगा कि वह इस वैश्विक हलचल के बीच न केवल खुद को सुरक्षित रख सके, बल्कि एक मध्यस्थ और मजबूत विकल्प के रूप में भी उभर सके। भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति अब केवल व्यापार तक सीमित नहीं, बल्कि क्षेत्रीय संतुलन का आधार बन रही है।

-राकेश गांधी, वरिष्ठ पत्रकार

सियासत : 4 राज्यों और 1 केन्द्रशासित प्रदेश में बजी चुनावी रणभेरी

मोदी-शाह की बड़ी अग्निपरीक्षा

राजेश कसेरा, वरिष्ठ पत्रकार, राजनीतिक विश्लेषक

पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के विधानसभा चुनाव राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने वाले साबित हो सकते हैं। जहां एक ओर यह चुनाव केंद्र सरकार के लिए जनमत की कसौटी हैं, वहीं क्षेत्रीय दलों के वजूद की भी परीक्षा है। महंगाई, अंतरराष्ट्रीय हालात और गठबंधन की राजनीति के बीच यह मुकाबला बेहद दिलचस्प और निर्णायक बन गया है।

एक देश-एक चुनाव का सपना साकार होने के बीच भारत के चार राज्यों पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और केन्द्रशासित प्रदेश पुडुचेरी में आखिरकार विधानसभा चुनाव की रणभेरी बज गई। अप्रैल के महीने में इन सभी विधानसभाओं के चुनाव हो जाएंगे और नतीजे 4 मई को सामने आ जाएंगे। इन चुनावों में भले राज्यों के मुद्दों के साथ राष्ट्रीय स्तर के कई सियासी समीकरण जीत-हार की हवा को तय करेंगे, लेकिन इस बार एक बड़ा फैक्टर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मच रही उथल-पुथल भी चुनाव की दिशा को तय करेगा। ईरान पर अमेरिका-इजराइल के हमले के बाद जिस तरह की चुनौतियां भारत में बढ़ी हैं, वे भी मतदाताओं के दिलोदिमाग पर जरूर दस्तक देंगी। ऐसे में यह मुद्दा एनडीए गठबंधन को परेशान कर सकता है तो चारों राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेश के सत्तारूढ़ दलों की भी समस्याएं बढ़ा सकता है। इन राज्यों का सत्ता संग्राम इसलिए भी दिलचस्प होगा, क्योंकि दो राज्यों में केन्द्र में सत्तारूढ़ गठबंधन एनडीए की सरकारें हैं तो तीन में विपक्ष इंडी गठबंधन की।

राजनीतिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करें तो ये विधानसभा चुनाव केन्द्र की नरेंद्र मोदी सरकार के लिए मिड टर्म जनमत संग्रह भी हो सकते हैं। कांग्रेस जैसे सबसे बड़े राष्ट्रीय दल को हाशिए पर लाने वाली भारतीय जनता पार्टी मोदी की बढ़ती लोकप्रियता के बावजूद कई क्षेत्रीय दलों से पार नहीं पा सकी। खासकर पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और ममता बनर्जी का कोई तोड़ भाजपा और उसकी मजबूत रणनीति नहीं ढूंढ सकी। लोकसभा चुनाव में भले भाजपा ने यहां पर उम्मीद से परे जाकर परिणाम दिए, लेकिन विधानसभा चुनावों में ममता से लोहा लेना आसान नहीं होगा।

प्रभुत्व नहीं खोना चाहेंगे क्षेत्रीय दल... एनडीए बनाम इंडी गठबंधन के बीच केंद्रित होती जा रही देश की राजनीति के बीच कई क्षेत्रीय दल ऐसे हैं जो केंद्रीय स्तर पर तो गठबंधन की राजनीति करना चाहते हैं, लेकिन अपने राज्यों में वे सत्ता बांटना नहीं चाहेंगे। इन परिस्थितियों में ये विधानसभा चुनाव राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के गठबंधनों के लिए अस्तित्व बचाने की लड़ाई से कम नहीं साबित होंगे।

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के चुनाव परिणाम यह भी बताएंगे कि आने वाले दिनों में क्षेत्रीय दलों की देश की राजनीति में क्या भूमिका रहने वाली है? ममता बनर्जी और स्टालिन की जीत अगले साल उत्तरप्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव को नई ताकत देगी। वहीं इनकी हार कांग्रेस को उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी पर हावी होने का मौका दे देगी। इन चुनावों में जहां कांग्रेस और भाजपा जैसे राष्ट्रीय दलों की प्रतिष्ठा दांव पर है तो तृणमूल कांग्रेस, डीएमके और एआईएडीएमके जैसे मजबूत क्षेत्रीय दलों की भी अग्निपरीक्षा है। इन चुनावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, राहुल गांधी, ममता बनर्जी, एमके स्टालिन और हिमंत बिस्वा सरमा जैसे बड़े नेताओं के राजनीतिक भविष्य भी तय होंगे।

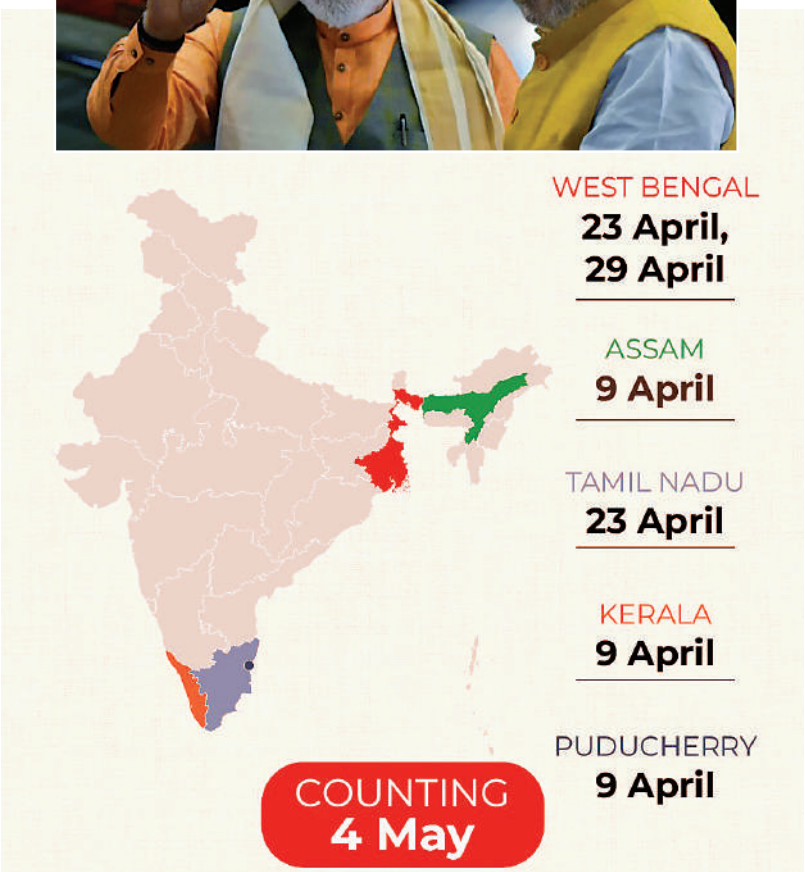

असम : यहां का चुनाव हिमंत बिस्वा सरमा vs गांधी परिवार

असम में 10 वर्ष से भाजपा की सरकार है और कांग्रेस सरकार के दौरान सुपर चीफ मिनिस्टर कहे जाने वाले हिमंत बिस्वा सरमा इसके मुखिया हैं। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आने के बाद सरमा ने वर्ष 2016 और 2021 के लगातार दो विधानसभा चुनाव में असम से कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर दिया। इतना ही नहीं, पूरे नॉर्थ ईस्ट के राज्यों में कांग्रेस के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया। इस वजह से असम का यह विधानसभा चुनाव कांग्रेस खासकर गांधी परिवार के लिए व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को बचाने का चुनाव साबित होगा। यही कारण है कि राहुल गांधी ने दिग्गज नेताओं की फौज के साथ प्रियंका गांधी को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देकर चुनाव मैदान में उतार दिया। यदि हिमंत बिस्वा लगातार तीसरी बार भाजपा को जीत दिलाने में कामयाब होते हैं तो वे भी भाजपा के प्रधानमंत्री के संभावित दावेदारों की सूची में शामिल हो सकते हैं। लेकिन इसके उलट परिणाम आते हैं तो नॉर्थ ईस्ट के अन्य राज्यों में कांग्रेस के लिए अच्छे दिनों की वापसी हो जाएगी और राष्ट्रीय स्तर पर राहुल गांधी की स्वीकार्यता बढ़ जाएगी। हालांकि हिमंत बिस्वा ने कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भूपेन बोरा को भाजपा में शामिल कर कांग्रेस को एक और बड़ा झटका दिया। राहुल के करीबी गौरव गोगोई के राजनीतिक भविष्य का फैसला भी काफी हद तक इस चुनाव में हो जाएगा।

केरल : कांग्रेस और लेफ्ट फ्रंट के लिए चुनाव अंतिम युद्ध जैसा

असम की तरह केरल में भी कांग्रेस पिछले 10 साल से राज्य की सत्ता से बाहर है। एक बार लेफ्ट फ्रंट (एलडीएफ) और एक बार कांग्रेस फ्रंट वाली (यूडीएफ) सरकार का रिवाज वर्ष 2021 में जनता ने बदल दिया। इसके कारण लेफ्ट दलों ने लगातार दूसरी बार राज्य में सरकार बनाकर नया इतिहास रच दिया। केरल लेफ्ट दलों का आखिरी दुर्ग है, जिसे नहीं बचा पाए तो आने वाले दिनों में यह दल सिर्फ इतिहास और एकेडमिक बहसों का हिस्सा मात्र बनकर रह जाएगा। वहीं कांग्रेस लगातार तीसरी चुनाव हार गई तो यहां भाजपा के नेतृत्व में नया गठबंधन मजबूती से उभर जाएगा। केरल की हार कांग्रेस को दिल्ली की सत्ता से और दूर कर देगी।

पश्चिम बंगाल : ममता और मोदी-शाह के बीच करो या मरो का मुकाबला

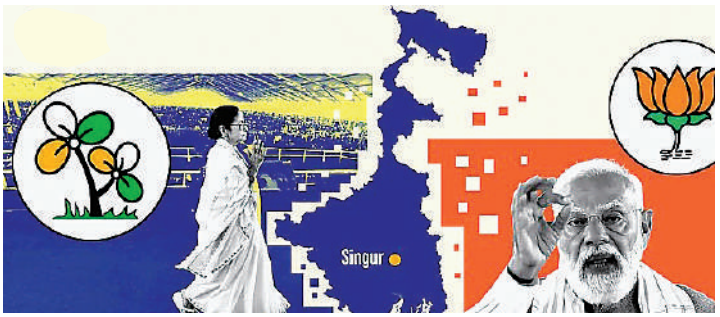

पश्चिम बंगाल में क्षेत्रीय दल तृणमूल कांग्रेस और उसकी मुखिया ममता बनर्जी की प्रतिष्ठा दांव पर है तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह के लिए इस बार का चुनाव नॉकआउट मुकाबले की तरह व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का होगा। वर्ष 2011 से लगातार बंगाल की सत्ता में बनी हुई ममता बनर्जी लगातार चौथी बार सरकार बनाने के लिए मैदान में डटी हैं। वहीं पिछले विधानसभा चुनाव में तीन सीटों से बढ़कर सीधे 77 सीटों पर पहुंचने वाली भाजपा को अच्छे से पता है कि इस बार की हार बंगाल में उनकी पार्टी और संगठन को बुरी तरह से तहस-नहस कर देगी। भाजपा के लिए यह चुनाव विकसित भारत-2047 के मिशन को बूस्टर डोज देने जैसा होगा। हालांकि बंगाल में भाजपा की जीत की राह उसके मुख्यमंत्री पद के दावेदार पर काफी निर्भर करेगी। ममता को हराने के लिए राज्य की जनता को स्वीकार्य विश्वसनीय चेहरा और मजबूत संगठन दोनों चाहिए। राज्य का बड़ा अल्पसंख्यक वोट बैंक तृणमूल कांग्रेस की सबसे बड़ी चुनावी ताकत है। वहीं भाजपा के लिए इस बार भी हिंदू मतदाताओं को अपने पक्ष में गोलबंद करना सबसे बड़ी चुनौती होगी। पिछली बार मिलकर लड़े कांग्रेस और वाम मोर्चा इस बार अलग-अलग चुनाव मैदान में उतरेंगे। उनकी सीमित चुनावी भूमिका में यह देखना दिलचस्प रहेगा कि वे तृणमूल के अल्पसंख्यक वोट बैंक में सेंध लगाते हैं या सत्ता विरोधी मतदाताओं में हिस्सा बांटकर भाजपा को नुकसान पहुंचाते हैं।

तमिलनाडु : भाजपा और कांग्रेस दोनों इस चुनाव के साइड हीरो

तमिलनाडु का चुनाव क्षेत्रीय दलों सत्तारूढ़ पार्टी डीएमके और विपक्षी एआईएडीएमके के भविष्य और वजूद बचाने के लिए महत्वपूर्ण होगा। कांग्रेस और भाजपा दोनों इस राज्य में हीरो के दोस्त यानी साइड हीरो की भूमिका में हैं। यहां दोनों क्षेत्रीय दलों में से जिसको भी सत्ता मिलेगी, वह पूरी हिस्सेदारी के साथ केन्द्र में अपने गठबंधन को मजबूत बनाएगा। देखा जाए तो तमिलनाडु की राजनीति द्रमुक और अनादमुक के बीच दो ध्रुवीय रही। लेकिन जयललिता के निधन के बाद यह संतुलन गड़बड़ा गया। अन्नाद्रमुक के एकीकरण और उससे गठबंधन के जरिए भाजपा वहां सत्ता परिवर्तन की संभावनाएं तलाश रही हैं, लेकिन एमके स्टालिन सरकार के कार्यकाल में सनातन धर्म और हिंदी भाषा को लेकर उठते विवादों के बावजूद यह आसान नहीं लगता। इनके बीच टीवीके दल बनाकर फिल्म अभिनेता से राजनेता बने थलापति विजय यदि बड़ी ताकत बनकर उभरे तो तमाम समीकरण गड़बड़ा सकते हैं। अन्य क्षत्रपों की तरह एमके स्टालिन भी अपने बेटे उदयनिधि की ताजपोशी करना चाहते हैं, लेकिन उनकी राष्ट्रीय राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिला।

पुडुचेरी : भाजपा के पास खोने को कुछ नहीं

केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी में इस चुनाव में सत्तारूढ़ गठबंधन ऑल इंडिया एनआर कांग्रेस, भाजपा और अन्नाद्रमुक गठबंधन के सामने सरकार बचाना बड़ी चुनौती होगी। यहां की सत्ता तमिलनाडु की तर्ज पर चलती है और वहां की सियासत का असर भी यहां दिखता है। पुडुचेरी के मुख्यमंत्री और ऑल इंडिया एनआर कांग्रेस के नेता एन. रंगासामी इस चुनाव में पुडुचेरी को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने का सियासी दांव चल सकते हैं। साल 2021 के चुनाव में ऑल इंडिया एनआर कांग्रेस 16, भाजपा 9 और अन्नाद्रमुक 5 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। इसमें ऑल इंडिया एनआर कांग्रेस ने 10 और भाजपा ने 6 सीटों पर जीत दर्ज की थी। वहीं अन्नाद्रमुक एक भी सीट नहीं जीत पाई थी। पुडुचेरी की 30 सीटों पर इस बार अभिनेता विजय की पार्टी टीवीके (तमिलागा वेट्री कझगम) के उतरने से मुकाबला और रोचक हो गया। उनकी स्टारडम की छवि चुनाव में चली तो वे सरकार बनाने के दावेदारों में किंगमेकर के रूप में जुड़ जाएंगे। पुडुचेरी में अक्सर त्रिशंकु विधानसभा या गठबंधन सरकारें बनती हैं। ऐसे में छोटे दलों और निर्दलीय विधायकों का महत्व इस बार भी बढ़ेगा। लेकिन अंतिम समीकरण बनाने में राष्ट्रीय नेतृत्व की भूमिका अहम होगी। क्योंकि पुडुचेरी में उप राज्यपाल का अंतिम अधिकार होने से चुनी हुई सरकार खुद को सीमित महसूस करती है। इससे यह धारणा बनती है कि जनता की चुनी गई सरकार पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है।

रसोई गैस व पेट्रोल-डीजल का संकट बढ़ा तो नतीजों पर असर

पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध के कारण भारत में रसोई गैस से लेकर पेट्रोल-डीजल की आपूर्ति बाधित हुई है। रसोई गैस के साथ पावर पेट्रोल के दाम बढ़ने और सिलेंडरों की किल्लत ने आमजन की जिन्दगी को हिलाकर रख दिया। जंग ने अचानक से महंगाई को भी बढ़ा दिया। विपक्ष को जहां इस जंग से बैठे-बिठाए केन्द्र सरकार को घेरने का मुद्दा मिल गया तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी लोकसभा में स्वीकार किया कि युद्ध के कारण कठिन हालात लंबे समय तक बने रह सकते हैं। इसके लिए उन्होंने देश की जनता से एकजुट रहने की अपील की। प्रधानमंत्री के बयान से साफ दिखा कि आगे समय विकट रह सकता है और इसके बीच अप्रैल में मतदान होना है। बंगाल में तो अप्रैल के आखिरी दिनों में वोटिंग है। तब तक जंग का परिदृश्य और बिगड़ा तो चुनाव के परिणाम प्रभावित हो सकते हैं।

युद्ध से जुड़ा दूसरा बड़ा मसला उर्वरकों का भी है। भारत जितना फर्टिलाइजर आयात करता है उसका 26.2 प्रतिशत हिस्सा पश्चिम एशिया से आता है। वित्त मंत्रालय ने भी इस पर चिंता जताई कि युद्ध लंबा चलने पर एलएनजी और क्रूड पर निर्भर फर्टिलाइजर और पेट्रोकेमिकल्स जैसे क्षेत्रों पर बुरा असर पड़ सकता है। खरीफ सीजन से पहले केरल, पश्चिम बंगाल और असम के लिए यह मामला और संवेदनशील बन सकता है।

भरोसे और विवादों के बीच एसआईआर की परीक्षा

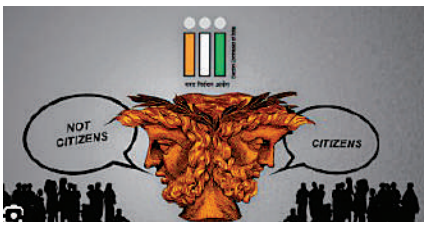

देश में मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन (एसआईआर) को लेकर उठे विवाद के बीच भाजपा और जेडीयू ने बिहार में सबसे बड़ी जीत दर्ज की। इसके बाद विपक्ष को भी इस मुद्दे पर मुंह की खाली पड़ी। इसके बावजूद इन विधानसभा चुनावों में एसआईआर का मुद्दा सभी गैर भाजपा शासित राज्यों में गर्म रह सकता है। खासकर बंगाल में तो इसे तृणमूल कांग्रेस की ओर से विशेष रूप से उभारा जाएगा। इसके जवाब में भाजपा यहां घुसपैठियों के मुद्दे को जोर-शोर से उठाएगी, लेकिन यह समय बताएगा कि वह वांछित सफलता हासिल कर पाएगी या नहीं? यदि इस चुनाव में भी भाजपा एसआईआर की चुनौती को पार पाने में सफल रहती है तो उसके अश्वमेघ घोड़े को कोई रोक नहीं पाएगा।

बिहार की सत्ता में नेतृत्व परिवर्तन की आहट, भाजपा की अब पांच राज्यों पर नजर

बिहार में नीतीश के बाद कौन!

नीतीश कुमार के राज्यसभा जाने के साथ बिहार की राजनीति नए मोड़ पर खड़ी है। लंबे समय तक सत्ता की धुरी रहे नेतृत्व के हटने से अब सबसे बड़ा सवाल उत्तराधिकारी का है। भाजपा के भीतर कई दावेदार उभर रहे हैं, जबकि जदयू की भूमिका सीमित होती दिख रही है।

राधा रमण वरिष्ठ पत्रकार

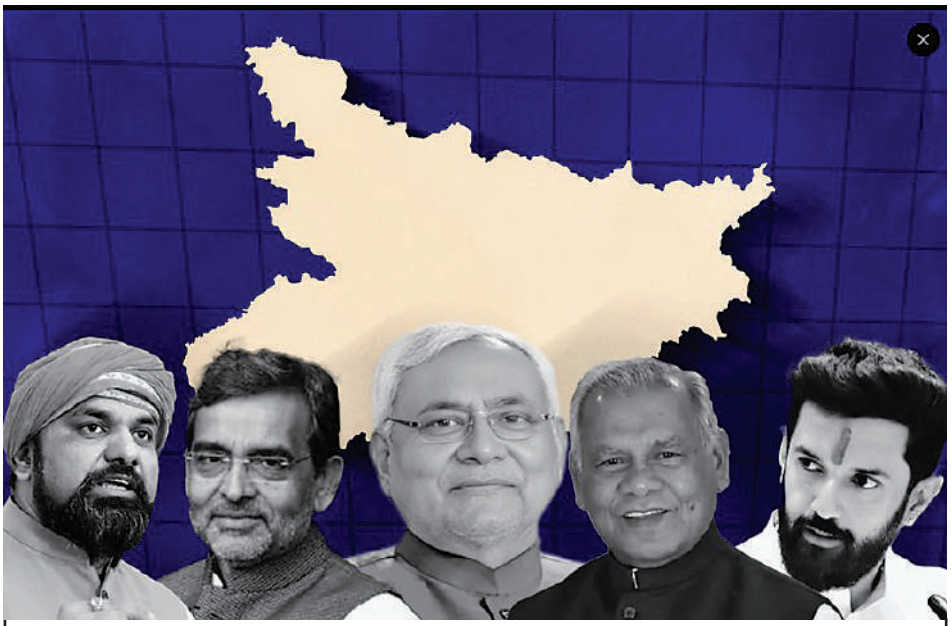

लगभग साढ़े 19 वर्षों तक बिहार की सत्ता की धुरी रहे नीतीश कुमार अब राज्यसभा सदस्य बनकर केंद्र की राजनीति में चले गए हैं। इसी के साथ यह तय हो गया है कि अब बिहार की बागडोर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के हाथों में रहेगी। ऐसा इसलिए कि बिहार विधानसभा में भाजपा ही 2020 से बड़े भाई की भूमिका में है। 2020 के विधानसभा चुनाव में नीतीश की जदयू तीसरे नंबर की पार्टी थी। 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा में उसके महज 43 विधायक थे, लेकिन तब विपक्ष मजबूत था। इसलिए नीतीश अपनी सुविधा के अनुसार महागठबंधन के साथ मिलकर पाला बदल लिए थे। अब विपक्ष खुद ही औंधेमुंह गिरा पड़ा है। इसलिए इसकी गुंजाइश नहीं है। नीतीश के लिए भी आगे कुआं, पीछे खाई की स्थिति है। अगर फिर भी जोड़तोड़ में जुटे तो पार्टी टूटने का खतरा है। भाजपा ने उनके इर्दगिर्द जमकर घेराबंदी कर दी है। राजनीतिक गलियारों में पूछा जा रहा है कि नीतीश की विदाई में किसका हाथ है!

नीतीश अपनी पार्टी जनता दल (यूनाईटेड) के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। वह जब चाहते राज्यसभा जा सकते थे, क्योंकि विधानसभा में जदयू के 85 विधायक हैं। 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा में राज्यसभा की एक सीट के लिए 41 विधायकों का वोट जरूरी होता है। ऐसे में जदयू अपने कोटे से हर दो साल बाद होने वाले राज्यसभा चुनाव में दो सदस्यों को राज्यसभा भेजने की क्षमता रखती है। फिर, नीतीश अभी राज्यसभा में क्यों चले गए? क्या उन पर कोई दबाव था या पार्टी में टूट की आशंका थी? क्या एनडीए में भाजपा ने उनकी कसकर घेराबंदी कर दी थी? क्या बिहार के शासन पर नीतीश का कोई नियंत्रण नहीं रह गया था? क्या पिछले साल चुनाव के दौरान नीतीश द्वारा की गई घोषणाएं अब उनके गले की घंटी बन गई थीं? ये तमाम सवाल राजनीतिक गलियारे में घूम रहे हैं। लेकिन इसका जवाब एकमात्र नीतीश के पास है और वह इस पर कोई बात करना नहीं चाहते।

वैसे भी, नीतीश कुमार ने जबसे राज्यसभा सांसद संजय झा को पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया है, तभी से राजनीतिक गलियारे में जदयू के भाजपा की बी टीम बनने के कयास लगाए जाते रहे हैं। इसके ठोस कारण भी हैं। संजय भाजपा की पृष्ठभूमि से आते हैं। जदयू में आने से पहले वह बिहार विधान परिषद में भाजपा के सदस्य रह चुके हैं। जानकार तो यहां तक कहते हैं कि संजय की ताजपोशी ही केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के कहने पर हुई थी। यह तो जगजाहिर है कि जब-जब नीतीश की महागठबंधन के नेताओं से बात बिगड़ी तब-तब संजय ही एनडीए से मिलाने में मददगार बने। संजय के अलावा केन्द्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह से भी जदयू के कुछ कार्यकर्ता नाराज बताए जाते हैं। उनका मानना है कि ललन ने भी नीतीश की पीठ में चाकू घोंपा है। ललन सिंह और नीतीश कुमार के बीच पहले भी मतभेद होते रहे हैं। वर्षों पहले, राज्यसभा सदस्य नहीं बनाने पर एक समय तो ललन नीतीश को 'कृपा कुमार' तक कहने लगे थे। लेकिन पता नहीं दोनों की मजबूरी क्या रही कि दोनों नेता एक-दूसरे से ज्यादा दिन तक अलग भी नहीं रह पाते हैं। जदयू कार्यकर्ताओं का गुस्सा राज्य सरकार में मंत्री और नीतीश के हनुमान कहे जाने वाले विजय चौधरी को लेकर भी है। बताया जाता है कि अमित शाह ने विजय चौधरी के माध्यम से ही नीतीश कुमार को सम्मानजनक विदाई के लिए राज्यसभा जाने की सलाह दी थी। ज्ञात रहे कि भाजपा वर्षों से नीतीश को दरकिनार करने की जुगत में थी।

पहले भी चौंकाते रहे हैं नीतीश

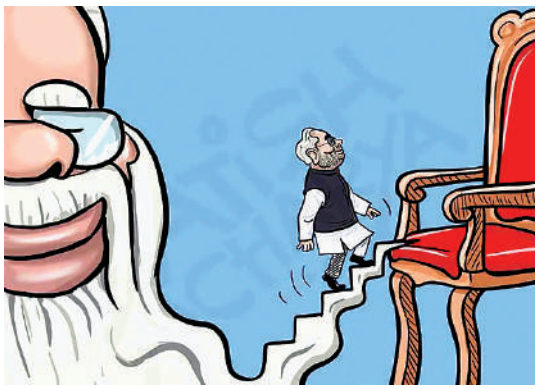

कहना गलत नहीं होगा कि समाज को चौंकाते रहना समाजवादियों का शगल रहा है। नीतीश कुमार भी समाजवादी विचारधारा से ही आते हैं। ऐसा भी नहीं है कि नीतीश ने पहली बार चौंकाया है। वह पहले भी चौंकाते रहे हैं। कभी अपने धुर विरोधी लालूप्रसाद यादव के महागठबंधन से हाथ मिलाकर सत्ता सुख भोगने के लिए, तो कभी भाजपा और एनडीए के साथ गठबंधन करके। अपने इसी हुनर के कारण नीतीश करीब साढ़े 19 वर्षों से बिहार की सत्ता पर काबिज रहे। इसीलिए विरोधी उन्हें कुर्सी कुमार भी कहते रहे हैं। लेकिन, इन सबके बीच यह कहना गलत नहीं होगा कि नीतीश कुमार की स्वीकार्यता पक्ष-विपक्ष दोनों में तीन दशक से बनी हुई है। सही मायनों में नीतीश पिछले दो दशकों से बिहार की सत्ता की धुरी रहे हैं।

फिलहाल, बिहार में सबकुछ ठीक चल रहा था। 2025 में हुए विधानसभा चुनाव में एनडीए को उम्मीद से अधिक वोट और सीटें मिली थीं। कुल 243 सदस्यीय विधानसभा में एनडीए को 202 सीटें मिली थीं। नीतीश कुमार ने 20 नवंबर को 10वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। लेकिन अचानक होली के दूसरे दिन नीतीश ने ट्वीट कर पक्ष-विपक्ष समेत बिहार के आम अवाम को चौंका दिया। अपने ट्वीट में नीतीश ने लिखा, 'दो दशक से अधिक समय से आपने मेरे साथ लगातार विश्वास और समर्थन बनाए रखा। इसकी ही ताकत थी कि बिहार आज विकास और सम्मान का नया आयाम प्रस्तुत कर रहा है। संसदीय जीवन शुरू करने के समय से ही इच्छा थी कि बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों के साथ संसद के दोनों सदनों का भी सदस्य बनूं। इसी क्रम में राज्यसभा सदस्य बनना चाह रहा हूं। बिहार की नई सरकार को मेरा पूरा समर्थन रहेगा।' और फिर तीन घंटे के भीतर उन्होंने केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में राज्यसभा के लिए पर्चा दाखिल कर दिया।

नीतीश का विकल्प बनना निशांत के लिए कठिन

बहरहाल, नीतीश अब राज्यसभा के लिए विधिवत निर्वाचित हो गए हैं। इसलिए उनका मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना तय है। उनके बिहार छोड़कर जाने से आक्रोशित जदयू कार्यकर्ताओं का गुस्सा भी अब शांत हो गया है। उनके आंसू सूख चुके हैं। और तो और, नीतीश भी शायद इसे नियति का खेल समझकर राज्यभर में समृद्धि यात्रा पर निकल गए हैं। बेटे निशांत को भी जदयू की सदस्यता दिला दी गई है, लेकिन क्या निशांत नीतीश का विकल्प बन सकेंगे! संदेह है।

हतप्रभ विपक्ष की उम्मीदों पर ओले

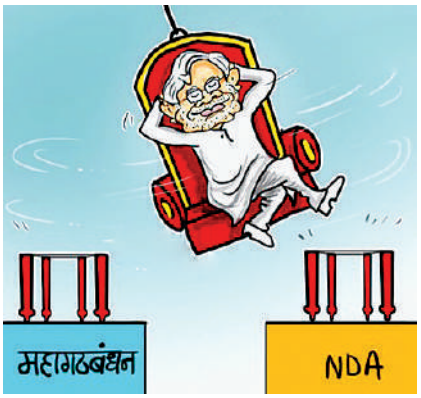

उधर, नीतीश की इस चाल से विपक्ष की बोलती बंद हो गई। उनकी रही-सही उम्मीदों पर ओले गिर गए। विपक्ष के नेता भले ही नीतीश कुमार को कुछ वर्षों से 'पलटूराम' कहा करते थे, लेकिन उनके मन में हमेशा यह बात रहती थी कि नीतीश कभी न कभी भाजपा के दबाव से ऊबकर उनके साथ आ सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो पिछले विधानसभा चुनाव में मतदाताओं ने महागठबंधन को इतनी सीटें नहीं दी, जिससे नीतीश उनके साथ कोई जोड़तोड़ कर पाते। महागठबंधन के सबसे बड़े दल राष्ट्रीय जनता दल को महज 25 सीटें मिली हैं। मुश्किल से तेजस्वी को नेता प्रतिपक्ष का दर्जा मिला है। कांग्रेस और कमजोर हुई है।

आखिर भाजपा को मौका मिल ही गया

हां, नीतीश के इस कदम से भाजपा की बाछें खिल गई है। बिहार में पहली बार उसे सरकार बनाने का मौका मिल रहा है। पिछले 21 वर्षों से भाजपा नीतीश की पिछलग्गू बनी हुई थी। नीतीश महागठबंधन के पाले में जाते थे तो उसे विपक्ष में बैठना पड़ता था। बीच के वर्षों में दो बार ऐसा हो चुका है। अब पहली बार उसे खुलकर खेलने का मौका मिलेगा। इसके अलावा नीतीश के शासनकाल की चुनावी घोषणाओं को पूरा करने की उसकी जवाबदेही भी नहीं रहेगी। साढ़े चार साल तक उसका निष्कंटक राज चलेगा। गठबंधन में शामिल जदयू के नेता समय के साथ या तो भाजपा में चले जाएंगे अथवा खंड-खंड हो जाएंगे। भाजपा का यही इतिहास रहा है। यकीन न हो तो इंडियन नेशनल लोकदल, अकाली दल, शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस आदि का इतिहास देख लें। पता चल जाएगा।

जानकार दावा तो यह भी करते हैं कि भाजपा अपनी मुहिम में काफी पहले से लगी थी। 2020 के विधानसभा चुनाव में लोगों ने बखूबी देखा कि किसके इशारे पर चिराग की लोजपा ने भाजपा के टिकट से वंचित नेताओं को अपने बैनर तले जदयू उम्मीदवारों के खिलाफ मैदान में उतार दिया था। नतीजतन, जदयू 43 सीटों पर सिमट गई थी। 2025 चुनाव के दौरान टिकट बंटवारे में भाजपा ने जदयू की सीटिंग सीटें भी लोजपा को दे दी थी। जदयू की ओर से सीटों की बातचीत कर रहे पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा और मंत्री राजीव रंजन सिंह ऊर्फ ललन सिंह तो मान भी गए थे। लेकिन समय रहते नीतीश सचेत हो गए और उन्होंने करीब आधा दर्जन सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए थे। वे जीतकर आ भी गए। तब भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले अमित शाह मन मसोस कर रह गए थे। यही नहीं विधानसभा चुनाव के दौरान भी एक टीवी इंटरव्यू में अमित शाह ने साफ कहा था कि मुख्यमंत्री का फैसला विधायक करेंगे। हालांकि नुकसान होता देख भाजपा नेताओं को चुनाव के बीच नीतीश के नाम पर मुहर लगानी पड़ी थी।

सवाल उठता है कि नीतीश के बाद बिहार की सत्ता किसके हाथों में होगी? भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री पद के लिए उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय सिन्हा, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय, विधायक संजीव चौरसिया, मंत्री श्रेयसी सिंह, पूर्व उप मुख्यमंत्री तारकेश्वर प्रसाद समेत कई नाम चर्चा में हैं। लेकिन जानकार सूत्र सम्राट चौधरी को दौड़ में सबसे आगे बता रहे हैं। इसका कारण यह कि सम्राट के पिता शकुनि चौधरी, नीतीश कुमार के साथ समता पार्टी के संस्थापकों में शामिल थे। शकुनि की सलाह पर ही नीतीश ने 'लव-कुश' (कुर्मी-कुशवाहा) समीकरण बनाया था। इसमें 'लव' की तरफदारी नीतीश तो 'कुश' की शकुनि किया करते थे। यही कारण है कि नीतीश अपनी समृद्धि यात्रा में सम्राट को साथ लेकर घूम रहे हैं। साथ ही जनता को बता भी रहे हैं कि आगे के काम अब सम्राट करेंगे।

बीते दिनों हुए राज्यसभा के चुनाव में भी एनडीए की गोलबंदी और विपक्ष के वोट में सेंधमारी की कमान सम्राट चौधरी के हाथों में ही थी। यहां भी सम्राट कसौटी पर खरे उतरे। उन्होंने कांग्रेस के तीन और राष्ट्रीय जनता दल के एक विधायक को मतदान से अनुपस्थित कराकर एनडीए के सभी उम्मीदवारों की जीत आसान कर दी। लेकिन चौंकाने में भाजपा भी किसी से कम नहीं है। हरियाणा में मनोहरलाल खट्टर हों या नायबसिंह सैनी, मध्यप्रदेश के मोहन यादव हों, छत्तीसगढ़ के विष्णु देव साय हों, दिल्ली की रेखा गुप्ता हों या राजस्थान के भजनलाल शर्मा अथवा असम में हिमंता विश्वशर्मा स्काईलैब की तरह अचानक अपने राज्य की सियासत के सिरमौर बन गए और दिग्गज ताकते रह गए। अगर, बिहार में भी भाजपा वही चाल दोहरा दे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

बिहार की चाल से पांच राज्यों में बढ़त में भाजपा

बिहार में सरकार और राज्यसभा चुनावों में एनडीए की एकतरफा जीत से भाजपा को पांच राज्यों पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुद्दुचेरी के होने वाले चुनावों में बढ़त मिलने की संभावना है, क्योंकि उसके कार्यकर्ता उत्साह में हैं।

क्यों चूक गए नीतीश... नीतीश चाहते तो देश में सर्वाधिक दिन तक मुख्यमंत्री बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर सकते थे। लेकिन इस उपलब्धि से चूक क्यों गए? इसका जवाब तो नीतीश ही दे सकते हैं। फिलहाल, देश में सबसे अधिक दिनों 24 वर्ष 166 दिन मुख्यमंत्री रहने का रिकॉर्ड सिक्किम के पवन कुमार चामलिंग के नाम है। नवीन पटनायक (ओडिशा) 24 वर्ष 94 दिन, ज्योति बसु (पश्चिम बंगाल) 23 वर्ष 137 दिन, गेगोंग अपांग (अरुणाचल प्रदेश) 22 वर्ष 250 दिन, ललथनहवला (मिजोरम) 22 वर्ष 60 दिन, वीरभद्र सिंह (हिमाचल प्रदेश) 21 वर्ष 13 दिन, और माणिक सरकार (त्रिपुरा) 19 वर्ष 363 दिनों तक मुख्यमंत्री रहे। नीतीश का नंबर आठवें पायदान पर आता है।

सियासत के 'धुरंधर' निकले नीतीश बाबू

हरीश मलिक, व्यंग्यकार और स्तंभकार

आजकल तीन ही चीजें सुर्खियों में हैं। राजनीति में नीतीश बाबू, मनोरंजन में धुरंधर-2 का नकली युद्ध और दुनियाभर में शांति से क्रांति करने वाले डोनाल्ड डक का असली युद्ध। राजनीति की कुर्सी से नीतीश बाबू का रिश्ता वैसा ही है, जैसे बरसों पुरानी चारपाई से गांव के बुजुर्ग का होता है। चरमराती रहे, डगमगाती रहे, पर छोड़ने का नाम नहीं। अब उनने कुर्सी को साथ लेकर डिब्बा बदल लिया है। पहले वे राज्य नामक डिब्बे में रहे और अब राज्यसभा वाले में आ गए हैं। मनोरंजन में धुरंधर-2 का युद्ध है, जिसमें जितनी गोलियां हैं, उतना ही ज्यादा बैकग्राउंड म्यूजिक है। कई बार दर्शक कन्फ्यूजिया जाते हैं कि दुश्मन गोली से घायल हुआ है या फिर बैकग्राउंड म्यूजिक का कायल होकर बेसुध पड़ा है। उधर दुनिया के रंगमंच पर 'डोनाल्ड डक' शांति का नोबेल मांगते-मांगते असली युद्ध में कूद पड़े हैं। मानो कार्टून नेटवर्क से सीधे न्यूज चैनल में ट्रांसफर हो गए हों। राजनीति में पटकथा लग रही है, फिल्मों में रणनीति चल रही है और दुनिया की कूटनीति में कार्टून जैसा ट्विस्ट है। आम आदमी रिमोट हाथ में लिए बैठा सोच रहा है कि ये जो चल रहा है, वो खबर है, फिल्म है या किसी बड़े-से मजाक का लाइव टेलीकास्ट!

परिवारवाद नहीं, अनुभव का हस्तांतरण

पहले बात उन बिहारी बाबू की, जिनकी राजनीति बड़ी अद्भुत रही है। जैसे कोई तपस्वी सालों तक त्याग का प्रवचन दे और अंत में पता चले कि उसकी तपस्या दरअसल कुर्सी के चारों पायों के इर्द-गिर्द ही चल रही थी। दस बार शपथ लेकर उन्होंने लोकतंत्र को ऐसा घुमा दिया कि जनता को भी लगा कि शायद शपथ ही उनका असली काम है, शासन तो बीच-बीच में टाइम पास के लिए करते हैं।

सबसे मजेदार बात यह है कि जो नेता वर्षों तक परिवारवाद को लोकतंत्र की सबसे बड़ी बीमारी बताते रहे, वही अब इलाज के नाम पर अपने ही घर का पर्चा लिख रहे हैं। दरअसल, राजनीति में एक उम्र के बाद नेताजी को 'वंश परंपरा' का संस्कार याद आ ही जाता है। जैसे कोई व्यक्ति जीवन भर मिठाई को कोसता रहे और बुढ़ापे में हलवाई की दुकान खोल ले। अब देखना यह है कि यह नया 'परिवारिक प्रयोग' बिहार की जनता के लिए दवाई बनता है या फिर किसी बीमारी का नया पैकेज बनकर सामने आता है।

नीतीश का राजनीति से रिश्ता कुछ ऐसा रहा है जैसे पुराने जमाने का रेडियो हो। उसे बार-बार ट्यून करो, फिर भी वही आवाज आती रहती है। फर्क इतना कि यहां तरंगें बदलती रहीं, लेकिन स्टेशन "मुख्यमंत्री" ही बना रहा। अब उन्होंने खुद ही स्वेच्छा से सीएम कुर्सी छोड़ने का निर्णय लिया है, तो राजनीति के दर्शक दीर्घा में बैठे लोग चश्मा साफ करके देख रहे हैं कि कहीं चैनल बदल गया है या फिर वही पुराना कार्यक्रम नए एंकर के साथ आ रहा है? राजनीति में बड़ा सुंदर सिद्धांत है कि जिसकी सबसे ज्यादा आलोचना होती है, वही चीज सबसे उपयोगी निकल आती है। अब बेटा राजनीति में आएगा तो इसे 'परिवारवाद' नहीं, 'अनुभव का हस्तांतरण' कहा जाएगा। आखिर लोकतंत्र भी एक पारिवारिक उत्सव ही तो है, जहां कुर्सियां नहीं बदलतीं, बस बैठने वाले रिश्तेदार बदल जाते हैं!

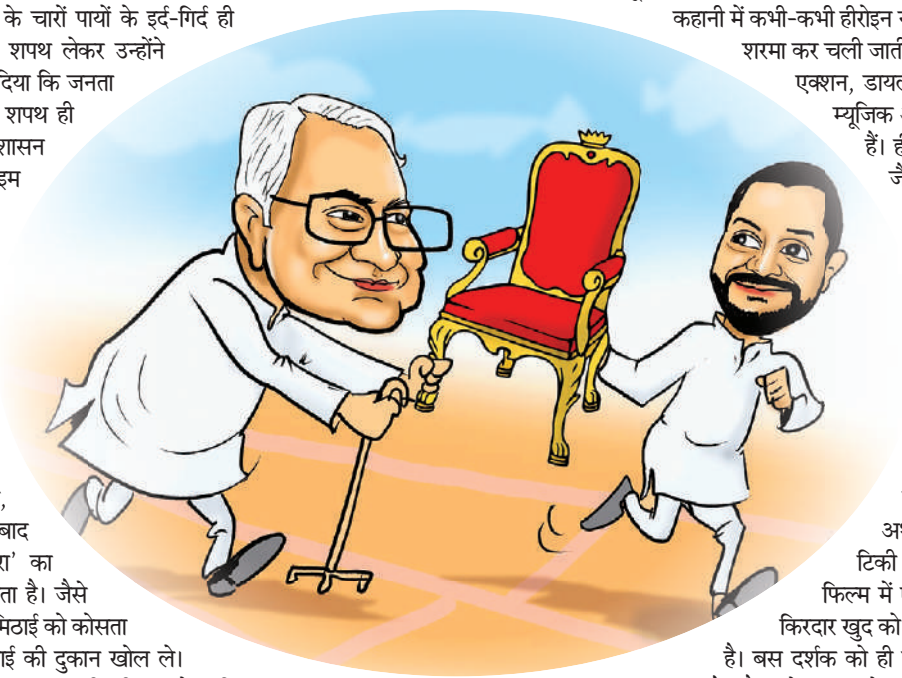

रिवेंज और रिवेन्यू साथ-साथ दौड़ रहे

'धुरंधर-2: द रिवेंज' देखकर लगता है कि यह एक ऐसी फिल्म है, जिसमें रिवेंज और रिवेन्यू साथ-साथ दौड़ रहे हैं। दोनों में आगे निकलने की रेस है। कहानी में कभी-कभी हीरोइन नाम की चिड़िया आती है, फिर शरमा कर चली जाती है। और उसकी जगह हिंसक एक्शन, डायलॉग, मारकाट और बैकग्राउंड म्यूजिक अपना-अपना स्टॉल लगा लेते हैं। हीरो हर सीन में ऐसा लगता है जैसे बदला लेने नहीं, रिकॉर्ड बनाने निकला हो। कभी-कभी हीरो का गुस्सा इतना पुराना लगता है जैसे अलमारी में रखा वो सूट, जो हर शादी में निकल आता है। फिट आए या न आए, पहनना तो उसी को है। और विलेन भाई तो इतनी गंभीर एक्टिंग में व्यस्त है, मानो देश की अर्थव्यवस्था उसी के कंधों पर टिकी हो।

फिल्म में एक खास बात यह है कि हर किरदार खुद को 'धुरंधर' साबित करने में लगा है। बस दर्शक को ही समझना बाकी है कि असली धुरंधर कौन है? जो बदला ले रहा है, या जो फिल्म बना रहा है? जो करोड़ों लगाकर अरबों कमा रहा है या वो जनता-जनार्दन धुरंधर है, जिसने पेड प्रिव्यू शो में ही ऐतिहासिक रिकॉर्ड बना दिया? असली धुरंधर एक्शन है या फिर सच्ची घटनाओं को फ्रेम दर फ्रेम जोड़ने वाली कहानी है? दर्शक भी सोचता है कि अगला सीन किसी सच्ची कहानी का होगा या फिर सिर्फ कमाई का।

धुरंधर की पहले ही दिन 100 करोड़ से ज्यादा की कमाई! इससे लगता है कि हमारे यहां फिल्में देखी नहीं जातीं, मनाई जाती हैं- जैसे त्योहार या पर्व हो। कोई कहानी पूछे तो कहेंगे, 'अरे छोड़िए, कलेक्शन देखिए!' अब सिनेमा का गणित राष्ट्रवाद से जुड़ गया है। जहां 2+2 चार नहीं, सीधे 100 करोड़ भी होते हैं। एक धुरंधर बॉक्स ऑफिस भी है, जिसने एक दिन में ही सबको समझा दिया कि बदला नहीं, 'कलेक्शन' ही सिनेमा का असली धर्म है। अब यह सिद्ध हो गया है कि समाज में तर्क की नहीं, टिकट खिड़की की जीत होती है। व्यंग्य पूरा बांच लिया ना। अब जाइए धुरंधर-2 देख ही आइए। वास्तव में पूरा पैसा वसूल मूवी है भइए!

राजस्थानः भाजपा चिंतित क्यों

उलझन में मोदी-शाह

भाजपा कार्यकर्ताओं को भी नहीं लग रहा कि यह 'उनकी सरकार' है। नौकरशाही के हावी होने के आरोप, विपक्ष की ऊंची आवाज, और दिल्ली-जयपुर के बीच होने वाली राजनीतिक हलचलों ने इस तस्वीर को और जटिल बना दिया है। या यूं कहें कि मोदी और शाह के लिए राजस्थान में भाजपा की राजनीति एक चुनौतीपूर्ण पहलू बन गई है।

सुरेश व्यास, वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

चुनौती बन गया प्रयोग... भाजपा कार्यकर्ताओं को भी नहीं लग रहा कि यह 'उनकी सरकार' है। नौकरशाही के हावी होने के आरोप, विपक्ष की ऊंची आवाज, और दिल्ली-जयपुर के बीच होने वाली राजनीतिक हलचलों ने इस तस्वीर को और जटिल बना दिया है। या यूं कहें कि मोदी और शाह के लिए राजस्थान में भाजपा की राजनीति एक चुनौतीपूर्ण पहलू बन गई है।

राजस्थान में भाजपा की सरकार आने के बाद पहली बार के विधायक भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बने ढाई साल होने जा रहे हैं, लेकिन यदि भाजपा के नेता और कार्यकर्ता ही यह कहने लगे हैं कि उन्हें लग ही नहीं रहा, प्रदेश में उनकी सरकार है, तो एक बड़ा सवाल खड़ा हो जाता है कि आखिर राजस्थान जैसे बड़े राज्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह का फैसला गलत साबित कैसे हो सकता है।

शायद यही कारण है कि राजस्थान में भाजपा की राजनीति मोदी-शाह के लिए एक गुत्थी बनकर रह गई है। मोदी-शाह और भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व की उलझन यह भी है कि ढाई साल होने को आए, लेकिन मुख्यमंत्री भजनलाल अभी तक खुद को राजनीतिक रूप से स्थापित नहीं कर पाए। हालांकि राजस्थान जैसा प्रयोग भाजपा ने मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ के बाद ओडिसा में भी किया, लेकिन वहां इस तरह की स्थिति नहीं है। कारण कि वहां मुख्यमंत्री बनाए गए नेताओं को कुछ न कुछ अनुभव था, लेकिन राजस्थान में साफ छवि का चेहरा देखकर लाए गए भजनलाल अनुभव की कमी के कारण ही अभी तक खुद को साबित करने के संघर्ष में ही उलझे हुए हैं।

दरअसल, भजनलाल शर्मा की ताजपोशी दिल्ली के नेतृत्व के समर्थन और संगठनात्मक कार्य के आधार पर हुई। मुख्यमंत्री पद की स्वाभाविक दावेदार माने जा रही दो बार की सीएम वसुंधरा राजे के हाथ से ही पर्ची खुलवा कर विधायक दल की बैठक में सबसे आखिरी कतार में खड़े नए नवेले विधायक भजनलाल को मुख्यमंत्री बना दिया गया। इसके बाद हालांकि सरकार ने कई अच्छे काम भी किए हैं, लेकिन मुख्यमंत्री की छवि अभी भी 'पर्ची वाले सीएम' के दायरे से बाहर नहीं आ पाई। इसने राज्य स्तर पर उनके लिए चुनौतियां पैदा कीं। भाजपा के कई वरिष्ठ नेता और विधायक अभी भी उनके साथ पूरी तरह से जुड़े नहीं हैं, जिससे भजनलाल की छवि 'कमजोर और अस्थिर' लगती है।

गड़बड़ा रहा है संतुलन

मोदी-शाह के लिए समस्या यह है कि वे चाहते हैं कि भाजपा की सरकार राज्य में मजबूत हो, लेकिन इसके लिए भजनलाल शर्मा को अधिक स्थानीय समर्थन और संगठनात्मक मजबूती की आवश्यकता है। वर्तमान स्थिति में यह संतुलन गड़बड़ रहा है, जिससे दिल्ली में अटकलें और चिंता बढ़ रही है। मोदी–शाह के लिए राजस्थान में भाजपा की राजनीति अब तक "साफ–सुथरा नियंत्रण" वाला बिंदु नहीं बन पाई है, क्योंकि भजनलाल शर्मा की सरकार नौकरशाही, अंदरूनी टकराव और विपक्ष के सक्रिय दबाव के बीच उलझी हुई है। भजनलाल खुद को भाजपा के भीतर और जनता के बीच भी "असली मुख्यमंत्री" साबित नहीं कर पा रहे और उनके लिए पार्टी संगठन, विधायक और नौकरशाही के बीच तालमेल अभी तक नहीं बन पाना सबसे बड़ी समस्या है।

वसुंधरा की मजबूत छवि

इधर, मुख्यमंत्री नहीं बनाए जाने से नाराज होकर वसुंधरा एक बार तो कोप भवन में चली गई थी और जब वे वापिस सक्रिय हुई तो राजनीतिक मंच ही नहीं, अन्य कार्यक्रमों में भी फर्क साफ नजर आने लग गया। वसुंधरा हालांकि भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रही हैं, लेकिन राजस्थान में वे जब भी, जहां भी जाती है तो उनका जलवा अलग ही नजर आता है और जब एक ही मंच पर भजनलाल और वसुंधरा साथ हो तो इस फर्क को साफ देखा जा सकता है। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राजस्थान दौरों के वक्त भी जब दोनों एक ही मंच पर दिखे तो सामने बैठी भीड़ में क्रेज वसुंधरा का ही दिखा। हाल ही प्रधानमंत्री मोदी की अजमेर यात्रा ताजा उदाहरण है। मोदी ने सम्बोधन की शुरुआत में जैसे ही वसुंधरा को बहन कहकर सम्बोधित किया, पूरा पांडाल हर्षध्वनि से गूंज उठा, लेकिन सीएम भजनलाल व अन्य नेताओं का नाम लिए जाते वक्त खामोशी ही छाई रही। इस घटना ने मोदी को हैरान-परेशान तो नहीं, लेकिन यह सोचने के लिए मजबूर तो कर ही दिया कि वसुंधरा ही राजस्थान में भाजपा की जनाधार वाली नेता हैं।

यहां तक कि पार्टी संगठन की बैठकों में भी वसुंधरा मैदान मार ले जाती है। पार्टी की संगठनात्मक कार्यशाला में वसुंधरा ने नौकरशाही पर कार्यकर्ताओं की बात नहीं सुनने पर जिस लहजे में बात रखी, वह पार्टी के कार्यकर्ता आज भी याद करते हैं। कुल मिलाकर लोग सीधा साधी कम्पेरिजन कर लेते हैं। पार्टी के एक नेता ने कहा कि उन्हें तो आज भी लगता है कि भले ही मेडम सीएम की कुर्सी पर नहीं है, लेकिन उनका हावभाव आज भी मुख्यमंत्री से कम नहीं लगता।

दिक्कत कनेक्टीविटी की

▪ राजनीतिक समीक्षक राजेंद्र व्यास कहते हैं कि दिक्कत मुख्यमंत्री की अनुभवहीनता ही नहीं है। वे अभी तक खुद को अपने ही लोगों से पूरी तरह कनेक्ट नहीं कर पाए हैं। फिर वसुंधरा की सक्रियता उनका कद और छोटा कर देती है। भजनलाल अभी तक तो सभी को साथ लेकर चलने वाली क्षमता ही नहीं दिखा पाए हैं। वसुंधरा सफल मुख्यमंत्री रही, इसके पीछे साफ कारण था कि वे मतभेदों के बावजूद सभी को साथ लेकर चल सकती थी। किसी को आंख दिखा देती तो किसी को पुचकार कर काम निकाल लेती। उन्होंने अपनी ये खासियत चुनावों के दौरान और सरकार चलाने के दौरान साबित की थी।

▪ व्यास कहते हैं कि एक वक्त में भाजपा का राजस्थान में चेहरा भैरोंसिंह शेखावत ही रहे। उनके बाद वसुंधरा चेहरा बनी तो भाजपा को प्रदेश में पहली बार न सिर्फ बहुमत मिला, बल्कि भाजपा की राज्य में सर्वाधिक 163 सीटें लाने का रिकार्ड भी वसुंधरा के नाम ही है, जब उन्होंने कांग्रेस को 26 सीटों पर समेट दिया था। लोग तो ये सारी चीजें देखते हैं, लेकिन राजस्थान में मोदी-शाह से चूक हो गई। आज भी यह साफ है कि वसुंधरा के मुकाबले जनाधार वाला कोई और नेता राजस्थान भाजपा के पास नहीं है।

...और शुरू हो जाती है अटकलें

शायद यही कारण है कि राजस्थान में भाजपा के अंदर दिल्ली और जयपुर में होने वाली हलचलें हर बार अटकलों का बाजार गर्म कर देती हैं। भजनलाल औसतन हर महीने दिल्ली जाते हैं। कभी शाह से मिलते हैं तो कभी मोदी से। कुछ संयोग तो पिछले वर्ष ऐसे भी बने कि जैसे ही वसुंधरा मोदी से मिली, अगले ही दिन भजनलाल की भी प्रधानमंत्री से मुलाकात की तस्वीरें सामने आ गई। वसुंधरा भी कोई मौका नहीं छोड़ती और दिल्ली में उनकी हर मुलाकात राजस्थान में हलचल पैदा कर देती है। अनुभवी नेता वसुंधरा की गर्मजोशी भरी मुलाकातें यह संकेत देती हैं कि दिल्ली राजस्थान में एक बार फिर 'वसुंधरा-प्रभाव' पर दांव लगा सकता है, लेकिन साथ ही यह संकेत भी आने लगते हैं कि हाकम अपना हुकम इतना जल्दी नहीं बदलता, ऐसे में वसुंधरा के लिए अंगूर अभी खट्टे ही हैं। फिर भी सवाल उठता है कि क्या राजस्थान में स्थानीय नेतृत्व स्थापित नहीं हो पा रहा और हर बड़ा फैसला दिल्ली से आ रहा है। इससे भाजपा कार्यकर्ताओं को लगता है कि उनका योगदान और उनकी बात दूरी पर है।

सरकार दिल्ली से चल रही है...

▪ भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि हकीकत तो यही है कि केंद्रीय नेतृत्व या मोदी शाह- कहें, दिल्ली से सरकार चला रहे हैं। हर किसी को पता है कि अफसरों को सीधे दिल्ली से निर्देश मिलते हैं। यहां तक कि ट्रांसफर-पोस्टिंग के फैसले भी वहां से हरी झंडी मिलने पर ही हो पाते हैं। ऐसे में विधायकों और कार्यकर्ताओं में निराशा का भाव आना स्वाभाविक है।

▪ उनका कहना था कि विपक्ष के नेताओं का अनुभव भी सरकार पर भारी पड़ जाता है। वे सरकार को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ते और मंत्री और नौकरशाह हर बार कोई न कोई ऐसी गलती कर बैठते हैं कि विपक्ष को मुद्दा मिल जाता है। विपक्ष ने भजनलाल सरकार के खिलाफ भर्ती घोटाले, भ्रष्टाचार और नौकरशाही की हकीकत को सदन और सड़क पर लगातार उठाया है। विपक्ष हर बार इन मुद्दों को राजनीतिक रूप से इस्तेमाल करके भजनलाल सरकार को कमजोर और अक्षम सरकार के रूप में पेश करता है। यह बात जनता में स्थायी रूप से असर डाल रही है, जिससे भाजपा की छवि कमजोर हो रही है।

विपक्ष पूरी तरह हावी

▪ राज्य विधानसभा के हाल ही सम्पन्न हुए बजट सत्र में भी विपक्ष सरकार पर पूरी तरह हावी नजर आया। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली और कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा ही नहीं, विपक्ष के की विधायकों ने जैसे सरकार को पैरों पर खड़ा कर दिया। मंत्री सवालों का सही जवाब तक नहीं दे पाए तो आसन तक को हस्तक्षेप करना पड़ा। सरकार के लिए तो असहज स्थिति उस वक्त भी होती दिखी, जब विपक्ष ही नहीं, सत्ता पक्ष के विधायकों ने भी मंत्रियों की कार्यशैली पर सदन में सवाल खड़े कर दिए।

▪ कुल मिलाकर, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक साफ छवि वाले मुख्यमंत्री के रूप में काम तो किया है, लेकिन वे खुद को अभी तक स्थापित नहीं कर पाए हैं। यही मोदी-शाह भी चिंता है। जानकार कहते हैं कि यदि यही स्थिति रही तो भाजपा के लिए आने वाले चुनावों में मुश्किल भी हो सकती है। आखिर 2028 के चुनाव में वह किसके चेहरे और किस रिपोर्ट कार्ड के साथ जनता के बीच जाएगी। रिपोर्ट कार्ड के आंकड़े अपनी जगह होते हैं और जनता में बनने वाला नैरेटिव अपनी जगह काम करता है। यह बात भाजपा नेतृत्व के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है।

सिलेंडर की दौड़ और जुगाड़ का दौर

बलवंत राज मेहता, वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान में गैस की किल्लत ने ऐसा माहौल बना दिया है कि चूल्हे से ज्यादा दिमाग जल रहे हैं। खबर फैलते ही लोगों ने सिलेंडर ऐसे बुक करने शुरू किए जैसे कल से दुनिया बिना गैस के चलने वाली हो। नतीजा यह रहा कि जरूरत से ज्यादा खरीद की होड़ लग गई। बाजार ने भी मौके को भांप लिया। इलेक्ट्रिक कुकर, हीटर, इंडक्शन चूल्हे और तरह-तरह के वैकल्पिक उपकरण धड़ल्ले से बिकने लगे। दुकानदार मुस्कुरा रहे हैं और ग्राहक यह सोचकर खरीद रहे हैं कि क्या पता आगे क्या हो जाए। हालत यह है कि गैस की कमी से ज्यादा उसकी चर्चा का धुआं उठ रहा है। जिसने सिलेंडर पा लिया वह संतुष्ट है, जिसने नहीं पाया वह बाजार में नया जुगाड़ ढूंढ रहा है। कुल मिलाकर संकट से ज्यादा घबराहट काम कर रही है और बाजार उसी घबराहट पर सबसे ज्यादा गर्म है।

उड़ान में कचौरी

कोटा में एयरपोर्ट बनने की खबर आई तो शहर के कुछ लोगों ने विकास की बात सोची, पर असली मुस्कान तो कचौरी वालों के चेहरे पर आई। अब तक कोटा की कचौरी बस बसों और ट्रेनों में सफर करती थी, पर अब लगता है उसका भी बोर्डिंग पास बनने वाला है। कल्पना कीजिए, दिल्ली में किसी साहब को अचानक कोटा की कचौरी की तलब लगी। मोबाइल घुमाया, ऑर्डर दिया, और दो घंटे बाद फ्लाइट से गरमागरम कचौरी हाजिर! एयर होस्टेस भी शायद पूछ बैठे सर, चाय के साथ कचौरी लेंगे या सिर्फ समोसा? कहते हैं हर शहर की पहचान उसके स्वाद से होती है। जोधपुर का मिर्ची बड़ा, अजमेर की कढ़ी कचौरी और कोटा की कचौरी। इनका भी अब हवाई सफर तय लगता है। वैसे एयरपोर्ट का फायदा यात्रियों को कितना होगा, यह बाद की बात है; पर इतना तय है कि अगर उड़ानें ठीक रहीं तो देश के आसमान में जल्द ही कचौरी एक्सप्रेस भी उड़ती दिखाई दे सकती है।

सैंपल का साइड इफेक्ट

बारां में मिलावट की जांच करने पहुंचे एक फूड इंस्पेक्टर शायद यह भूल गए थे कि हमारे यहां कई बार सैंपल लेने से पहले सिस्टम का तापमान भी नाप लेना चाहिए। उन्होंने नियम के अनुसार पुड़ी सेंटर से नमूना लिया, लेकिन कुछ ही देर में उन्हें कार्यमुक्ति का पत्र थमा दिया गया। अब शहर में चर्चा यह नहीं है कि पुड़ी में मिलावट थी या नहीं, बल्कि यह है कि कार्रवाई में मिलावट कैसे हो गई। जनता सोच रही है कि अगर सैंपल लेने का यही परिणाम है, तो अगली बार अधिकारी शायद पुड़ी खाकर ही संतोष कर लें। उधर सफाई यह दी गई कि यह सब रूटीन प्रक्रिया है। हमारे यहां रूटीन भी बड़ा दिलचस्प होता है। कभी फाइल चलती है, कभी अधिकारी। खैर, मिलावट के खिलाफ लड़ाई जारी है। फर्क सिर्फ इतना है कि कभी नमूने लिए जाते हैं, और कभी नमूने बना दिए जाते हैं।

प्रगति का प्रतिवेदन

राजस्थान के शिक्षा विभाग में इन दिनों एपीआर यानी वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन या वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट का खास जलवा है। शिक्षक हर साल नियम से यह रिपोर्ट जमा करते रहे, लेकिन विभाग को प्रगति का हिसाब तभी याद आया जब पदोन्नति की घड़ी नजदीक आई और वह भी एक साथ पूरे 11 साल का। बोर्ड परीक्षा में ड्यूटी निभा रहे राजस्थान के शिक्षक अब असमंजस में हैं कि पहले विद्यार्थियों की कॉपियां जांचें या अपने ही वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन का इतिहास खंगालें। लगता है विभाग को पूरा भरोसा है कि हर शिक्षक के पास घर में एक छोटा-सा अभिलेखागार और साथ में कोई जादुई छड़ी भी होगी। विडंबना यह है कि जिन कार्यालयों में वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के लाल बस्ते सालों से धूल खाते पड़े हैं, वहीं से वही रिपोर्ट फिर से मांगी जा रही है। ऐसे में सवाल यह नहीं कि शिक्षकों की प्रगति क्या है, बल्कि यह है कि राजस्थान के शिक्षा विभाग की स्मृति और व्यवस्था की प्रगति आखिर किस दिशा में हो रही है।

पाइप में गैस नहीं, फाइलों में हवा

बालोतरा में प्राकृतिक गैस की पाइप लाइनें बिछ चुकी हैं, लेकिन उनमें गैस नहीं, इंतजार बह रहा है। डेढ़ साल से पाइप जमीन में ऐसे पड़े हैं जैसे किसी ने भविष्य की रसोई के सपने दफना दिए हों। कुछ घरों में चूल्हा जल उठा है, पर जिला मुख्यालय की पाइपें अभी सरकारी फाइलों की आंच पर ही पक रही हैं। मामला बड़ा रोचक है। कंपनी कहती है कि एनओसी अटकी है, अधिकारी कहते हैं कि उन्हें जानकारी नहीं, और बैंक कहता है कि हमने तो मेल भेज दिया। यानी गैस की पाइप लाइन से ज्यादा लंबी संवाद की लाइन चल रही है। उधर पाइप धीरे-धीरे जंग खा रहे हैं, मानो पूछ रहे हों हमारे भीतर गैस कब आएगी या हम सिर्फ सरकारी योजनाओं की स्मारक बनकर रह जाएंगे? कहते हैं प्राकृतिक गैस स्वच्छ ईंधन है, पर यहां तो पूरी प्रक्रिया ही इतनी धुंधली है कि आम आदमी को सिर्फ धुआं ही नजर आ रहा है। फिलहाल बालोतरा में गैस नहीं, फाइलों की हवा ही चूल्हे तक पहुंच रही है।

"सपनों को पंख देने वाला

एक नाम, जो

समाज में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनका जीवन केवल
बन जाता है। तनसिंह चौहान का जीवन भी ऐसा ही था। वे उन
दिया, बल्कि उन्हें अपनी ताकत में बदल दिया। उनका जीव
मेहनत की भावना हो, तो वह किसी

संघर्षपूर्ण बचपन : अभावों में ढला व्यक्तित्व

15 अप्रैल 1963 को बाड़मेर जिले के छोटे से गांव जूना में जन्मे तनसिंह चौहान का बचपन अत्यंत कठिन परिस्थितियों में बीता। बहुत कम उम्र में ही उन्होंने अपनी माता को खो दिया, जिससे उनके जीवन में भावनात्मक शून्यता आ गई। उनका पालन-पोषण नानी के स्नेह में हुआ, लेकिन आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिल सका।

जहां अन्य बच्चे स्कूल जाते थे और खेलते थे, वहीं तनसिंह का बचपन जिम्मेदारियों के बोझ तले बीता। इन परिस्थितियों ने उन्हें समय से पहले ही परिपक्व बना दिया। उन्होंने जीवन की कठिनाइयों को नकारात्मक रूप में नहीं लिया, बल्कि उन्हें अपने आत्मबल को मजबूत करने का साधन बनाया।

संघर्ष से सफलता तक : श्रम ही बना साधन

कम उम्र में ही उन्होंने आटा चक्की पर काम करना शुरू कर दिया, जहां उन्हें महीने के मात्र पचास रुपये मिलते थे। यह कार्य उनके जीवन का पहला चरण था, जिसने उन्हें श्रम का महत्व सिखाया। उन्होंने हर कार्य को सीखने का माध्यम माना और अपने अनुभव को निरंतर बढ़ाते गए।

धीरे-धीरे उन्होंने विभिन्न कार्यों में दक्षता प्राप्त की—कभी मशीन चलाना, कभी ड्राइविंग करना, और अंततः ठेकेदारी के क्षेत्र में प्रवेश करना। यह यात्रा आसान नहीं थी, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उनका आत्मविश्वास और मेहनत उन्हें निरंतर आगे बढ़ाते रहे।

यह स्पष्ट करता है कि सफलता किसी एक दिन का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह निरंतर प्रयास और धैर्य का फल होती है।

स्वावलंबन की ओर कदम : उद्यमिता की शुरुआत

सन 1987 में उन्होंने अपनी स्वयं की फर्म स्थापित की। यह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जहां से उन्होंने अपनी पहचान बनानी शुरू की। उन्होंने निर्माण कार्यों के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया और बाड़मेर के विकास में सक्रिय भूमिका निभाई।

उन्होंने केवल आर्थिक लाभ तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज के लिए भी कार्य किया। बाड़मेर में आधुनिक निर्माण, जैसे मॉल का निर्माण, उनकी दूरदर्शिता और प्रगतिशील सोच को दर्शाता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाला व्यक्ति भी आधुनिक विकास की दिशा में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

मानवता का आदर्श : स

सफलता प्राप्त करने के बाद भी तनसिंह चौहान का स्वभाव अत्यंत विनम्र और सरल बना रहा। उन्होंने कभी अपने पद या धन का प्रदर्शन नहीं किया। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण था—मानवता और संबंध।

वे लोगों के बीच रहना पसंद करते थे और हर जरूरतमंद की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। उनके व्यवहार में समानता और सम्मान की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। उन्होंने कभी किसी व्यक्ति के साथ भेदभाव नहीं किया और सभी को समान दृष्टि से देखा।

सेवा और दान : जीवन
था। वे मानते थे कि समाज
वह आर्थिक रूप से हो या स
उनका घर एक प्रकार से सह
किसी अपेक्षा के सहायता क
बल्कि आंतरिक संतोष का म

जीवन से मिली शिक्षा :
मिला, फिर भी उनका जीवन

भामाशाह स्व. तन सिंह चौहान की 63वीं ज

इंसान – तनसिंह चौहान”
प्रेरणा बन गया

उनकी निजी यात्रा नहीं होता, बल्कि वह एक सामूहिक प्रेरणा
न लोगों में से थे, जिन्होंने संघर्षों को अपनी कमजोरी नहीं बनने
न इस सत्य का प्रमाण है कि यदि इंसान में दृढ़ निश्चय और
ी भी अभाव को पार कर सकता है।

सफलता में भी सरलता

का मूल उद्देश्य... तनसिंह चौहान का जीवन सेवा और परोपकार की भावना से ओत-प्रोत को लौटाना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। उन्होंने अनेक जरूरतमंद लोगों की सहायता की, चाहे ामाजिक रूप से।

हायता केंद्र बन गया था, जहां कोई भी व्यक्ति अपनी समस्या लेकर आ सकता था। वे बिना रते थे और कभी अपने कार्यों का प्रचार नहीं करते थे। उनके लिए सेवा केवल कर्तव्य नहीं, ाध्यम थी।

अनुभव ही सबसे बड़ा गुरु... यद्यपि उन्हें औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं स्वयं में एक शिक्षालय था। उन्होंने अपने अनुभवों से जो सीखा, वही दूसरों को सिखाया।

जयंती : सेवा, समर्पण और प्रेरणा को नमन

उन्होंने यह संदेश दिया कि

- परिस्थितियां व्यक्ति को सीमित नहीं करतीं, बल्कि उसे मजबूत बनाती हैं।
- शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती, बल्कि जीवन के अनुभव भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं।
- आत्मविश्वास और परिश्रम से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

अंतिम विदाई : जन-जन का स्नेह

28 जनवरी को जब तनसिंह चौहान का निधन हुआ, तो पूरे क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई। उनकी अंतिम यात्रा में उमड़ी भीड़ इस बात का प्रमाण थी कि उन्होंने लोगों के दिलों में कितना गहरा स्थान बना लिया था।

यह विदाई केवल एक व्यक्ति की विदाई नहीं थी, बल्कि एक युग के अंत का संकेत थी। लोगों की आंखों में आंसू थे, लेकिन साथ ही उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता की भावना भी स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

निष्कर्ष : एक अमर प्रेरणा

आज तनसिंह चौहान भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका जीवन और उनके आदर्श सदैव जीवित रहेंगे। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्ची सफलता वही है, जो केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित न होकर समाज के कल्याण का माध्यम बने।

उनकी कहानी हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है, जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने सपनों को साकार करने का साहस रखता है।

अंततः उनका जीवन हमें यही सिखाता है—
यदि हौसले मजबूत हों, तो कोई भी बाधा रास्ता नहीं रोक सकती।

श्रद्धांजलि

जिनकी भुजाओं में था श्रम का तेज,
जिनकी आंखों में स्वप्न अग्नि जलती थी,
विपदा की आंधी भी झुक जाती थी,
जब उनकी इच्छाशक्ति मचलती थी।
वे भूख, अभाव, अंधेरों से लड़कर,
स्वयं प्रकाश स्तंभ बन गए,
जो ठिठके पथ पर, थके, रुके थे—
उनके लिए वे रण बन गए।
न धन से झुके, न मान से रुके,
न परिस्थितियों से हारे थे,
वे पुरुष नहीं, प्रखर ज्वाला थे,
जो अन्यायों पर दहकते तारे थे।
दान उनका व्रत, कर्म उनका धर्म,
जन-जन जिनका परिवार रहा,
वे चले गए, पर जीवित हैं—
हर हृदय में उनका उद्गार रहा।

राजस्थान की धरोहर: मकराना पर मौन खतरा

भीतर से दरकता मकराना

मकराना का गौरव दरक रहा है। ब्रांड मकराना पर संकट का साया मंडरा रहा है। संगमरमर भीतर से कमजोर हो रहा है। तापमान और प्रदूषण इसका दुश्मन बन चुके हैं। चेतना अब जरूरी है।

रमेश शर्मा वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान की धरती से निकला एक पत्थर दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारतों में चमक रहा है। लेकिन विडंबना यह है कि वही मकराना का संगमरमर आज अपने घर में ही असुरक्षित है। जिस पत्थर ने आगरा के विश्वप्रसिद्ध ताजमहल को अमर बनाया, जिसने माउंट आबू के दिलवाड़ा मंदिर की नक्काशी को दिव्यता दी और जिसने जोधपुर के जसवंत थड़ा को अद्भुत श्वेत आभा दी, उसी पत्थर के भविष्य पर सवाल उठ रहे हैं। मकराना का संगमरमर धीरे धीरे अपनी पहचान का मोहताज होता जा रहा है। राजस्थान के इस गौरव को बचाने के लिए सरकारी हस्तक्षेप की प्रतीक्षा है।

मकराना संगमरमर की खासियत उसकी मजबूती और चमक ही है। वैज्ञानिक कह रहे हैं असली खतरा सतह पर नहीं, भीतर है। आईआईटी मुंबई की शोधकर्ताओं अनुपमा घिमिरे और प्रो. स्वाति मनोहर ने अपने अध्ययन में पाया कि तापमान में बदलाव से संगमरमर के भीतर 'खुली सरंध्रता' बढ़ती है, यानी उसमें सूक्ष्म छिद्र बनते जाते हैं। इन छिद्रों से पानी, हवा और प्रदूषण भीतर घुसते हैं। धीरे धीरे मजबूती घटती है। परतें झड़ती हैं। दाग बढ़ते हैं। और जब तक नुकसान आंखों से दिखता है, तब तक पत्थर काफी हद तक कमजोर हो चुका होता है। उन्होंने प्रयोगशाला में संगमरमर को गर्म और ठंडा करने के चक्रों से गुजारा। इससे यह समझने में मदद मिली कि कितनी गर्मी और कितने चक्रों से पत्थर कितना कमजोर होता है।

मकराना संगमरमर क्यों खास?

- अत्यंत सघन और कम सरंध्रता वाला
- जल रिसाव के प्रति प्रतिरोधी
- सदियों तक टिकाऊ
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'हेरिटेज स्टोन' का दर्जा

क्या खदानों में भी दरारें हैं?... स्थिति स्पष्ट करना जरूरी है कि खदान से निकलने वाला नया मकराना संगमरमर सामान्यतः सघन होता है, बड़े ठोस ब्लॉकों में निकलता है व संरचनात्मक रूप से मजबूत होता है।

तीन स्तर पर जोखिम-

1. प्राकृतिक भूगर्भीय दरारें: हर संगमरमर खदान में कुछ 'नेचुरल जॉइंट्स' या प्राकृतिक फॉल्ट लाइनें होती हैं। खनन के दौरान बड़े ब्लॉकों को इन्हीं प्राकृतिक रेखाओं के आधार पर काटा जाता है। ये दरारें पत्थर की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती हैं।
2. खनन तकनीक से उत्पन्न सूक्ष्म दरारें कई बार विस्फोट से भी आती हैं। अत्यधिक मशीन कंपन, अनुचित कटिंग एंगल से भी सूक्ष्म माइक्रो-क्रैक बनते हैं।
3. खनन के बाद जब पत्थर वर्षों तक धूप, ठंड, नमी और प्रदूषण झेलता है, तो उसमें पर्यावरणीय प्रभाव दिखाई देते हैं।

खतरे के संकेत... सतह का खुरदरा होना, सूक्ष्म दरारें, दाग-धब्बे, परतों का झड़ना व ध्वनि तरंग की गति में कमी (UPV टेस्ट)।

क्या कहते हैं शोध

हालिया शोधों में पाया गया कि बार-बार गर्म और ठंडा होने की प्रक्रिया संगमरमर को भीतर से कमजोर करती है। प्रयोगशाला में 180°C से 400°C तक के तापीय चक्रों से वही असर तैयार किया गया जो दशकों में स्मारकों पर होता है।

वैज्ञानिक पराश्रव्य स्पंद वेग परीक्षण करते हैं। इसमें पत्थर के भीतर ध्वनि तरंगें भेजी जाती हैं। अगर तरंगें धीरे चलती हैं, तो समझा जाता है कि पत्थर के भीतर दरारें और छिद्र बढ़ चुके हैं। शोध में यह प्रमाणित हुआ कि इस टेस्ट से संगमरमर की स्थिति बिना तोड़े-फोड़े सही तरीके से जानी जा सकती है। यानी यह धरोहर संरक्षण के लिए बेहद उपयोगी है। सवाल यह है कि क्या राजस्थान की सभी प्रमुख धरोहरों और खदानों पर नियमित रूप से इस तकनीक से परीक्षण किया जा रहा है?

संसाधन बनाम संरक्षण

मकराना की खदानें सीमित हैं। बढ़ती मांग और निर्यात दबाव भविष्य की आपूर्ति पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। सवाल यह भी है कि अगर मूल स्रोत कमजोर होगा, तो मरम्मत के लिए समान गुणवत्ता का पत्थर कहां से आएगा? चूंकि मकराना क्षेत्र हजारों परिवारों की आजीविका से जुड़ा है। अगर खनन पर अचानक रोक या संसाधन क्षरण हुआ तो इसका व्यापक आर्थिक असर होगा। स्थानीय रोजगार पर इसका गहरा असर होगा।

- इसका संरक्षण नहीं किया गया तो अंतरराष्ट्रीय खरीदार इटली, तुर्की, वियतनाम की ओर रुख करेंगे। प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, जिससे कीमतों पर दबाव आएगा।
- अगर प्रमुख स्मारकों पर दाग होंगे, परत झड़ेगी या सतह पर खुरदरापन आएगा तो यह बदरंग दिखेगा, इसका सीधा असर पर्यटन पर होगा।
- खनन, कटिंग, पॉलिशिंग, परिवहन से जुड़े हजारों परिवारों का जीवन इससे जुड़ा हुआ है।
- उच्च गुणवत्ता वाले बड़े ब्लॉक कम मिलने लगे, माइक्रो-क्रैक प्रतिशत बढ़े तो लागत बढ़ेगी।
- गुणवत्ता नियंत्रण नहीं किया, वैज्ञानिक परीक्षण नियमित नहीं हुए, टिकाऊ खनन नीति लागू नहीं हुई तो भविष्य में 'ब्रांड मकराना' की चमक फीकी पड़ सकती है।

क्या हो समाधान..?

- UPV जैसी तकनीकों से नियमित जांच कर समय रहते नुकसान को पहचाना जाए।
- ताजमहल क्षेत्र जैसे संवेदनशील इलाकों में वाहनों और उद्योगों पर सख्त प्रदूषण नियंत्रण जरूरी है।
- आसपास के जलाशयों व नमी क्षेत्रों का सही जल प्रबंधन किया जाए, ताकि जैविक दाग-धब्बों से बचा जा सके।
- ऐसे रसायन और कोटिंग विकसित की जाएं जो संगमरमर को सांस लेने दें, लेकिन पानी और प्रदूषकों को अंदर न जाने दें।
- मकराना संगमरमर के खनन को सीमित और वैज्ञानिक बनाया जाए, ताकि भविष्य की जरूरतें सुरक्षित रहें।

प्रदूषण और जलवायु

तापमान में बढ़ता अंतर, वाहनों और औद्योगिक इकाइयों का धुआं तथा नमी के साथ जलाशयों का प्रभाव इन सबका संयुक्त असर संगमरमर को खुरदरा और दागदार बना रहा है। राजस्थान में गर्मियों की तीव्रता और सर्दियों की ठंडक का अंतर अब पहले से ज्यादा है।

पैलिएटिव केयर: नीतियां बनीं, संवेदनाएं नहीं

तड़पता अंतिम पड़ाव

भारत में पैलिएटिव केयर को लेकर नीतिगत ढांचा तो वर्षों से मौजूद है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर इसकी स्थिति बेहद चिंताजनक है। असाध्य रोगों से जूझ रहे लाखों मरीज आज भी दर्द, उपेक्षा और असहायता के बीच जीवन के अंतिम पड़ाव तक पहुंचते हैं।

ज्ञान चंद पाटनी, वरिष्ठ पत्रकार

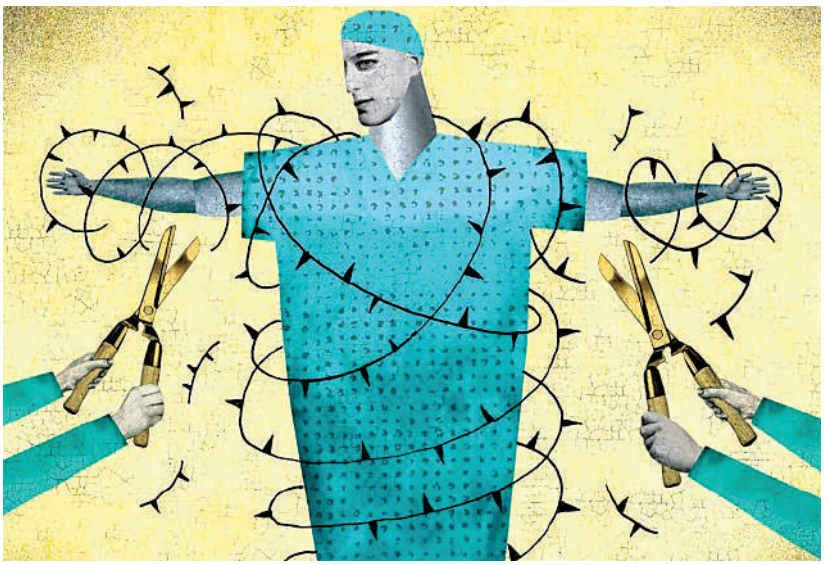

भारत में पैसिव यूथेनेशिया को मान्यता देने वाले सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले ने सरकार और समाज का ध्यान पैलिएटिव केयर की तरफ भी आकर्षित किया है। यह हकीकत है कि भारत में पैलिएटिव केयर की स्थिति काफी खराब है। 2012 का राष्ट्रीय पैलिएटिव केयर कार्यक्रम, 2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति और 2014 का एनडीपीएस संशोधन जैसे नीतिगत ब्लूप्रिंट तैयार हैं, लेकिन उन पर ठीक तरह से अमल नहीं होने से लाखों लोग पीड़ा भुगत रहे हैं।

क्या है पैलिएटिव केयर... पैलिएटिव केयर वह विशेषज्ञ चिकित्सा सेवा है जो असाध्य रोगों से ग्रस्त मरीजों या मृत्यु के निकट पहुंच चुके लोगों के लिए उपलब्ध कराई जाती है। इसका मूल लक्ष्य मरीज को शारीरिक पीड़ा से राहत देना व शेष जीवन को बेहतर बनाना है। साथ ही मरीज और परिवार को भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक समर्थन दिया जाता है। यह रोगी के उपचार के लिए की जाने वाली चिकित्सा का विकल्प नहीं है, बल्कि उसकी पूरक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन इसे स्वास्थ्य प्रणाली का अनिवार्य हिस्सा मानता है। इसके तहत दर्द, सांस लेने में तकलीफ, थकान और कब्ज जैसी शारीरिक समस्याओं का वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाता है। साथ ही काउंसलिंग के जरिए अवसाद, चिंता और मृत्यु के भय जैसे मनोवैज्ञानिक भावों को दूर करने की कोशिश होती है। परिवार को आर्थिक मदद, कानूनी सलाह और सामाजिक सहायता भी उपलब्ध कराई जाती है। आध्यात्मिक स्तर पर धर्म, ध्यान और प्रार्थना के माध्यम से शांति प्रदान की जाती है। अंततः एंड ऑफ लाइफ केयर के जरिए मरीज को गरिमापूर्ण और दर्दरहित विदाई सुनिश्चित की जाती है।

भारत और विकसित देशों की तुलना

- भारत और विकसित देशों के बीच पैलिएटिव केयर की स्थिति में बहुत अंतर है। एम्स दिल्ली की 2025 की एक स्टडी के अनुसार, देश में गंभीर रोगों से ग्रस्त अधिकांश मरीजों को पैलिएटिव केयर नहीं मिल पाती। हालत यह है कि बहुत ही कम कैंसर के मरीजों को यह सुविधा मिल पाती है। भारत में ऐसे मरीजों की 80 प्रतिशत देखभाल घर पर होती है, लेकिन प्रशिक्षण और अपर्याप्त संसाधनों के कारण मरीज की पीड़ा कम नहीं होती। भारत में बीमा कवरेज न के बराबर है, जबकि अमेरिका में मेडिकेयर के तहत व्यापक कवरेज उपलब्ध है। कोविड महामारी ने भी भारत में पैलिएटिव केयर की दयनीय स्थिति को उजागर किया था।
- इसके विपरीत, विकसित देशों में पैलिएटिव केयर का मजबूत ढांचा है। अमेरिका में हॉस्पिस मूवमेंट के तहत 5000 से अधिक हॉस्पिस केंद्र हैं, जो प्रतिवर्ष 15 लाख मरीजों को सेवा देते हैं। ब्रिटेन की नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) के तहत जरूरतमंद मरीजों को व्यापक रूप से निःशुल्क सेवाएं उपलब्ध होती हैं। यह सेवा घर, अस्पताल या हॉस्पिस में उपलब्ध हो सकती है। नीदरलैंड्स में बड़ी संख्या में मरीज घर पर ही 24/7 नर्सिंग के साथ शांतिपूर्ण अंत तक पहुंचते हैं। इन देशों में बीमा कवरेज 90 प्रतिशत से अधिक है और दर्द निवारक दवाओं की पूर्ण उपलब्धता सुनिश्चित है।

उपयोगी है केरल मॉडल

पैलिएटिव केयर को लेकर केरल की जागरूकता दूसरे राज्यों के लिए भी प्रेरणादायक हो सकती है। 2008 में राज्य ने पैलिएटिव केयर नीति बनाई। नेबरहुड नेटवर्क इन पैलिएटिव केयर (एनएनपीसी) ने समुदाय को साथ लिया। मलप्पुरम जिले में एक छोटी शुरुआत से यह मॉडल 300 से अधिक यूनिटों, 900 पंचायतों और 60,000 सक्रिय वॉलंटियर्स तक फैल गया। त्रि-स्तरीय संरचना इसका आधार है- प्राथमिक स्तर पर घरेलू विजिट, दूसरे स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में दर्द प्रबंधन और तीसरे स्तर पर मेडिकल कॉलेजों में विशेषज्ञ परामर्श। नतीजतन कैंसर रोगियों में 80 प्रतिशत दर्द नियंत्रित है, अस्पतालों में भर्ती के मामले 50 प्रतिशत घटे हैं और परिवारों का आर्थिक भार कम हुआ है।

विकसित राष्ट्र का सपना... भारत में पैलिएटिव केयर तक पहुंच में सुधार के लिए राष्ट्रीय पैलिएटिव केयर कार्यक्रम (एनपीपीसी) और राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के दिशानिर्देशों के अलावा केरल जैसे राज्य के उदाहरण मौजूद हैं। इनका व्यावहारिक और अनुशासित क्रियान्वयन हो तो हालात सुधर सकते हैं। इसके लिए घर-आधारित और सामुदायिक सेवाओं के लिए धन और कर्मचारियों की भर्ती पर खास ध्यान देना होगा। भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का ढोल पीटने वालों को यह तो सुनिश्चित करना ही होगा कि जरूरत पड़ने पर हर भारतीय को गुणवत्तापूर्ण पैलिएटिव केयर मिल जाए।

डॉक्टर, नर्स, वॉलंटियर्स और केयरगिवर्स की भूमिका

पैलिएटिव केयर एक ऐसा क्षेत्र है, जहां चिकित्सकीय ज्ञान के साथ मानवीय गुणों की आवश्यकता ज्यादा पड़ती है। यहां डॉक्टर, नर्स, वॉलंटियर्स और केयरगिवर्स को मरीज की शारीरिक पीड़ा के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। टीम के हर सदस्य को मरीज और उसके परिवार का सच्चा साथी बनना पड़ता है। डॉक्टर को दर्द विशेषज्ञ से बढ़कर सहानुभूति से भरा निडर व्यक्ति बनना चाहिए। वह मरीजों से संवाद बनाने में कुशल होना चाहिए, ताकि वह मृत्यु की कठोर सच्चाई को सरल, सांत्वनापूर्ण भाषा में कह सके। नर्सिंग स्टाफ इस क्षेत्र का मुख्य स्तंभ है, जो चौबीस घंटे मरीज के सबसे करीब रहता है। सहानुभूति का गुण वैसे तो इस कार्य से जुड़े सभी लोगों में होना आवश्यक है, लेकिन वॉलंटियर्स के लिए यह सबसे जरूरी है। मुख्यतः परिवार के सदस्य केयरगिवर्स के रूप में घरेलू पैलिएटिव केयर के आधार होते हैं। इस टीम के हर सदस्य को आवश्यक प्रशिक्षण जरूर लेना चाहिए। मरीज की तकलीफ दूर करने की हर संभव कोशिश होनी चाहिए, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में खुद की सेहत का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

जरूरी है मिशनरी भावना

पैलिएटिव केयर से जुड़ी टीम में मिशनरी भावना का सबसे ज्यादा महत्व है। धार्मिक संदर्भ से इतर, मिशनरी भावना को किसी भी नेक काम के प्रति समर्पण के रूप में भी देखा जाता है। पैलिएटिव केयर में मिशनरी भावना वह आंतरिक प्रेरणा है जो डॉक्टरों, नर्सों, वॉलंटियर्स और केयरगिवर्स को करुणा, निस्वार्थ सेवा और आध्यात्मिक समर्पण की ओर ले जाती है। यहां लक्ष्य मरीज का दर्द दूर करना होता है। यह भावना व्यावसायिक नहीं, आध्यात्मिक है। मिशनरी भावना हो तो किसी भी कार्य में संसाधनों की कमी भी आड़े नहीं आती। पैलिएटिव केयर से जुड़कर कोई भी व्यक्ति अपने धर्म के मूल संदेश को आगे बढ़ा सकता है।

घातक हो सकती है लापरवाही

पैलिएटिव केयर के दौरान लापरवाही असाध्य रोगियों के लिए घातक साबित होती है, क्योंकि यह न केवल उनकी शारीरिक पीड़ा को बढ़ा देती है बल्कि परिवारों को भावनात्मक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक रूप से पूरी तरह तोड़ देती है। भारत में बहुत सीमित आबादी को ही यह सेवा मिल पाती है। जहां यह उपलब्ध है, वहां मानवीय चूक, प्रशासनिक कमी और तकनीकी लापरवाही इतनी आम है कि कई बार मरीज का अंतिम समय कष्टमय बन जाता है।

सबसे प्रमुख लापरवाही ओपिओइड दवाओं की अनियमित उपलब्धता और गलत निर्धारण है। मोर्फिन या फेंटेनिल जैसे दर्द निवारक कैंसर या न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों के अंतिम चरण में जीवनदायिनी साबित होते हैं, लेकिन डॉक्टरों में व्याप्त भय, नशे का सामाजिक मिथक, कानूनी जटिलताओं की वजह से इनके इस्तेमाल में झिझक रहती है। इनकी उपलब्धता भी अनिश्चित रहती है। एक अध्ययन से पता चलता है कि 70 प्रतिशत मरीजों को पर्याप्त दर्द राहत नहीं मिलती।

प्रशिक्षण की कमी पैलिएटिव केयर की दूसरी बड़ी कमजोरी है। सामान्य चिकित्सकों और नर्सों को दर्द मूल्यांकन, परिवार काउंसलिंग या मरीज की मृत्यु की मनोवैज्ञानिक तैयारी जैसे विशेष कौशल की जरूरत होती है, लेकिन सरकारी अस्पतालों में यह प्रशिक्षण लगभग नगण्य है। कई बार पैलिएटिव क्लिनिक में फंड की कमी के चलते भी मरीजों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। भोजन और पोषण की पूरी उपेक्षा भी घातक साबित होती है। अंतिम चरण के मरीज तरल आहार या नासोगैस्ट्रिक (एनजी) ट्यूब पर निर्भर होते हैं, लेकिन अधिकांश अस्पतालों में डाइटिशियन की कमी है। कई जगहों पर प्रोटीन सप्लीमेंट या इलेक्ट्रोलाइट ड्रिंक की व्यवस्था नहीं होती, जिससे डिहाइड्रेशन बढ़ जाता है।

परिवार को पर्याप्त मार्गदर्शन न मिलना भी बड़ी समस्या है। देखभालकर्ता दवा शेड्यूल, मोर्फिन के साइड इफेक्ट्स का प्रबंधन या घरेलू देखभाल की बारीकियां नहीं जानते। उनको अस्पताल से डिस्चार्ज के समय लिखित निर्देश या होम केयर किट भी नहीं दी जाती। इसलिए वे मरीज को ठीक तरह से नहीं संभाल पाते और मरीज पीड़ा झेलते हुए ही संसार से विदा हो जाता है।

संक्रमण नियंत्रण में ढिलाई अंतिम दिनों को असहनीय बनाती है। बेडरिडन मरीजों में प्रेशर अल्सर, यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन या निमोनिया का खतरा हमेशा रहता है। स्टराइल तकनीकों का पालन न होने से इंट्रावेनस लाइन (IV) या कैथेटर से संक्रमण फैल जाता है। कई मामलों में बेडशीट्स समय पर न बदलने से स्किन इंफेक्शन हो जाता है। निजी क्षेत्र में पैलिएटिव केयर के नाम पर भारी बिल बनाने के मामले भी सामने आए हैं। पैलिएटिव केयर में लापरवाही मरीज की गरिमा का हनन करती है। इसके लिए सरकार, अस्पताल और एनजीओ सभी जिम्मेदार हैं। इसलिए प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाए, आवश्यक स्टाफ बढ़ाया जाए, परिवार की भी समझाइश करने पर ध्यान दिया जाए और आवश्यक दर्द निवारक दवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

क्रिकेट 2026: विश्व विजेता भारत ने तय किए आधुनिक क्रिकेट के नए मानक

निडर भारत, अब 300 रन भी दूर नहीं

जब टी-20 क्रिकेट शुरू हुआ तब 140 से 150 रन मजबूत स्कोर माने जाते थे। आज 200 रन भी सुरक्षित नहीं माने जाते। हालिया विश्व कप 2026 के फाइनल में भारत के 255 रन बताते हैं कि क्रिकेट का यह प्रारूप अब केवल खेल नहीं, बल्कि एक 'पावर-गेम' बन चुका है जहां सीमाओं की कोई परिभाषा शेष नहीं है।

राकेश गांधी, वरिष्ठ पत्रकार

क्रिकेट के डेढ़ सौ साल से अधिक पुराने इतिहास में टी-20 प्रारूप सबसे क्रांतिकारी अध्याय है। इस नए अध्याय का आगाज ही इस मूल सोच के साथ हुआ था कि खेल को समय की सीमाओं में बांधकर उसे रोमांचक बनाया जाए। जो उत्साह और कौतूहल दर्शकों को पूरे दिन के खेल (वन-डे) या पांच दिन के धैर्य (टेस्ट) में मिलता था, उसे मात्र तीन घंटों के सघन रोमांच में समेट दिया जाए। आज लगभग दो दशक के इस सफर में यह लक्ष्य न केवल हासिल हो चुका है, बल्कि इसने क्रिकेट की पूरी बुनियादी संरचना ही बदलकर रख दी है। टी-20 अब केवल क्रिकेट का एक छोटा संस्करण भर नहीं रहा, बल्कि यह वैश्विक खेल बाजार में मनोरंजन का सबसे तेज और लोकप्रिय उत्पाद बन चुका है।

वर्ष 2007 में जब आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2007 के साथ इस प्रारूप ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी पहली बड़ी दस्तक दी थी, तब परिस्थितियां और क्रिकेट की समझ बिल्कुल जुदा थी। उस समय की रणनीतियां भी वनडे क्रिकेट से प्रेरित थीं। बल्लेबाज शुरुआत के छह ओवरों (पावर-प्ले) में विकेट बचाने की जुगत में रहते थे और अपना पूरा दमखम आखिरी के तीन-चार ओवरों में लगाते थे। उस दौर में 140 या 150 रन का स्कोर भी मैच-विनिंग माना जाता था। 170 या 180 रन तक पहुंचना तो एक असाधारण उपलब्धि जैसा था। जैसे-जैसे समय बीता, इस खेल ने खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता, तकनीकी कौशल और सबसे महत्वपूर्ण उनकी मानसिकता को पूरी तरह बदल दिया।

शुरुआत में ही आक्रामकता

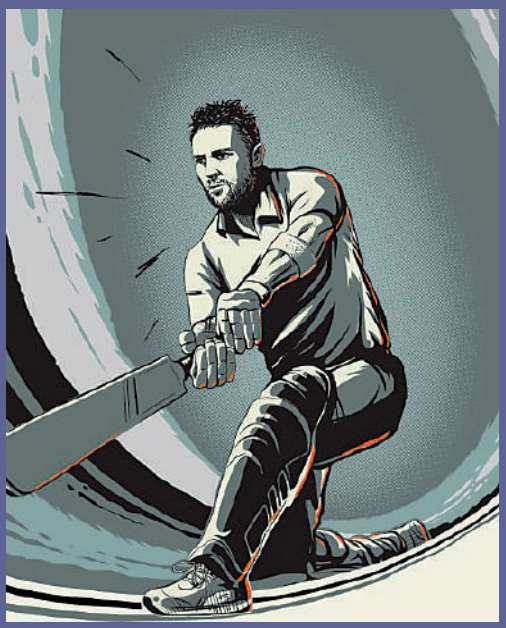

क्रिकेट के इस कायाकल्प में कुछ विशेष खिलाड़ियों की भूमिका ऐतिहासिक रही है। वेस्टइंडीज के क्रिस गेल ने जब पहली बार इस प्रारूप में अपनी ताकत दिखाई, तो दुनिया को समझ आया कि बिना डरे पहली गेंद से प्रहार करने का क्या असर हो सकता है। ब्रेंडन मैकुलम की बल्लेबाजी ने दिखाया कि टी-20 में रक्षात्मक होने के लिए कोई जगह नहीं है। इन खिलाड़ियों ने टी-20 बल्लेबाजी को आक्रामकता की उस ऊंचाई पर खड़ा किया जहां से वापस लौटना नामुमकिन था। उनकी पारियों ने टीम प्रबंधकों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि यदि बल्लेबाज शुरुआत से ही गेंदबाजों पर हावी हो जाए, तो स्कोर की कोई सीमा नहीं रह जाती।

भारतीय क्रिकेट का नया तेवर

भारतीय क्रिकेट के परिप्रेक्ष्य में यह बदलाव और भी दिलचस्प रहा। शुरुआती दौर में भारत ने अपनी पारंपरिक शैली को बनाए रखा, लेकिन धीरे-धीरे विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों ने इस प्रारूप को एक नई दिशा दी। विराट ने जहां कैलकुलेटिव रिस्क और निरंतरता को महत्व दिया, वहीं रोहित शर्मा ने निस्वार्थ आक्रामकता को टीम का कल्चर बनाया। इस बदलाव का चरम रूप हमें हाल में संपन्न हुए आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2026 में देखने को मिला। भारत ने न केवल विश्व कप अपने नाम किया, बल्कि फाइनल मुकाबले में 255 रन का पहाड़ जैसा स्कोर खड़ा करके यह संदेश दे दिया कि अब टी-20 का व्याकरण बदल चुका है। यह स्कोर केवल रनों का आंकड़ा नहीं था, बल्कि भारतीय क्रिकेट की उस नई मानसिकता का प्रदर्शन था जहां जोखिम लेना ही सबसे बड़ी रणनीति है। अब 150 रन जीत की नींव नहीं, बल्कि हार की आहट माने जाते हैं।

अब सिर्फ 360 डिग्री में गेंद भेजने का अभ्यास

▪ टी-20 क्रिकेट की इस प्रगति ने कोचिंग के पारंपरिक तरीकों को भी पीछे छोड़ दिया है। अब बल्लेबाजों को केवल तकनीक की बारीकियां नहीं सिखाई जातीं, बल्कि उन्हें पावर हिटिंग की विशेष ट्रेनिंग दी जाती है। नेट प्रैक्टिस में अब केवल पारंपरिक किताबी शॉट की प्रैक्टिस नहीं होती, बल्कि मैदान के हर हिस्से (360 डिग्री) में गेंद को भेजने का अभ्यास किया जाता है। लैप शॉट, रिवर्स स्कूप और स्विच हिट जैसे शॉट्स अब किसी बल्लेबाज की मजबूरी नहीं, बल्कि उसकी मुख्य ताकत बन चुके हैं।

▪ भारतीय टीम में युवा पीढ़ी के बढ़ते कदम इसका जीता-जागता उदाहरण हैं। अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन, ईशान किशन, शिवम दुबे और तिलक वर्मा जैसे खिलाड़ी इसी नई सोच की उपज हैं। इन खिलाड़ियों के लिए क्रीज पर समय बिताना प्राथमिकता नहीं है, बल्कि पहली ही गेंद से गेंदबाज के मनोवैज्ञानिक दबाव को तोड़ना इनका लक्ष्य है। इसी का परिणाम है कि अब पावरप्ले में 80-90 रन बनाना एक सामान्य प्रक्रिया बन गई है।

गेंदबाजों की बेबसी...

बल्लेबाजी के इस तूफान के बीच सबसे बड़ा सवाल गेंदबाजों के अस्तित्व पर खड़ा हुआ है। क्या गेंदबाज अब केवल एक मशीन बनकर रह गए हैं? हकीकत में, इस चुनौती ने गेंदबाजों को और भी चतुर बना दिया है। आज के दौर में केवल गति से काम नहीं चलता। गेंदबाजों ने स्लोअर बाउंसर, बैक ऑफ द हैंड यॉर्कर और वाइड यॉर्कर जैसे नए हथियार विकसित किए हैं। स्पिनरों ने अपनी गति में विविधता लाकर और मिस्ट्री बॉलिंग के जरिए बल्लेबाजों को रोकने की कला सीखी है। यही कारण है कि टी-20 क्रिकेट अब केवल शारीरिक ताकत का खेल नहीं रहा, बल्कि यह शतरंज की तरह चालें चलने वाला एक रणनीतिक युद्ध बन चुका है जहां डेटा और एनालिटिक्स की भूमिका बढ़ गई है।

वैश्विक मंच और भविष्य की संभावनाएं

टी-20 क्रिकेट को लोकप्रिय बनाने में दुनिया भर की फ्रेंचाइजी लीगों का योगदान भी कम नहीं है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने जहां खिलाड़ियों को आर्थिक सुरक्षा और बड़ा मंच दिया, वहीं बिग बैश (बीबीएल) और कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) ने खेल के विजुअल और रोमांच को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया। इन लीगों के कारण ही आज अफगानिस्तान जैसे देशों के खिलाड़ी भी विश्व स्तरीय प्रदर्शन कर रहे हैं।

फिलहाल इस प्रारूप को अभी अपने चरम पर नहीं मान सकते। 140 रन से शुरू हुआ यह सफर 255 रन तक जरूर पहुंचा है, लेकिन जिस तरह से इम्पैक्ट प्लेयर जैसे नियमों का प्रयोग बढ़ रहा है और बल्लेबाजों की निडरता बढ़ रही है, वह दिन दूर नहीं जब हम टी-20 मैचों में 300 रन का स्कोर बनते देखेंगे। यह प्रारूप खेल के प्रति हमारी सोच को लगातार चुनौती दे रहा है और शायद यही इसकी सबसे बड़ी खूबी है।

लीग क्रिकेट: दिखेगा विश्व कप की जीत का आत्मविश्वास

हौसलों की उड़ान, रनों का तूफान

टी-20 विश्व कप 2026 की जीत ने भारतीय क्रिकेट में निडरता का जो बीज बोया है, उसका असर अब मैदान के हर कोने में दिख रहा है। चाहे 27 मार्च से शुरू हुआ आईपीएल हो या महिला क्रिकेट की बढ़ती रन-गति, अब 200 से अधिक का स्कोर केवल लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सामान्य मानक बन चुका है।

अजय अस्थाना ✍ वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय क्रिकेट इस समय अपने सबसे स्वर्णिम दौर से गुजर रहा है। आईसीसी टी-20 विश्व कप 2026 की खिताबी जीत और फाइनल में खड़े किए गए 255 रनों के कीर्तिमान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब मैदान पर सावधानी की जगह सर्वोच्च आक्रमण ने ले ली है। इस जीत से निकला मोमेंटम अब दो प्रमुख मोर्चों पर अपना असर दिखाने के लिए तैयार है। पहला, इसी 27 मार्च से शुरू हुआ आईपीएल का नया सीजन और दूसरा, महिला टी-20 क्रिकेट का तेजी से बदलता स्वरूप।

आईपीएल हमेशा से ही क्रिकेट की नई रणनीतियों की जन्मस्थली रहा है, लेकिन इस बार का सीजन पिछले सभी रिकॉर्ड्स को पीछे छोड़ने के लिए तैयार है। विश्व कप में भारतीय बल्लेबाजों ने जिस तरह से 250 से अधिक के स्कोर को मुमकिन बनाया, उसका सीधा असर फ्रेंचाइजी टीमों की स्काउटिंग और खेल की रणनीति पर दिख रहा है। अब टीमें ऐसे खिलाड़ियों को प्राथमिकता दे रही हैं जो पहली गेंद से ही छक्का मारने की मानसिक और शारीरिक क्षमता रखते हों। कोचिंग स्टाफ भी अब एंकर की जगह इम्पैक्ट मेकर की तलाश में है। इसके लिए एआई और डेटा एनालिटिक्स का सहारा लिया जा रहा है ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौनसा बल्लेबाज किस गेंदबाज के खिलाफ पहली गेंद से स्ट्राइक रेट को 200 के पार ले जा सकता है।

स्कोर के इस उछाल में केवल खिलाड़ियों की मानसिकता ही नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक का भी बड़ा हाथ है। आज के दौर में बल्ले जिस उच्च गुणवत्ता वाली इंग्लिश विलो और विशेष 'कर्व' (घुमाव) के साथ तैयार किए जा रहे हैं, उनसे लगा एक हल्का सा स्ट्रोक भी गेंद को सीमा रेखा के बाहर पहुंचा देता है। साथ ही, खिलाड़ियों की फिटनेस पर होने वाले खर्च ने उन्हें वह शारीरिक क्षमता दी है जिससे वे अंतिम ओवरों में भी उसी ऊर्जा के साथ बड़े शॉट्स खेल सकते हैं। अब क्रिकेट केवल मैदान पर नहीं, बल्कि अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं और जिमों में भी जीता जा रहा है।

अब एंकर नहीं, इम्पैक्ट का दौर... इस बार इम्पैक्ट प्लेयर नियम का प्रयोग और भी आक्रामक होगा। टीमें अब एक अतिरिक्त विशेषज्ञ बल्लेबाज को मैदान में उतारकर अपने बल्लेबाजी क्रम को 10वें नंबर तक मजबूती दे रही हैं। यह नियम बल्लेबाजों को वह सुरक्षा कवच प्रदान करता है जिसके कारण वे बिना किसी हिचकिचाहट के जोखिम उठा रहे हैं। अब यह डर खत्म हो गया है कि 'अगर मैं आउट हो गया तो क्या होगा', क्योंकि बेंच पर एक इम्पैक्ट प्लेयर अपनी बारी का इंतजार कर रहा होता है। अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन, ईशान किशन, शिवम दुबे, रिंकू शर्मा और तिलक वर्मा जैसी भारतीय क्रिकेट की नई पौध के लिए यह सीजन खुद को ग्लोबल सुपरस्टार के रूप में स्थापित करने का सबसे बड़ा मंच है। जब इन भारतीय युवाओं का आत्मविश्वास जोस बटलर, ट्रैविस हेड और निकोलस पूरन जैसे विदेशी धुरंधरों की मारक क्षमता से मिलेगा, तो मैदान पर रनों का ऐसा सैलाब आएगा जो अब तक केवल वीडियो गेम्स में ही संभव लगता था। रिकॉर्ड्स का टूटना अब खबर नहीं, बल्कि आईपीएल की नियति बन चुका है।

महिला टी-20 : रूढ़ियों को तोड़ती नई 'रन-मशीनें'

टी-20 की यह वैचारिक क्रांति केवल पुरुष क्रिकेट तक सीमित नहीं है। महिला टी-20 क्रिकेट के विकास की कहानी भी उतनी ही रोमांचक और प्रेरक है। एक समय था जब महिला क्रिकेट में 120-130 रनों का स्कोर मैच-विजेता माना जाता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला क्रिकेट ने अपनी फिटनेस, आधुनिक तकनीक और मानसिक दृढ़ता के बल पर इन सभी पुरानी धारणाओं को ध्वस्त कर दिया है। आज के मुकाबलों में 180 से 200 रनों का स्कोर बनना अब कोई आश्चर्य की बात नहीं रह गई है। बल्लेबाजी के इस ऊंचे स्तर के पीछे पिचों के स्वभाव में आया बदलाव भी एक बड़ा कारण है। अब महिला क्रिकेट के लिए भी वैसी ही सपाट और तेज पिचें तैयार की जा रही हैं, जैसी पुरुष क्रिकेट में देखने को मिलती हैं।

इस क्रांतिकारी बदलाव के केंद्र में स्मृति मंधाना की कलात्मकता, हरमनप्रीत कौर व शैफाली वर्मा की नैसर्गिक ताकत और ऋचा घोष व जेमिमा रोड्रिग्स जैसी खिलाड़ियों की निरंतरता है। इन महिला खिलाड़ियों ने अपनी बाउंड्री क्लियरिंग क्षमता पर जबरदस्त काम किया है, जिसके कारण अब 70-80 मीटर के छक्के महिला मैचों में भी आम हो गए हैं। ऑस्ट्रेलिया की एलिसा हीली और इंग्लैंड की नैट साइवर ब्रंट जैसे वैश्विक सितारों के साथ प्रतिस्पर्धा ने भारतीय खिलाड़ियों के खेल के स्तर को ऊपर उठाया है। भारत में शुरू हुई महिला प्रीमियर लीग ने इस बदलाव में 'उत्प्रेरक' का काम किया है। इस लीग ने न केवल खिलाड़ियों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया, बल्कि उन्हें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क के साथ काम करने का अवसर दिया। डब्ल्यूपीएल में लगने वाले गगनचुंबी छक्के इस बात का प्रमाण हैं कि महिला क्रिकेट भी अब ऊंचे व लम्बे स्ट्रोक खेलने के दौर में मजबूती से कदम रख चुका है। आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं और बेहतर फिटनेस कोचिंग के चलते वह दिन दूर नहीं जब महिला टी-20 क्रिकेट भी स्कोर और रोमांच के मामले में पुरुष क्रिकेट के समकक्ष खड़ा होगा। इसका परिणाम यह है कि अब युवा भारतीय लड़कियों में बड़े शॉट खेलने का कोई डर शेष नहीं रहा।

संतुलित खेल की चुनौती... हालांकि, रनों की इस सुनामी ने पिच क्यूरेटरों और गेंदबाजों के सामने एक नैतिक संकट भी खड़ा कर दिया है। क्या क्रिकेट केवल बल्लेबाजों का खेल बनकर रह जाएगा? खेल के जानकारों का मानना है कि आने वाले समय में हमें गेंद और बल्ले के बीच संतुलन बनाने के लिए बाउंड्री की लंबाई बढ़ाने या पिच के मिजाज में कुछ बदलाव देखने को मिल सकते हैं। मनोरंजन अपनी जगह है, लेकिन खेल की असली आत्मा उसके द्वंद्व में छिपी है। यदि गेंदबाज केवल रन लुटाने वाले बनकर रह गए, तो भविष्य में प्रतियोगिता का वह तीखापन कम हो सकता है जिसे हम अभी देख रहे हैं।

भगत सिंह का सपना अब भी अधूरा

शहीदे आज़म भगत सिंह का व्यक्तित्व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केवल साहस और बलिदान का प्रतीक नहीं था, बल्कि वह एक गहन वैचारिक चेतना के प्रतिनिधि भी थे। उनके विचारों की गहराई और दूरदर्शिता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी अंग्रेज़ी शासन के समय थी। उनके बलिदान दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित संगोष्ठी ने इसी प्रासंगिकता को पुनः उजागर किया और एक बुनियादी प्रश्न को सामने रखा—क्या भारत ने वास्तविक, विशेषकर आर्थिक, स्वतंत्रता हासिल की है?

सोजती गेट, जोधपुर स्थित आर. सीटू कार्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी में भारत की मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (युनाइटेड) के प्रदेश सचिव व पोलित ब्यूरो सदस्य गोपीकिशन, आर.सीटू के प्रदेश उपाध्यक्ष बृजकिशोर, पार्टी की केंद्रीय कमेटी के सदस्य नदीम खान, हबीबुर्रहमान, वहीदुदीन, श्रमिक नेता दिलीप सिंह, राजाराम खारिया, राजेन्द्रसिंह गौड मोगड़ा, अशोक चौहान तथा रमेशनाथ जैसे वक्ताओं ने जिस स्पष्टता और तीखेपन से अपने विचार रखे। यह संगोष्ठी केवल श्रद्धांजलि का मंच नहीं थी, बल्कि यह समकालीन भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का गंभीर विश्लेषण भी थी।

वक्ताओं ने स्पष्ट रूप से यह रेखांकित किया कि आज़ादी के 75 वर्षों के बाद भी देश में आर्थिक असमानता गहराती जा रही है। एक ओर देश में अरबपतियों की संख्या और संपत्ति में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी ओर आम श्रमिक और किसान वर्ग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहा है। यह स्थिति भगत सिंह के उस सपने के बिल्कुल विपरीत है, जिसमें उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जहां संसाधनों का समान वितरण हो और हर व्यक्ति को सम्मानजनक जीवन मिले।

भगत सिंह का 'इंकलाब' केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं था। उनके लिए क्रांति का अर्थ था—समाज के हर स्तर पर परिवर्तन। वे मानते थे कि जब तक आर्थिक ढांचा न्यायपूर्ण नहीं होगा, तब तक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। आज के संदर्भ में यह विचार और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने जहां कुछ वर्गों को अत्यधिक लाभ पहुंचाया है, वहीं बड़े पैमाने पर असमानता को भी बढ़ावा दिया है।

संगोष्ठी में उठाया गया साम्प्रदायिकता का मुद्दा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भगत सिंह धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि धर्म और जाति के आधार पर समाज का विभाजन, शोषणकारी शक्तियों के लिए एक उपकरण बन जाता है। आज जब राजनीतिक विमर्श में धार्मिक और जातीय पहचान को प्रमुखता दी जा रही है, तब यह चिंता स्वाभाविक है कि वास्तविक मुद्दे—जैसे बेरोजगारी, महंगाई और श्रमिक अधिकार—पिछड़ते जा रहे हैं। इस संदर्भ में 'हिटलरवादी प्रवृत्ति' की चेतावनी केवल एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए एक गंभीर संकेत है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी वक्ताओं ने जिस तरह साम्राज्यवाद और पूंजीवादी वर्चस्व की चर्चा की, वह भगत सिंह की वैश्विक दृष्टि को दर्शाता है। उन्होंने अपने लेखों में स्पष्ट रूप से कहा था कि साम्राज्यवाद केवल राजनीतिक नियंत्रण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आर्थिक शोषण का एक संगठित तंत्र है। आज के दौर में यह तंत्र प्रत्यक्ष उपनिवेशवाद के रूप में नहीं, बल्कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों, व्यापारिक समझौतों और वित्तीय संस्थानों के माध्यम से कार्य करता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत की आर्थिक नीतियां भी वैश्विक दबावों से पूरी तरह मुक्त नहीं हैं।

इस संगोष्ठी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि यह केवल समस्याओं की पहचान तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने समाधान की दिशा में भी एक स्पष्ट संदेश दिया—आर्थिक आज़ादी के लिए पुनः संगठित संघर्ष की आवश्यकता है। यह संघर्ष केवल किसी एक वर्ग या संगठन का नहीं, बल्कि पूरे समाज का होना चाहिए। श्रमिकों, किसानों, छात्रों और बुद्धिजीवियों को मिलकर एक ऐसे आंदोलन का निर्माण करना होगा, जो आर्थिक न्याय और समानता की मांग को केंद्र में रखे।

आज के समय में भगत सिंह को केवल एक ऐतिहासिक प्रतीक या राष्ट्रवादी नारे तक सीमित कर देना उनके विचारों के साथ अन्याय होगा। उनकी प्रासंगिकता इस बात में है कि हम उनके सिद्धांतों को अपने वर्तमान सामाजिक-आर्थिक ढांचे में कैसे लागू करते हैं। यदि हम वास्तव में उनके बलिदान का सम्मान करना चाहते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि देश का हर नागरिक आर्थिक रूप से सशक्त और स्वतंत्र हो।

अंततः, "इंकलाब जिंदाबाद" और "भगत सिंह अमर रहें" जैसे नारे तभी सार्थक होंगे, जब वे केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति न रहकर सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक बनें। जब तक भारत में आर्थिक असमानता, सामाजिक अन्याय और शोषण की संरचनाएं मौजूद हैं, तब तक भगत सिंह के विचार हमें निरंतर प्रेरित करते रहेंगे। यही इस संगोष्ठी का सबसे बड़ा संदेश है—स्वतंत्रता की यात्रा अभी अधूरी है, और उसे पूर्ण करने की जिम्मेदारी हमारी है।

बॉक्स ऑफिसः सारे रिकॉर्ड तोड़ रही 'धुरंधर : द रिवेंज'

धुरंधर-2 का दुनिया भर में डंका

'धुरंधर : द रिवेंज' बॉक्स ऑफिस पर इतिहास रच रही है। यह फिल्म न केवल पहले ही दिन हिंदी में 100 करोड़ रुपए कमाने वाली पहली बॉलीवुड फिल्म बन चुकी है, बल्कि यह सबसे कम समय में 1200 करोड़ के करीब कमाई करने वाली फिल्म बन चुकी है।

सुधांशु टाक, लेखक, समीक्षक

आदित्य धर के नायाब निर्देशन ने बॉक्स ऑफिस पर सुनामी ला दी है। उनकी निर्देशित फिल्म 'धुरंधरः द रिवेंज' (धुरंधर- 2) ने अपनी रिलीज के महज 10 दिनों के भीतर 1200 करोड़ से अधिक की ऐतिहासिक कमाई कर इतिहास रच दिया है। जसकीरत सिंह रंगी के 'हमजा अली मजारी' बनने और ल्यारी के अंडरवर्ल्ड पर राज करने की इस जासूसी थ्रिलर ने दर्शकों को कुर्सियों से बांधे रखा है। देश के छोटे फिल्म सेंटरों में शुमार जोधपुर जैसे आराम तलबी शहर में भी अलसुबह 4 बजे तक शो चल रहे हैं और सब हाउसफुल हैं।

अभिनेता रणवीर सिंह के केंद्रीय चरित्र से सजी फिल्म धुरंधर-2 ने सिर्फ तीन दिनों में ऐसा धमाका कर दिया है कि हिंदी सिनेमा के इतिहास में इसे लंबे समय तक याद रखा जाएगा। ईद 2026 के मौके पर इस फिल्म के लिए दर्शकों में जबरदस्त क्रेज देखने को मिला। देशभर में कई मुस्लिम बहुल इलाकों के सिनेमाघरों में भी चौबीसों घंटे शो चलाए गए। कुछ जगहों पर मल्टीप्लेक्स में तो एक ही दिन में लगभग 40 शो तक हुए हैं। इसके बावजूद टिकट मिलना मुश्किल रहा। ईद के दिन इस फिल्म ने हिंदी वर्जन से ही 100 करोड़ से ज्यादा की कमाई की। इससे पहले किसी भी हिंदी फिल्म ने एक दिन में इतना बड़ा आंकड़ा नहीं छुआ था।

वैसे पहले दिन यानी गुरुवार को फिल्म ने 102 करोड़ से ज्यादा की ओपनिंग की थी, जिसमें हिंदी से लगभग 99 करोड़ आए। उस वक्त यह रिकॉर्ड के बेहद करीब पहुंचकर चूक गई थी। लेकिन शनिवार को फिल्म ने इतिहास रच दिया। सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक, ईद के दिन फिल्म ने 113 करोड़ नेट इंडिया कमाए, जिनमें से 105 करोड़ सिर्फ हिंदी वर्जन से आए। यह पहली बार हुआ कि किसी हिंदी फिल्म ने एक दिन में 100 करोड़ का आंकड़ा पार किया। इससे पहले पुष्पा-2 ने चौथे दिन हिंदी से 86 करोड़ कमाए थे।

संगीतकार शाश्वत सचदेव का कमाल

फिल्म के कलाकारों की दमदार एक्टिंग के साथ फिल्म का संगीत सबसे मजबूत पहलू बनकर उभरा। दिल धड़काऊ बैकग्राउंड संगीत और उस पर 90 के दशक के सुपरहिट हिंदी गानों के तेज डीजे रीमिक्स ने पर्दे पर जैसे जादू जगा दिया। 'धुरंधर' के दोनों वर्जन का संगीत दर्शकों को आनंदित कर गया। फिल्म का टाइटल ट्रैक भी जबरदस्त बन पड़ा है।

फिल्म का 'गहरा हुआ', 'इश्क जलाकर कारवां', 'रन डाउन इन सिटी-मोनिका', 'रंबा' हो, तम्मा तम्मा लोगे सहित दोनों ही वर्जन सभी गानों को लोगों ने खूब पसंद किया है। फिल्म के गाने ऐसे हैं, जिसे आप जल्दी भूलेंगे नहीं। फिल्म में अरबी सॉन्ग सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ। कलाकारों की एंट्री पर भी 90 के दशक के हिट गानों का इस्तेमाल किया गया। इन सभी तत्वों ने फिल्म को आम से खास बना दिया। इसका सारा श्रेय फिल्म के म्यूजिक कंपोजर शाश्वत सचदेव को है।

जयपुर में जन्मे शाश्वत ने तीन साल की उम्र से क्लासिकल म्यूजिक की ट्रेनिंग ली। शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ वेस्टर्न म्यूजिक में भी उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। पढ़ाई से ज्यादा उनका मन संगीत में लगता था। उन्होंने लॉ की पढ़ाई की, लेकिन संगीत को अपना करियर चुना। आज जयपुर के साथ पूरे भारत का मान उनके संगीत ने विश्व पटल पर चमकाया है।

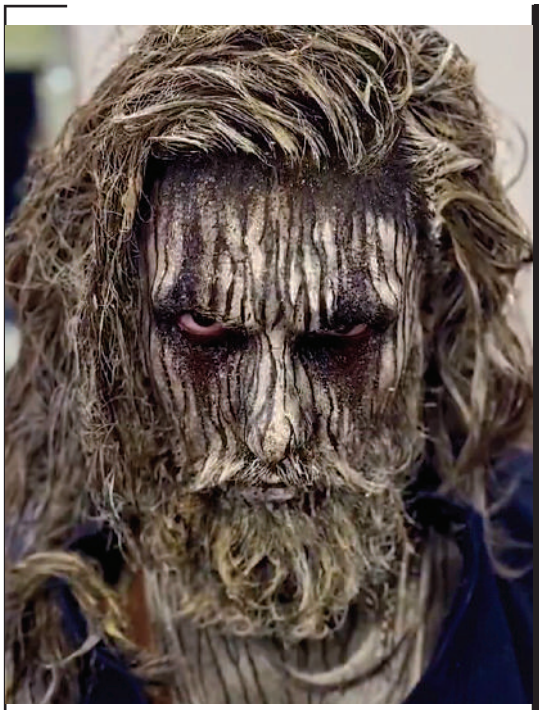

रोचक कहानी के साथ रोमांचक स्क्रीनप्ले

'धुरंधरः द रिवेंज' की कहानी रहमान डकैत की मौत के बाद शुरू होती है। हमजा (रणवीर सिंह) का लक्ष्य सिर्फ लयारी के अंडरवर्ल्ड या राजनीति में गहराई तक जाना नहीं है, बल्कि अपने रास्ते में आने वाले हर खतरे को खत्म करना है। फिल्म के हाई-ऑक्टेन एक्शन सीक्वेंस और बदले की आग से भरे रोमांचक स्क्रीन प्ले ने दर्शकों को मोहित कर दिया। फिल्म के दौरान लोग घंटों तक सीट से चिपके रहे कि कहीं कोई सीन चूक न जाए।

आदित्य धर का निर्देशन

'उरी' के बाद आदित्य धर ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि वे बड़े पैमाने की फिल्मों को बखूबी संभाल सकते हैं। फिल्म का बैकग्राउंड स्कोर और सिनेमैटोग्राफी अंतरराष्ट्रीय स्तर की है। आदित्य की फिल्म में पीक डिटेलिंग के भी काफी मोमेंट्स हैं। आदित्य ने धुरंधर के सेट से लेकर हमजा, रहमान और हर एक किरदार की कास्टिंग और कॉस्ट्यूम की छोटी से छोटी बात पर ध्यान दिया। फिल्म की कहानी इतनी सधी हुई है कि यह आपको अंत तक बांधकर रखती है कि आप सांस भी नहीं ले पाते और कब साढ़े तीन घंटे निकल जाते हैं, आपको पता भी नहीं लगता। ल्यारी के सेट फ्रेमवर्क से लेकर एक्टर्स के फाइट सीक्वंस और गन चलाने की ट्रेनिंग से लेकर उनके ल्यारी की भाषा में बात करने तक, आदित्य ने हर एक बात का ध्यान रखा है। यही उनके निर्देशन को सबसे खास, सबसे अलग बनाता है।

रणवीर की अवॉर्ड विनर परफॉर्मेंस

रणवीर सिंह ने धुरंधर के दोनों पार्ट में जो अभिनय किया है, वो सिर्फ अच्छा ही नहीं, बल्कि करियर बेस्ट कहा जा सकता है। अगर बारीकी से देखें तो उन्होंने इस फिल्म में चार अलग-अलग लुक्स और व्यक्तित्व को जिया है और हर किरदार में इमोशंस की जो रेंज दिखाई है, वो असाधारण है।

डायलॉग डिलीवरी में उनकी पकड़ पहले से ही मजबूत रही है, लेकिन यहां उन्होंने उसे एक नए स्तर पर पहुंचा दिया है। एक्शन सीक्वेंस में उनकी ऊर्जा और स्क्रीन प्रेजेंस कमाल की है, और जिस सीन में उन्हें खामोश रहना है, वहां उनकी आंखें और चेहरे के भाव ही पूरी कहानी कह देते हैं और यही एक बड़े अभिनेता की पहचान होती है। सबसे खास बात यह है कि इस परफॉर्मेंस में कहीं भी बाहरी सहारे का उपयोग नहीं किया गया है, जैसे- बाहुबली और पुष्पा में हुआ था। वहां तो आवाज़ ही किसी दूसरे कलाकार की थी। यहां आवाज़, स्टाइल, बॉडी लैंग्वेज, सबकुछ पूरी तरह रणवीर का अपना है। यही वजह है कि उनका हर सीन असली और प्रभावशाली लगता है।

अगर उनके पिछले काम को देखें तो गली बॉय, 83, रामलीला, बाजीराव मस्तानी, पद्मावत में भी उन्होंने बेहतरीन अभिनय किया है, लेकिन धुरंधर में उन्होंने खुद को एक नए शिखर पर पहुंचा दिया है। खासतौर पर जसकीरत सिंह के इमोशनल सीन, जासूस हमज़ा का खाना खाने वाला सीन, परिवार को याद करने वाले पल हों, या फिर गांव लौटने वाला सीन। इनमें बिना एक शब्द बोले सिर्फ चेहरे के भाव से पूरी भावना व्यक्त कर देना, यह अभिनय का सर्वोच्च स्तर है। यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि यह रणवीर सिंह का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन है और ऐसे अभिनय के लिए उन्हें सम्मान की उम्मीद की जा सकती है।

'धुरंधरः द रिवेंज' न केवल एक देखा जाए तो ब्लॉकबस्टर फिल्म साबित हुई है, बल्कि इसने भारतीय सिनेमा के लिए बॉक्स ऑफिस पर नए मानक स्थापित कर दिए हैं। जिस रफ्तार से यह फिल्म आगे बढ़ रही है, ऐसा लगता है कि यह जल्द ही रिकॉर्ड समय में 1000 करोड़ के आंकड़े को भी छू लेगी। फिल्म का ऑल टाइम बिजनेस 2000 करोड़ के करीब पहुंच सकता है।

गौरतलब है कि 'धुरंधर' का पहला भाग भी बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रहा था और उसने दुनियाभर में 1300 करोड़ से ज्यादा की कमाई की थी। अब 'धुरंधर-2' उसी सफलता को आगे बढ़ाते हुए नए रिकॉर्ड बना रही है। कुल मिलाकर, 'धुरंधर-2' ने न सिर्फ कमाई के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, बल्कि यह भी साबित कर दिया है कि दमदार कहानी और शानदार परफॉर्मेंस के साथ बॉलीवुड फिल्में वैश्विक स्तर पर भी बड़ी सफलता हासिल कर सकती हैं।

हार्दिक आभार

माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री

श्री गजेन्द्रसिंह जी शेखावत

एवं

माननीय कोयला एवं खान मंत्री

श्री जी. किशन जी रेड्डी

का लाईम स्टोन माइनर मिनरल के
समस्त खनन पट्टो को
मेजर मिनरल में
बिना अतिरिक्त शुल्क
के परिवर्तित करने पर

हार्दिक आभार

जितेन्द्रसिंह नरुका
अध्यक्ष
लाईम स्टोन माईन्स एसोसिएशन
जोधपुर

मोतीलाल चौहान
उपाध्यक्ष
लाईम स्टोन माईन्स एसोसिएशन
जोधपुर

प्रभुदयाल शर्मा
सचिव
लाईम स्टोन माईन्स एसोसिएशन
जोधपुर

रामकरण भंवरिया
कोषाध्यक्ष
लाईम स्टोन माईन्स एसोसिएशन
जोधपुर

उपेन्द्रसिंह भाटी

हनुमान सिंह राठौड़

कुलदीप चौधरी

रामकरण फड़ाक

राजेन्द्रसिंह शेखावत

शिवचरण सिंह डिगरना

विरेन्द्रसिंह भाटी

विक्रमसिंह
अध्यक्ष
लाईम स्टोन माईन्स एसोसिएशन, पाली

महेन्द्रसिंह राठौड़

रणवीरसिंह चम्पावत

दिग्विजय सिंह खोजा

कैलाश टाक

शुभेच्छु : मानसिंह नरुका, प्रेमसिंह राठौड़, रामचन्द्र चौहान, विक्रम सिंह राठौड़, अर्जुनसिंह भाटी घोड़ावट, नारायणसिंह राठौड़, देवीसिंह राठौड़, जब्बरसिंह राठौड़, भूपेन्द्र सिंह नरुका, महेन्द्रसिंह राठौड़, छैलसिंह राठौड़, कानसिंह भदावत खारिया मिठापुर, मदनलाल मेघवाल, छोटाराम मुण्डेल मुरकासनी, धाराराम खोजा, रामचन्द्र खोजा, चैनाराम भादु, तिलाराम, भंवरराम, रामस्वरूप फड़ाक, रेवतराम, मनोहरसिंह भाटी, फतेह सिंह भाटी, विरेन्द्रसिंह भाटी, हुकमसिंह भाटी, धर्मवीर सिंह राठौड़, देवेन्द्र सिंह भाटी, हरदयाल सिंह राठौड़, शक्तिसिंह राठौड़, किशनसिंह चम्पावत, किशनपाल सिंह चम्पावत, राजेंद्र सिंह राठौड़, सुरजीत सिंह, दिनेश कुमार ईनाणी, चैनाराम चौहान, उम्मेदसिंह सिणला, बिजाराम, महेन्द्रसिंह सिंघासनी, चैनाराम फडोदा, गणपत राम बेड़ा, सुरेन्द्र सिंह सरपंच, राजूराम सुथार, बुशालराम दोतड, शांति प्रकाश अग्रवाल, नूर मोहम्मद झाक, नाथूराम सुथार, बाबुलाल मुण्डेल, रामकिशोर भंवरिया, ताराचन्द भंवरिया, महेन्द्र राम भाकर, हबिबु रहमान, समीर मोहम्मद, अतुल शिव नारायण, अतुल प्रेम नारायण, शंकर राम लोहार, मोहनसिंह भाटी, हरिकिशन चौहान, रामभरोस सुथार, मदनलाल, ईकबाल कुरेशी, सदिक मिस्त्री।

रिपोर्टर सुरेन्द्र खदाव

जोधपुर लाईम स्टोन माईन्स एसोसिएशन, जोधपुर

पढ़ने की आदत घटने से मानसिक क्षमता पर संकट

पुस्तकें ही गढ़ती हैं व्यक्तित्व

तेजी से बदलते डिजिटल दौर में पढ़ने की आदत कम होती जा रही है। नियमित अध्ययन न केवल ज्ञान और भाषा कौशल को बढ़ाता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास और सकारात्मक सोच का भी आधार बनता है। पुस्तकों से दूरी समाज को सतही और असंतुलित बना रही है।

डॉ. गौरव बिस्सा ✍ जीवन प्रबंध प्रशिक्षक

शारीरिक टीकाकरण तो देश में सफल हो चुका, लेकिन मानसिक टीकाकरण कार्यक्रम का क्या? ये यक्ष प्रश्न है। मानसिक टीकाकरण से अभिप्राय है मस्तिष्क की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना, मस्तिष्क को बुरी बातों से बचाना और दिमाग के कूड़े को निकालकर उसमें उत्तमता भरना। ये कार्य पूरा होता है स्वाध्याय से और पुस्तकें व अखबारों के अध्ययन से। वर्तमान समय में ये तत्त्व मानो कमजोर हो चला है। ऐसा लगता है कि आजकल कमाना, खाना पीना और सोशल मीडिया देखना ही जीवन बन गया है। व्यक्ति के पास पैसा है, सभी सुविधाएं हैं, शारीरिक फिटनेस भी है, लेकिन मेंटल फिटनेस की चिंता कतई नहीं है। मेंटल फिटनेस के लिए जरूरी है पढ़ना। कहा गया है कि 'रोज दस पन्ने पढ़िए। आपके शब्द नदी की तरह बहेंगे।' मस्तिष्क में नए विचारों को बढ़ाने या ज्ञानार्जन करने आदि मुद्दों पर समाज मौन है। दुनिया को उपनिषद, वेद और महान साहित्यिक कृतियां देने वाले देश का युवा आज रीडिंग के बजाय स्क्रॉलिंग में व्यस्त है। शोध के अनुसार, वर्तमान समय में युवा या बुजुर्ग, दोनों श्रेणियों में बढ़ते तनाव का एक कारण ये भी है कि वे कुछ भी अच्छा अध्ययन नहीं कर रहे हैं।

कम होता पढ़ना.. प्रसिद्ध कहावत है कि 'एक पाठक मरने से पहले हजार जीवन जीता है, लेकिन जो नहीं पढ़ता वह केवल एक ही जीवन जीता है।' इसका अभिप्राय स्पष्ट है कि पढ़ने से व्यक्ति में नए विचार तथा जीवन के नए दृष्टिकोण विकसित होते हैं। इस बात को ध्यान में रखकर विचार कीजिये कि आज के दौर का युवा या बालक, दस समाचार पत्रों या पत्र पत्रिकाओं के नाम बता पाने में असमर्थ क्यों हैं? प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं के अलावा कोई भी विद्यार्थी अखबार और शोधपरक सम्पादकीय नहीं पढ़ रहा? घरों से बच्चों की कॉमिक्स, लघु कथाओं की पुस्तकें, एक्टिविटी बुक्स गायब क्यों हो चली हैं? कारण स्पष्ट है- अध्ययन का अभाव। टीवी और मोबाइल पर अपने जीवन का समय खर्च करने वाले युवा, शिवाजी सामंत के मृत्युंजय में कर्ण का जीवंत चित्रण या मुंशी प्रेमचंद की बूढ़ी काकी का दर्द कैसे समझेंगे? इनके मस्तिष्क का, भावनाओं का विकास आखिर कैसे होगा? कुछ भी न पढ़ने और सिर्फ मोबाइल को स्क्रॉल करते रहने से समाज की स्थिति कितनी विस्फोटक होगी, यह गंभीर चिंता का विषय है।

चिंताजनक स्थिति...

नेशनल यूथ रीडरशिप सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय युवाओं में गैर शैक्षणिक या साहित्यिक पुस्तकों को पढ़ने की प्रवृत्ति में पिछले एक दशक में चालीस से पचास प्रतिशत तक की गिरावट आई है। स्वयं से प्रश्न करना होगा कि गत एक साल के ऑनलाइन ऑर्डर्स में कितनी किताबें मंगवाई गईं? घर में मात्र एक अखबार के अलावा कितनी पत्र पत्रिकाएं मंगवाई जा रही हैं? बच्चों और युवाओं के साथ ही गृहलक्ष्मियां भी अखबार और करंट अफेयर्स से दूर हैं। जब उन्हें किसी विषय की जानकारी ही नहीं है तो वे चर्चा भी अनर्गल विषयों पर ही करेंगे और सिर्फ रील्स बनाने और देखने को ही सत्य मान लेंगे। कितना दुःखद है कि एक तरफ इंजीनियरिंग ग्रेज्युएट देश की रक्षा या विदेश नीति नहीं जानता तो दूसरी ओर एक इतिहास का स्नातक सल्तनत और मुग़ल काल को एक काल बता रहा है। पुस्तक उपहार में देना मानो बीते कल की बात है क्योंकि व्यक्ति स्वाध्याय से दूर है।

क्या कहता है शोध?...

अच्छी पुस्तकों को जीवंत देव प्रतिमा कहा गया है। इसके इतने लाभ हैं जो कल्पना से परे हैं। अनेक शोध रिपोर्ट्स के अनुसार, पढ़ना व्यक्ति में आत्मविश्वास का बीजारोपण करता है।

▪ एमोरी यूनिवर्सिटी के न्यूरो साइंटिस्ट्स के अनुसार, पढ़ने से मस्तिष्क की कार्य क्षमता सर्वोच्च स्तर को छूती है और सृजन आकार लेता है। भाषा, सृजन, लेखन, लीडरशिप और व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए पुस्तकों का अध्ययन अति आवश्यक है।

▪ ससेक्स विश्वविद्यालय के शोध से स्पष्ट हुआ है कि सिर्फ छह मिनिट्स पुस्तक या अखबार आदि पढ़ने से तनाव को अड़सठ प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। पुस्तक पढ़ने से तनाव बढ़ाने वाले होर्मोन कोर्टिसोल का निकलना काफी कम हो जाता है और व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

▪ नेशनल इंस्टिट्यूट ऑन एजिंग की रिपोर्ट के अनुसार, नित्य पढ़ने से स्मृति लोप से जुड़ी बीमारियां जैसे अल्जाइमर्स और डिमेंशिया से बचा जा सकता है। भाषा के कौशल में वृद्धि, एकाग्रचित्तता का विकास तथा अच्छी नींद के लिए भी पढ़ना एक औषधि की तरह है।

बिब्लियोथेरेपी...

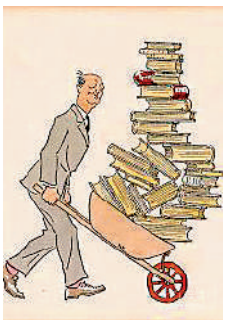

निकोलस कार की पुस्तक 'द शैलोज़' के अनुसार, इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग मस्तिष्क को केवल स्कैन करने और देखने भर के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। इस कारण डीप रीडिंग, समझकर पढ़ने की प्रवृत्ति और क्रिटिकल थिंकिंग की क्षमता लगभग नष्ट हो रही है। इससे बचने के लिए बिब्लियोथेरेपी अच्छा उपाय है। वैज्ञानिकों के अनुसार, पढ़ना एक तरह की बिब्लियोथेरेपी है। बिब्लियोथेरेपी वो मनोवैज्ञानिक पद्धति है जिसमें पढ़ाई के द्वारा, मानसिक स्वास्थ्य सुधारा जाता है। येल यूनिवर्सिटी का शोध तो यहां तक कहता है कि पढ़ने वाले व्यक्ति, नहीं पढ़ने वालों से अधिक वर्ष जीते हैं। स्वाध्याय से व्यक्ति की कुत्सित सोच, घृणा और आपराधिक मानसिकता कम होती है।

पढ़ने से होगा विकास

एक साल में कम से कम छह पुस्तकें पढ़ने या प्रतिदिन न्यूनतम दस पृष्ठ पढ़ने से एक साल में लगभग तीन हज़ार पृष्ठ पढ़े जा सकते हैं। ऐसा करने से लगभग दस पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। यही ज्ञान- आत्मविश्वास, अच्छे सम्प्रेषण और वार्ताशैली का निर्माता है। तुच्छ विषयों में, कार्यालय की राजनीति में, परिवारों की छोटी मोटी बातों में ही अपने जीवन का अमूल्य समय नष्ट करने के पीछे का कारण भी अध्ययन नहीं करने की प्रवृत्ति ही है। मस्तिष्क में बुरे विचारों का कचरा भरने के बजाय स्वाध्याय करना उचित है। वर्तमान समय में बढ़ रहे अपराधों को कम करना हो या अपनी संस्कृति व मूल्यों का संरक्षण करना, पुस्तकों को पढ़ने की आदत से ही इन समस्याओं का समाधान मुमकिन है। पुस्तकों को पढ़ना, उनसे सीखना, उनसे दोस्ती करना, पुस्तकों के सान्निध्य में जीना, उनके शब्दों को जीवन में उतारने के लिए प्रयास करना, नया सीखना और सबसे बड़ी चीज़ है दूसरे मनुष्यों के बारे में अनर्गल प्रलाप करने के बजाय सेल्फ स्टडी में लीन रहने का आनंद लेना। पुस्तकों का अध्ययन गूंगे के गुड़ के जैसा होता है।

लीडर्स आर रीडर्स

'लीडर्स आर रीडर्स।' ये प्रचलित कहावत है कि अच्छे लीडर्स बहुत अध्ययन करते हैं। संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के निजी पुस्तकालय राजगृह में पचास हज़ार पुस्तकों का होना, अध्ययनशील महात्मा गांधी का जॉन रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से प्रभावित होना, प्रसिद्ध चिन्तक ओशो रजनीश एक दिन में दस पुस्तकें तक पढ़ लेना और कार्ल मार्क्स के जीवन का बड़ा हिस्सा मैनचेस्टर के पुस्तकालय में अध्ययन और लेखन में बीतना, ये सिद्ध करता है कि पढ़ने से ही व्यक्ति महानता की तरफ अग्रसर होता है। माता पिता को चाहिए कि वे अपनी संतान के आगे पुस्तकें, अखबार और पत्र- पत्रिकाएं पढ़ें। घर में पढ़ते रहने का माहौल बनाना और घर को पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं या अखबारों से लादना, आज के समय की आवश्यकता है। यही विकास का आधार है।

संयुक्त परिवार से बढ़ती दूरी : बदलती प्राथमिकताएं और संवाद का संकट

एक ही छत के नीचे ये कैसे अजनबी?

पहले घर रिश्तों की जीवंत पाठशाला थे, जहां दादा की कहानियां और बुआ का स्नेह व्यक्तित्व गढ़ता था। आज वही घर निजता के नाम पर कंक्रीट के खानों में बंट गए हैं। सवाल यह है कि क्या विकास की इस दौड़ में हम अपनों को ही पीछे छोड़ आए हैं?

नेहा विजय, लेखिका

कभी घर केवल ईंट-पत्थर का ढांचा या रहने की जगह नहीं होता था। वह रिश्तों की एक ऐसी जीवंत पाठशाला हुआ करता था, जहां जीवन का ककहरा किताबों से नहीं, बल्कि अनुभवों से सीखा जाता था। जहां दादा की कहानियों में नैतिकता होती थी, चाचा के अनुशासन में सुरक्षा, बुआ के स्नेह में ढाढ़स और पिता के मार्गदर्शन में भविष्य की नींव। आज वही घर सिमटकर छोटे परिवारों तक सीमित हो गए हैं। विडंबना यह है कि घर जितने आधुनिक होते जा रहे हैं, रिश्तों की गहराई उतनी ही धुंधली पड़ती जा रही है।

अक्सर यह कहा जाता है कि आज के बच्चे अपने अभिभावकों का सम्मान नहीं करते या वे उन्हें अपनी दुनिया में अप्रासंगिक समझने लगे हैं। लेकिन इस निष्कर्ष की तह तक जाने पर समझ आता है कि बदलाव केवल बच्चों में नहीं आया है, बल्कि पूरे सामाजिक ढांचे की प्राथमिकताएं बदल गई हैं। हमने निजता को इतना महत्व दे दिया कि वह धीरे-धीरे अकेलेपन में बदल गई।

पहले घरों में 'हमारा घर' होता था, अब बच्चों के पास 'मेरा कमरा' है। निजता और स्वतंत्रता के इस अतिरेक ने बच्चों को परिवार के उन सामूहिक अनुभवों से काट दिया है, जो उन्हें धैर्य और सहनशीलता सिखाते थे।

पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव आधुनिकता के रूप में तो आया, लेकिन हम उसे आधा-अधूरा ही समझ पाए। हमने अधिकारों को तो अपना लिया, लेकिन उनके साथ जुड़ी जिम्मेदारियों और मर्यादाओं के संतुलन को कहीं पीछे छोड़ दिया। आज का शिक्षण ढांचा बच्चों को प्रतिस्पर्धी और तकनीकी रूप से सक्षम तो बना रहा है, लेकिन जीवन मूल्यों और पारिवारिक संवेदनाओं के लिए इसमें बहुत सीमित स्थान बचा है। हम बच्चों को एक परियोजना की तरह तैयार कर रहे हैं, जहां अंक और करियर की उपलब्धियां प्राथमिकता बन गए हैं, जबकि संवाद, कृतज्ञता और सम्मान जैसे गुण पाठ्यक्रम से बाहर हो गए हैं।

भाषा का प्रश्न भी यहां महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा ने बच्चों को वैश्विक उड़ान तो दी, लेकिन कई मामलों में उन्हें अपनी मातृभाषा और जड़ों से दूर कर दिया। भाषा केवल शब्द नहीं, बल्कि भावनाओं और परंपराओं की संवाहक होती है। जब बच्चा अपनी जड़ों की भाषा से कटता है, तो वह घर के बुजुर्गों के अनुभवों से भी कट जाता है। यहीं से रिश्तों में वह अनकही खाई पैदा होती है, जिसे भरना मुश्किल हो जाता है।

संयुक्त परिवारों के विघटन ने इस संकट को और गहरा किया है। पहले बच्चा विभिन्न रिश्तों के बीच रहकर शेयरिंग और केयरिंग सीखता था। आज एकल संतान संस्कृति और एकल परिवारों ने उसे 'सब कुछ मेरा है' की सोच की ओर धकेल दिया है। इससे उनमें सामाजिक सामंजस्य की क्षमता कमजोर हो रही है और वे छोटी-छोटी असहमतियों पर रिश्तों से किनारा करने लगते हैं।

हालांकि, इसके लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना न्यायसंगत नहीं होगा। अभिभावकों की भूमिका भी उतनी ही जिम्मेदार है। व्यस्त जीवनशैली के कारण हम बच्चों को सुविधाएं तो दे रहे हैं, लेकिन समय नहीं। कई बार मित्र बनने की होड़ में हम उन सीमाओं को तय करना भूल जाते हैं, जो अनुशासन और स्वतंत्रता के बीच सेतु का काम करती हैं।

चुनौती यह नहीं है कि कौन सही है, बल्कि यह है कि बदलते समय के साथ हम रिश्तों को संतुलित कैसे रखें। बच्चों को केवल जानकारी नहीं, बल्कि जीवन की समझ देना आवश्यक है। परिवार को फिर से वह स्थान बनाना होगा जहां केवल साथ रहना पर्याप्त न हो, बल्कि साथ जीना अनिवार्य हो। जहां बातचीत एक औपचारिकता नहीं, बल्कि संबंधों की बुनियाद बने।

हमें यह समझना होगा कि बच्चे तेज जरूर हैं, लेकिन वे जीवन के समंदर में बिना पतवार के आगे बढ़ रहे हैं। अभिभावक अनुभवी हैं, लेकिन उन्हें बदलते समय की लहरों के साथ तालमेल बिठाना होगा। यदि अनुभव और उत्साह के बीच संवाद का पुल मजबूत हो जाए, तो दूरियां स्वतः सिमट सकती हैं। क्योंकि समाज और देश की तरक्की केवल आर्थिक पैमानों से नहीं, बल्कि रिश्तों की मजबूती से भी मापी जाती है।

धींगा गवर: जोधपुर का अनूठा उत्सव

सड़कों पर होता है महिलाओं का राज

जोधपुर का धींगा गवर उत्सव केवल परंपरा नहीं, बल्कि नारी शक्ति और सामाजिक बदलाव का जीवंत प्रतीक है। इसमें महिलाएं स्वांग, उत्साह और बेंतमार परंपरा के जरिए अपनी स्वतंत्रता और आत्मविश्वास को खुलकर अभिव्यक्त करती हैं।

डॉ. मधु वैनर्जी पत्रकार व लेखिका

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में जोधपुर की धींगा गवर (बेंतमार गणगौर) का एक अलग ही नाम है। यह एक ऐसा अनूठा उत्सव है, जो परंपरा के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण का संदेश भी देता है। चैत्र शुक्ल तृतीया से शुरू होकर वैशाख कृष्ण तृतीया तक चलने वाले इस 16 दिवसीय आयोजन में आस्था, उल्लास और सामाजिक बदलाव की झलक दिखाई देती है। इस दिन जोधपुर की भीतरी शहर की पुरानी बस्तियों की संकरी गलियों में जब रात गहराती है, तो वहां एक अलग ही दुनिया नजर आती है।

ढोल की थाप, गीतों की गूंज, रंग-बिरंगे परिधानों में सजी महिलाएं और हाथों में बेंत। उनकी बेंत से बचने का प्रयास करते पुरुष। यह दृश्य केवल उत्सव का नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, परंपरा और सामाजिक परिवर्तन का संगम है। यही है धींगा गवर, जिसे स्थानीय लोग बेंतमार भी कहते हैं और गर्व और उल्लास के साथ मनाते हैं। धींगा गवर केवल जोधपुर का एक लोक उत्सव नहीं है, बल्कि यह समाज के बदलते चेहरे का आईना है। यह परंपरा और आधुनिक सोच के बीच संतुलन बनाते हुए यह संदेश देता है कि समानता, सम्मान और स्वतंत्रता ही असली संस्कृति है। जोधपुर की यह परंपरा हर साल यह साबित करती है कि जब महिलाएं अपने अधिकारों के साथ आगे बढ़ती हैं, तो समाज भी उनके साथ बदलता है।

परंपरा से प्रगतिशीलता तक का सफर

धींगा गवर का उत्सव चैत्र शुक्ल तृतीया से शुरू होकर वैशाख कृष्ण तृतीया तक 16 दिनों तक चलता है। यह मूलतः गणगौर की परंपरा से जुड़ा है, लेकिन समय के साथ इसने एक विशिष्ट पहचान बना ली है। यहां सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि विधवा महिलाएं भी इस पूजा में समान अधिकार के साथ भाग लेती हैं। जहां समाज में कई बार विधवा महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों से दूर रखा जाता है, वहीं धींगा गवर उन्हें सम्मान, भागीदारी और पहचान देता है। यह पहल इस उत्सव को केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण बनाती है।

स्वांग में छिपी स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति

धींगा गवर का 'रातिजोग' इस उत्सव का सबसे आकर्षक और प्रतीकात्मक हिस्सा होता है। इस दिन महिलाएं राजा-रानी, पुलिस, साधु, देवता और यहां तक कि पुरुष पात्रों का भी स्वांग रचती हैं। यह स्वांग केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक ढांचे को चुनौती देने का एक माध्यम है। महिलाएं इन रूपों के जरिए यह संदेश देती हैं कि वे हर भूमिका निभाने में सक्षम हैं चाहे वह सत्ता का प्रतीक हो या समाज का संरक्षक।

नारी शक्ति का खुला मंच

धींगा गवर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह महिलाओं को खुलकर जीने, हंसने और अपनी बात कहने का मंच देता है। यहां कोई झिझक नहीं, कोई सामाजिक बंधन नहीं, सिर्फ आत्मविश्वास और उत्साह होता है। यह उत्सव यह भी दिखाता है कि नारी केवल परंपराओं की पालनकर्ता नहीं, बल्कि बदलाव की वाहक भी है। विधवा महिलाओं की भागीदारी, रात में निर्भीक होकर निकलना और सामाजिक भूमिकाओं को चुनौती देना, ये सभी पहलू इसे एक सशक्त सामाजिक आंदोलन का रूप देते हैं।

बेंतमार परंपरा, हंसी-ठिठोली में गहराई

इस उत्सव को 'बेंतमार गणगौर' भी कहा जाता है। गणगौर पूजने वाली महिलाएं (तीजणियां) हाथों में बेंत लेकर रात में निकलती हैं और रास्ते में मिलने वाले पुरुषों को हल्के-फुल्के अंदाज में बेंत मारती हैं। लोकमान्यता है कि यदि किसी कुंवारे युवक को यह बेंत लग जाए, तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है। इसलिए पुरुष भी इस परंपरा को मुस्कुराते हुए स्वीकार करते हैं। यह परंपरा भले ही मजाकिया लगे, लेकिन इसके भीतर लैंगिक संतुलन और संवाद की झलक छिपी होती है। जहां एक दिन के लिए ही सही, लेकिन भूमिकाएं उलट जाती हैं और शहर की सड़कों पर महिलाओं का राज होता है।

आस्था और वैभव का संगम

जोधपुर के भीतरी शहर में स्थित सुनारों की घाटी की गवर माता इस उत्सव का केंद्र होती हैं। यहां गवर माता की प्रतिमा को भारी स्वर्ण आभूषणों से सजाया जाता है, जो श्रद्धा और समृद्धि का प्रतीक है। यह दृश्य न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाता है, बल्कि जोधपुर की समृद्ध कारीगरी और सांस्कृतिक धरोहर को भी सामने लाता है। चाचा की गली, सिटी पुलिस, कबूतरों का चौक, नवचौकिया और आस-पास के क्षेत्र इन दिनों मानो जीवित संग्रहालय बन जाते हैं। रात भर महिलाएं समूह बनाकर निकलती हैं, गीत गाती हैं, नृत्य करती हैं और अपनी परंपरा को आगे बढ़ाती हैं। इन गलियों में केवल उत्सव नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही स्मृतियां और संस्कार भी चलते हैं। बुजुर्ग महिलाएं नई पीढ़ी को इस परंपरा से जोड़ती हैं, जिससे यह विरासत निरंतर जीवित बनी रहती है।

एआई और मौलिकता का सवाल

एआई केवल एक तकनीकी उपकरण है जो उपलब्ध डेटा के आधार पर सामग्री तैयार करता है, जबकि मौलिक सृजन अनुभव, संवेदना और कल्पना से जन्म लेता है। सच्चा साहित्य वही है जो जिया गया हो, महसूस किया गया हो।

दिनेश सिंदल ✍ कवि, लेखक

यहां नकल हावी रही, गए मूल को भूल।
जिन पर भौंरों गा रहे, हैं कागज के फूल।।

आजकल हम मूल से दूर होते जा रहे हैं। हमारे जीवन में आर्टिफिशियल वस्तुओं का चलन बढ़ गया है। सजावट के लिए फूल आर्टिफिशियल। ज्वेलरी आर्टिफिशियल। ड्राइंग रूम के गमलों में सजे पौधे आर्टिफिशियल।

सभी नकली चीजों ने हमारे असली जीवन में घर कर लिया है। यहां तक की हमारा व्यवहार नकली हो गया है। हमारी संवेदनाएं नकली हो गई हैं। और अब तो ये एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और आ गई। अब नकली बुद्धि भी हाजिर है।

आज एआई से कविताएं लिखी जा रही हैं। वे पत्र-पत्रिकाओं छप रहीं हैं गोष्ठियों में पढ़ी जा रहीं हैं। यहां तक की पुरस्कृत भी हो रहीं हैं।

सवाल यह है कि क्या अब मौलिकता का कोई महत्व नहीं रहेगा?

मौलिक सृजन का महत्व कभी भी खत्म नहीं हो सकता। जिस तरह जब कैमरा आया तब यह चिंता व्यक्त की जा रही थी कि अब चित्रकला का महत्व नहीं रह जाएगा। लेकिन आज उन्नत किस्म के कैमरों के बावजूद भी ड्राइंग और पेंटिंग अपनी जगह है। कैमरे से उतारे गए चित्र की तुलना में पेंटिंग की अपनी गरिमा हैं। पेंटिंग में चित्रकार अपनी अनुभूति, अपने अनुभव, अपनी कल्पना और अपने विचारों को समाहित करता है। कैमरा सिर्फ चेहरे को सामने लाता है।

जिस तरह कविता के लिए भाषा, शब्द, प्रतीक, उपमान, उपमेय उपकरण है। ये कविता नहीं है। इनकी सहायता से हमें कविता रचनी होती है। इसी तरह एआई भी एक उपकरण है।

एआई एक तकनीक है। उसके पास डाटा का एक विशाल भंडार है। अपने उसी डाटा के आधार पर वह कोई आर्टिकल तैयार करता है। अतः एआई वह लिख सकता है जो लिखा जा चुका है। लेकिन वह, वह नहीं लिख सकता जो लिखा जाना शेष है।

> जैसा फीड करोगे वैसा उत्तर देगा कम्प्यूटर
> कंप्यूटर के आंख नहीं है कंप्यूटर के कान नहीं (जहीर कुरैशी)

एआई अनुभव नहीं करता, पीड़ा नहीं झेलता, प्रेम नहीं जीता। उसके पास अनुभव नहीं है, कल्पना नहीं है। वह केवल सीखी हुई चीजों को कलेक्ट करता है, संयोजित कर हमारे सामने रख देता है।

एक मौलिक रचनाकार के पास अनुभूति है, अनुभव है, कल्पना है, विचार है। जिसका प्रभाव उसकी रचना में देखा जा सकता है।

नरेश सक्सेना कहते हैं कि हर कवि का अपना एक पैटर्न होता है। उसकी कविता की एक डिजाइन होती है। आज देश के पचास हिंदी गज़लकारों के बीच में भी आप पहचान सकते हैं कि यह गज़ल दिनेश सिंदल की है या आदम गोंडवी की या डॉ कुंवर बेचैन की है। हर कवि का अपना डिक्शन होता है। लेकिन एआई का अपना कोई पैटर्न नहीं। वह जो प्रचलित शैलियां है, उनका ही मिश्रण बनाकर प्रस्तुत कर देता है।

मौलिक लेखन में लेखक की निजता, उसका लहजा और उसकी विशिष्ट भी हमें दिखाई देती है। एआई सुरक्षित व संतुलित उत्तर देता है। मौलिक लेखक नए प्रयोग, विद्रोही विचार और अनोखी संरचना अपनाने का जोखिम भी ले सकता है।

कवि कविता रचता है और कविता कवि को रचती है। यह तभी संभव है जब कविता कवि के अनुभव से निकली हो। उसने उस कविता को आत्मसात किया हो, हृदयस्थ किया हो। एआई से लिखी कविता आपके जीवन को नहीं बदल सकती। क्योंकि उसने आपके मन को नहीं छुआ है।

एक महत्वपूर्ण बात- एक जीते जागते रचनाकार के पास जीवन अनुभव है, पीड़ा है, उत्सव है, प्रेम है। जीत- हार है। जब वह रचना करता है तो वह घटना, विचार और इन भावों के बीच से गुजरता है। इन्हें आत्मसात करता है। यह अनुभव उसे एक अलग व्यक्तित्व प्रदान करता है। इसी से उसका रूपांतरण होता है। बिना अनुभव के तकनीक के प्रयोग से लिखी गई रचनाएं आपके भाव जगत में उतरकर आपके व्यक्तित्व पर प्रभाव नहीं डालती। अतः एआई से आप कितना भी लिखते रहे आपका चरित्र, आपका व्यक्तित्व एक रचनाकार का व्यक्तित्व नहीं बन सकता।

मैं प्रायः एक बात कहा करता हूं की कविता कवि के व्यक्तित्व का रिफ्लेक्शन है। यह वही कविता है जो कवि ने उसे जिया है। अपने भीतर उसे अनुभूत किया है और फिर वह कागज पर उतरी है।

आज का मनुष्य संवेदना और संस्कारों से दूर होता जा रहा है। वह एक वस्तु बनता जा रहा है। मनुष्य शब्द का अर्थ ही है- मनन करने वाला। आई हमारी मनुष्यता छीन रहा है।

आज अंत में एक कहानी... एक युवा संन्यासी सत्य की खोज में एक गुरुकुल पहुंचा। आश्रम एक वृद्ध संन्यासी का था जो रात में अपने शिष्यों से धर्म चर्चा किया करते थे। युवा संन्यासी कई दिनों तक उन्हें सुनता रहा। उसने देखा कि उन वृद्ध संन्यासी के पास कहने को ज्यादा कुछ नहीं है। एक दो बातें ही है जिन्हें वे नित्य दोहराते रहते हैं। वह निराश हुआ। उसे लगा कि शायद वह गलत जगह पर आ गया है। एक दिन वह उस आश्रम को छोड़कर जाने ही वाला था कि एक अन्य युवा संन्यासी ने आश्रम में प्रवेश किया। आज यह नव आगंतुक संन्यासी धर्म चर्चा करने वाला था। वह सन्यासी रुक गया।

उस दिन शाम को उस नव आगंतुक युवा संन्यासी ने धर्म चर्चा की। वह धारा प्रवाह धर्म, दर्शन, आत्मा, परमात्मा पर बोलते रहें। लगातार तीन घंटे बोलने के उपरांत जब उन्होंने अपनी बात को विराम दिया। सभी संन्यासी उसे सुन कर प्रसन्न थे। किंतु वृद्ध संन्यासी चुप बैठे रहे। उस युवा संन्यासी ने पूछा कि क्या हुआ? आप चुप है। आपको मेरी धर्म चर्चा कैसी लगी?

वृद्ध संन्यासी ने कहा कि आप तो कुछ बोले ही नहीं।

मैं! नहीं बोला। मैं लगातार तीन घंटे बोला हूं और आप कह रहे हैं मैं नहीं बोला।

वृद्ध संन्यासी ने कहा कि तुम कहां बोल रहे थे। तुम में से किताबें बोल रही थी। ग्रंथ बोल रहे थे। एआई से भी किताबें बोलती है। एआई न तो सोच सकता है न ही चिंतन मनन कर सकता है।

ग्रहों की चाल

विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374

मेष

अप्रैल के शुरुआती दिनों में करियर में ऊर्जा और आत्मविश्वास बढ़ेगा, नई जॉब या प्रोजेक्ट में आगे बढ़ने के योग रहेंगे। धन की आमद बढ़ने के संकेत हैं, लेकिन खर्च पर नियंत्रण ज़रूरी है। रिश्तों में ज़्यादा संयमित रहने का प्रयास करें, विवाद टालने पर ध्यान दें। भाग्य साथ देता दिखाई दे रहा है। एलर्जी से संबंधित रोग हो सकते हैं साथ ही कान से संबंधित कष्ट भी रह सकता है।

वृषभ

आर्थिक स्थिति में सुधार के योग हैं, बचत और निवेश के लिए अच्छा समय रहेगा। करियर में धीरे धीरे लाभ दिखेगा, नई योजना बनाने के लिए समय अच्छा है, लेकिन जल्दबाज़ी में बड़ा निर्णय न लें। स्वास्थ्य के लिए नियमित रूटीन और हल्की डाइट फायदेमंद रहेगी। आय और व्यय समान अनुपात में रहेंगे। बचत होगी किंतु अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। विदेश में रह रहे व्यक्तियों के लिए भाग्य वृद्धि कारक समय है।

मिथुन

संवाद के मामले में यह महीना बहुत शुभ रहेगा। नौकरी, बिज़नेस या नए नेटवर्क बनाने में लाभ प्राप्त होगा। मान सम्मान में वृद्धि होती दिखाई दे रही है। प्रेम जीवन में नई उम्मीद या मिलने-जुलने के अवसर बनेंगे। ध्यान रखें कि बातचीत में भावनात्मक रूप से चोट किसी को न पहुंचे। मन को शांत रखने के लिए साधारण ध्यान का उपयोग करें। भाग्य का साथ कम ही है, अतः अपने पराक्रम से सफलता हासिल करने का प्रयास करें। फेफड़े और छाती से संबंधित रोगों के प्रति सतर्क रहें।

कर्क

परिवार और घरेलू वातावरण को लेकर यह अच्छा महीना रहेगा। घर-सुधार, नई योजनाएं या बदलाव के योग हैं। भावनात्मक रूप से संवेदनशीलता बढ़ सकती है, इसलिए परिवार के साथ बातचीत खुलकर रखें। आर्थिक रूप से स्थिरता रहेगी, लेकिन अनावश्यक बड़े खर्च टालें। पेट से संबंधित रोगों के प्रति सतर्क रहें साथ ही कमर और नाही के निचले हिस्से प्रभावित हो सकते हैं।

सिंह

अप्रैल माह सिंह राशि वालों के लिए लक्की और आर्थिक उन्नति का समय हो सकता है। करियर में मान-सम्मान और नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। विदेश जाने के कार्यक्रम बन सकते हैं। प्रेम जीवन में नए रिश्ते या मौजूदा रिश्तों में गहराई आएगी, लेकिन दूसरों पर अहंकार या वर्चस्व बनाने से बचें। पेट संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं। मन अत्यधिक भावुक हो सकता है। पत्नी के स्वास्थ का ध्यान रखें।

कन्या

ग्रहों की चाल आपके लिए विवेक और कार्यक्षमता बढ़ाएगी, करियर में छोटे-छोटे लेकिन बड़े लाभ देने वाले अवसर आएंगे। दिनचर्या को नियमित करना आवश्यक है, जैसे सही समय पर नींद और हल्का व्यायाम इत्यादि। धन-प्रबंधन में नियमितता बनाए रखें, अचानक बड़े निवेश या शेयर मार्केट जैसे जोखिम से बचें। शत्रु के दमन का योग बन हुआ है।

तुला

करियर और व्यवसाय दोनों में अच्छे अवसर और सहयोग मिलेंगे। इस महीने से भाग्य के कुछ द्वार खुलते हुए दिखाई दे रहे हैं। रिश्तों में संतुलन और समझदारी बनाए रखें, विवाद से बचें। धन आगम बढ़ सकता है, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा लालच न दिखाएं, नियोजन अच्छा रहेगा तो अधिक लाभ मिलेगा। प्रेम के मामले में यह समय उत्तम है।

वृश्चिक

गहराई और रहस्यमय ऊर्जा वाला महीना रहेगा। जिज्ञासा, अंतर्दृष्टि और आध्यात्मिक झुकाव बढ़ सकता है। आर्थिक रूप से मिश्रित स्थिति है। कुछ लाभ हो सकता है लेकिन छिपे खर्च भी बढ़ सकते हैं। रिश्तों में ईमानदारी ज़रूरी है। गलत अटकलें या शक दूर रखें। मन की शांति के लिए ध्यान या मंत्र-जाप लाभदायक रहेगा। संतान की स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। स्वयं के लिए भी छाती संबंधित रोगों के प्रति सतर्क रहें।

धनु

यह महीना यात्रा, शिक्षा और विदेशी या दूर-दूर तक फैले अवसरों से जुड़े संकेत लेकर आएगा। करियर में नई दिशा या नए शहर के अवसर खुल सकते हैं। प्रेम जीवन में रोमांच या नई शुरुआत के योग हैं। लेकिन जल्दी शादी या गारंटीदार वादे से बचें, विश्वास धीरे-धीरे बनने दें। भाग्य का प्रतिशत थोड़ा काम रहेगा, इसलिए अपने पराक्रम से सफलता हासिल करने के प्रयास करें।

मकर

जिम्मेदारी और कर्तव्यभावना बढ़ेगी, करियर में स्थिरता रहेगी किंतु कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। धन आगम में धीमा लेकिन स्थिर क्रम होगा। बड़े निवेश सोच-समझकर करें। स्वास्थ्य को लेकर व्यर्थ शंकाएं ना करें। इस बीच भावनाओं को दबाकर रखना भी आपके लिए अच्छा नहीं है। किसी यथोचित व्यक्ति के साथ वार्तालाप करते रहें।

कुंभ

सामाजिक और बौद्धिक स्तर पर यह महीना उत्साहजनक रहेगा। नए विचार, जुनून और तार्किक क्षमता बढ़ेगी। करियर में नए प्रोजेक्ट या टीमवर्क द्वारा लाभ मिल सकता है। आर्थिक रूप से मिश्रित समय है। कुछ लोगों के लिए अचानक लाभ हो सकता है, लेकिन अस्थिर आय के खतरे को भी नज़रअंदाज़ न करें। सर दर्द, नेत्र दोष और नाड़ी तंत्र से संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं।

मीन

अप्रैल 2026 में मंगल, शनि और बुध की युति मीन राशि में बनने से यह राशि थोड़ा दबाव झेल सकती है, लेकिन अंतर्ज्ञान और भावनात्मक गहराई बढ़ेगी। ध्यान, धार्मिक या आध्यात्मिक गतिविधियां शुभ रहेंगी। धन और रिश्तों में सावधानी रखें, अतिविश्वास या भावनात्मक निर्णय से बचें, समय बीतने पर चीज़ें साफ़ होंगी। शनि की साढ़ेसाती कार्यों में विलंब ला सकती है।

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात

मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता प्रपत्र

नमस्कार,

हम आपको हमारी मासिक समाचार पत्रिका के साथ जोड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारी पत्रिका में आपको देश और दुनिया की नवीनतम खबरें, विशेषज्ञों के लेख और विश्लेषण, और विशेष सामग्री मिलेगी।

सदस्यता विवरण

- सदस्यता शुल्कः 1000 पोस्टल चार्ज सहित प्रति वर्ष (12 अंक)
- सदस्यता अवधिः 1 वर्ष (12 अंक)
- भुगतान विकल्पः ऑनलाइन UPI भुगतान

सदस्यता प्रपत्र

नाम : _____

पता : _____

शहर : _____

राज्य : _____

पिन कोड : _____

मोबाइल नंबर : _____

ईमेल आईडी : _____

भुगतान विवरण

ऑनलाइन भुगतान

UPI QR code

8107800000@pz

हमारा पता

राजस्थान टुडे

बी-4, एम आर हाईट्स,
भास्कर सर्कल, रातानाडा,
जोधपुर- 342011

संपर्क जानकारी

वाट्सएप नंबर : +91 8107800000

ईमेल : rajasthantoday@gmail.com

धन्यवाद,
राजस्थान टुडे टीम

RNI No.- RAJHINDI/2020/11485

सदस्यता के लिए आवेदन करें : यदि आप हमारी मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता लेना चाहते हैं, तो कृपया इस प्रपत्र को भरें और हमारे WhatsApp नंबर पर भेजें। हम आपको जल्द ही अपनी पत्रिका के साथ जोड़ देंगे।

AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.

AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS

221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in